



४८५७

# गहूंली संग्रहनामा ग्रंथ.

जाग पहेलो.

एमां जुदा जुदा कवियोनी रचेली प्रथम छापेली

गहूंली एकशो दश, तथा बीजी नवीन गहूं

लीयो चौद, सर्व मली एकशो चोवीश

गहूंलीयोनो संग्रह करी तेने

प्रथम करतां यथामति वधारे संशो

सम्यग् दृष्टि श्रद्धानु श्रावि

वांचवा तथा नणवाने

श्रीमुंबई मध्यें

श्रावक, खीमजी जीमरि

निर्णयसागर छापखानां छपावी ५

संवत् १९४८-सने १



॥ अथ ॥

॥ श्री माहावीर स्वामीना पांच वधावा प्रारंज ॥

॥ तत्र ॥

॥ वधावो पहेलो ॥

॥ हुंतो मोही रे नंदना लाल, मोरजी ताने रे ॥ ए देशी ॥  
॥ वंदी जगजननी ब्रह्माणी, दाता अविचल वाणी रे ॥  
कव्याएक प्रचुनां गुणखाणी, शुण्ण उलट आणी  
॥ एहने सेवोने ॥ १ ॥ प्रचु शासननो सुजतान ॥ एह  
ने सेवोने ॥ जस इंदु करे बहु मान ॥ एहने सेवोने ॥  
एतो नवोदधितरण सुखाण ॥ एहने सेवोने ॥ २ ॥  
कीधुं त्रीजे नव वरथानक, अरिहा गोत्र निकाच्युं  
रे ॥ ते अनुसरवा वरवा केवल, करवा तीरथ जाचुं  
॥ एहने ॥ ३ ॥ कव्याएक पहेले जगवद्वज, त्रण  
ज्ञानी माहाराय रे ॥ दशमा स्वर्ग विमानथी प्रचुजी,  
नोगवी सुरनुं आय ॥ एहने ॥ ४ ॥ जंबु द्वीपें नरत  
क्षेत्रमां, कृत्रिकुंम सुखकार रे ॥ श्रीसिद्धारथ त्रिशला  
उदरें, लेवे प्रचु अवतार ॥ एहने ॥ ५ ॥ चउद  
सुपन देखे तब त्रिशला, गज वृषनादि उदार रे ॥ ह  
रखी जागी चिंते मनमां, माने धन्य अवतार ॥ एहने ॥



( १ )

॥ ६ ॥ बहु उठरंगें जइ पियुसंगें, सघली वात सुणावे  
रे ॥ सुजगे लान पुत्रनो होशे, पियुनां वचन वधावे  
॥ एहने० ॥ ७ ॥ स्वपनाफल पूढी पाठकने, गर्ज  
वहे नृपराणी रे ॥ दीप कहे इम प्रथम वधावो,  
गावे सुर इंझाणी ॥ एहने० ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ वधावो बीजो ॥

॥ श्रावण वरसे रे सुजनी ॥ ए देशी ॥

बीजे वधावे रे सुजनी, चैतर शुदि तेरशनी रजनी ॥  
जन्म्या जिनवर जग उपकारी, हुं जाउं तेहनी बलि  
हारी ॥ बीजे वधावे रे सुजनी ॥ १ ॥ ठप्पन दिशि  
कुमरी तिहां आवे, पूजी शुचिजलछुं न्हवरावे ॥ जीवो  
महीधर लगें जिनराया, अविचल रहेजो त्रिशलाना  
जाया ॥ बी० ॥ २ ॥ गिरुआ प्रचुनुं वदन निहाली,  
चाली चोंपें चतुरा बाली ॥ हरख्यो सुरपति सोहम  
स्वामी, जाणी जन्म्या जगविश्रामी ॥ बी० ॥ ३ ॥  
घोषा घंटा तव वजडावे, ततक्षुण देव सहू तिहां  
आवे ॥ प्रभु ग्रही कंचनगिरि पर ठावे, स्नान करी  
जिननें न्हवरावे ॥ बी० ॥ ४ ॥ एक कोड़ वली ऊपर  
जाणो, शाठ लाख संख्या परमाणो ॥ सद्दु कलशा शुचि  
जलछुं जरिया, ततक्षुण सोहम संशय धरिया ॥ बी०

( ३ )

॥ ५ ॥ चिंते जघुवय ठे प्रभु वीर, केम सहेजो जल  
धारा नीर ॥ वीरें तस मन संशय जाणी, करवा चि  
त्रित अतिशय नाणी ॥ बी० ॥ ६ ॥ माहावीर निज  
अंगुठे चंप्यो, ततक्षण मेरु थर हर कंप्यो ॥ मानुं  
नृत्य करे ठे रसियो, प्रभुपद फरसें थइ उल्लसियो  
॥ बी० ॥ ७ ॥ जाण्युं इंदें सद्गु विरतंत, बोले कर जोडी  
जगवंत ॥ गुनहो सेवकनो ए सहेजो, मिथ्या दुःकृत  
एहनूं होजो ॥ बी० ॥ ८ ॥ स्नात्र करी माताने  
समर्पे, उवि पहोता नंदीश्वर द्वीपें ॥ पूरण लाहो रे  
लेवा, अछाश्महोत्सव तिहां करेवा ॥ बी० ॥ ९ ॥  
पुत्रवधाई निसुणी राजा, पंच शब्द वजडावे वाजां ॥  
निज परिकर संतोषी वारू, वर्द्धमान नाम ठवे उदा  
रु ॥ बी० ॥ १० ॥ अनुक्रमें जोवन वय जव थावे, नृ  
पति राजपुत्री परणावे ॥ जोगवी प्रभु संसारिक जोग,  
दीप कहे मन प्रगटयो जोग ॥ बी० ॥ ११ ॥ इति ॥  
॥ वधावो त्रीजो ॥

॥ नवि तुमें वंदो रे सूरेश्वर गह्वराया ॥ ए देशी ॥  
॥ हवे कल्याणक त्रीछुं बोलुं, जगगुरु दीक्षा केरुं ॥  
हर्षित चित्तें जावें गावे, तेहनूं जाग्य जलेरुं ॥ सहि तु  
में सेवो रे, कल्याणक उपकारी ॥ संयम मेवो रे, आ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवय  
 र्णें, प्रचुनें एम सुणावे ॥ बूऊ बूऊ जगनायक लायक,  
 एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोड ने  
 आव लाखनुं, दिनप्रत्ये दीये दान ॥ इणपरें संव  
 त्सर लगे लईने, दीन वधारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥  
 नंदिवर्द्धननी अनुमति लेईने, वीर थया उजमाल ॥  
 प्रचुदीक्षानो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततकाल  
 ॥ स० ॥ ४ ॥ शापी दिशि पूरवनी साहामा, दी  
 क्षामहोत्सव कीधो ॥ पालखीयें पधरावी प्रचुनें, ला  
 ज अनंतो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने स  
 मुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाव कहे शिखा  
 मण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह  
 मल्लनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल  
 कमला वहेली वरजो, देजो सुकृत दान ॥ स० ॥ ७ ॥  
 एम शिखामण सुणते सुणते, शुणते बहु नर नारी ॥  
 पंच मुष्टिनो लोच करीने, आप थया व्रतधारी ॥  
 ॥ स० ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री सिद्धारथनंदन, धन्य  
 त्रिशलाना जाया ॥ धन्य धन्य नंदीवर्द्धन बंधव, एम  
 बोले सुरराया ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुमति लेई निज  
 बंधवनी, विचरे जगदाधार ॥ समितियें समिता गुप्तियें

गुप्ता, जीवदयानंदार ॥ स० ॥ १० ॥ सिंह समो  
 बड दुर्बर अईनें, कठिन कर्म सहु टाले ॥ जगजय  
 वंतो शासननायक, इणपरें दीक्षा पाळे ॥ स० ॥  
 ॥ ११ ॥ दीक्षाकल्याणक ए त्रीजुं, सहि तुमें दिलमं  
 लावो ॥ एम वधावो त्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु  
 गावो ॥ स० ॥ १२ ॥ इति त्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी  
 जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, कहुं बुं अवसर पामी  
 जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर ना  
 मी ॥ सांजल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमी  
 ने दिवसें, पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ बार जोयण एक  
 रातें चाढ्या, जाणी लाज निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अ  
 प्पापा नयरीयें आव्या, महसेन वन विकसंत जी ॥  
 गणधरनें वली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥  
 ॥ सां० ॥ ३ ॥ छुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिषी  
 हरि समुदाय जी ॥ वीश बत्रीश दश दोय मलीने, ए  
 चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना  
 करि सारी, त्रिदशपति अति नारी जी ॥ मध्य पीठ

कपर हितकारी, वेठा जग उपकारी ॥सां०॥५॥ गुण  
 पांत्रीश सहित प्रचुवाणी, निसुणे ठे सहु प्राणी जी ॥  
 लोकालोक प्रकाशक वाणी, वरसे ठे गुणखाणी ॥  
 ॥सां०॥ ६ ॥ मालकोश गुनराग समार्जे, जलधरनी  
 परें गाजे जी ॥ आतपत्र प्रचु शिरपर राजे, नामं  
 मल ठबि ठाजे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीकी रचना त्रणे  
 गढनी, प्रचुनां चारे रूप जी ॥ वली केवल कमला  
 नी शोना, निरखे सुर नर जूप ॥ सां० ॥ ८ ॥ इंदु  
 जूति आर्दे सहु मलीनें, जगन करे नूदेव जी ॥  
 विद्या वेदतणा अन्यासी, अजिमानि अहमेव ॥सां०  
 ॥ ९ ॥ ज्ञानी आव्या निसुणी कानें, मनमें गर्व  
 धरंत जी ॥ आव्यो त्रिगडे वाद करेवा, दीठो जग  
 जयवंत ॥ सां० ॥ १० ॥ ततकृण नामादिक बोला  
 वे, तुव्य सहुने जाणी जी ॥ जीवादिक संदेह निवा  
 री, आप्यो गणधर नाणी ॥ सां० ॥ ११ ॥ त्रिपदि  
 पामी प्रचु शिर नामी, द्वादशांगी सुविचारी जी ॥  
 पद ठ लाख ठत्रीश सहस्सनी, रचना कीधी सारी ॥  
 सां० ॥ १२ ॥ चालो तो जोवाने जश्यें, वंदीजें जग  
 वीर जी ॥ वली प्रणमीजें सोहम पटधर, गौतम  
 स्वामी वजीर ॥ सां० ॥ १३ ॥ निरखीजें प्रचुजीनी

मुझ, नरनव सफलो कीजें जी ॥ प्रभुजीनुं बहु मा  
 न करीने, लाज अनंतो लीजें ॥ सां० ॥ १४ ॥  
 वारें वारें कहुं तुं तो पण, तुं तो मनमां नाणे जी ॥  
 महारा मनमां होंश अढे ते, केवल ज्ञानी जाणे ॥  
 ॥ सां० ॥ १५ ॥ सखिवयणें एम थई उजमाली,  
 चाली सघली बाली जी ॥ निसुणी दश आशातना  
 टाली, प्रभुवाणी लटकाली ॥ सां० ॥ १६ ॥ इणीपरें  
 त्रीश वरश केवलथी, बहु नर नारी तारी जी ॥ इम  
 वधावो चोथो सुंदर, दीप कहे सुखकारी ॥ सां० ॥ १७ ॥  
 ॥ वधावो पांचमो ॥

॥ आदिजिनेसर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥  
 ॥ कल्याणक पांचमुं जिनजीनुं, गावो हर्ष अपार वा  
 जा ॥ जगवल्लभ प्रभुना गुण गाई, सफल करो अव  
 तार वाला ॥ शासननायक तीरथ बंदो ॥ १ ॥ ए आं  
 कणी ॥ जग चातकने दान दीयंता, विचरंता जगना  
 ला वाला ॥ मध्य अपापा नगरी पधास्या, प्रणमे प  
 गु महिराण वाला ॥ शा० ॥ २ ॥ प्रभुयें लाजाला  
 विचारी, अणपूढ्यो उपदेश वाला ॥ शोल पहोर  
 जगें अमृतवाणी, वरस्या जवि उपदेश वाला ॥  
 शा० ॥ ३ ॥ दीवालीदिने मुक्ति पधास्या, पाम्या पर

मानंद वाला ॥ अजर अमरपद ज्ञान विलासी,  
 अक्षय सुखनो कंद वाला ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए प्रभु  
 कर्ता अकर्ता जोक्ता, निजगुणें विलसंत वाला ॥ द  
 र्शन ज्ञान चरण नैं वीरज, प्रगट्या सादि अनंत वा  
 ला ॥ शा० ॥ ५ ॥ ठे आकाश असंख्य प्रदेशी, तेह  
 ना गुण ठे अनंत वाला ॥ एतो एक प्रदेशें साहिब,  
 अनंत गुणें जगवंत वाला ॥ शा० ॥ ६ ॥ ए प्रभु  
 ध्येय ने सेवक ध्याता, एहमां ध्यान मिजाय वाला ॥  
 त्रिक जोगें पूरणता प्रगटे, सेवक ए सम थाय वाला  
 ॥ शा० ॥ ७ ॥ गावो पांचमो मोहवधावो, ध्यावो  
 वीर जिणंद वाला ॥ गुनलेश्यायें जग गुरु ध्यानें,  
 टालो नवनय फंद वाला ॥ शा० ॥ ८ ॥ इम प्रभु  
 वीरतणां कल्याणक, पांच नवोदधि नाव वाला ॥  
 श्रीविजयलक्ष्मी सूरेश्वर राजें, में गाया गुन नाव  
 वाला ॥ शा० ॥ ९ ॥ श्रीजिनगणधर आणारंगी  
 कपूरचंद विश्राम वाला ॥ तस आग्रह्यी हर्षि  
 चित्तें, खंजात नयर सुठाम वाला ॥ शा० ॥ १०  
 पंमित श्रीगुरु प्रेमपसायें, गाया तीरथराज वाला  
 दीपविजय कहे मुजने होजो, तीरथफल माहाराज  
 वाला ॥ शा० ॥ ११ ॥ इति पांच वधावा संपूर्ण ॥

( ९ )

॥ अथ श्री गहूंलियो लखी ठे ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम गहूंली ॥

॥ कुंवर पागले पग दइने चडिया ॥ ए देशी ॥

॥ रूडी गहूंली रंग रसाली, जिनशासनमांहे नित्य रे  
दीवाली ॥ रूडी राजगृही अति शोहे, ते देखी त्रिचु  
वन मन मोहे ॥ १ ॥ तिहां तो वीर आव्या रे चो  
मासें, राजा श्रेणिक वंदे उद्गासें ॥ तस अजय कुंव  
प्रधान, मंत्री बहु बुद्धिनिधान ॥ २ ॥ राजा श्रेणि  
नी घर नार, शिरोमणि चेलणा सार ॥ बार ब्र  
नी साडीज पहेरी, नव वाडनी घाटडी घहेरी ॥ ३ ॥  
हेच्यां जिनगुणनूपण अंगें, गुरुगुण गावे मन रंगें ॥  
नकित कचोलुं रे जरियुं, श्रद्धामांहे कुंकुम घोलि  
॥ ४ ॥ पंचाचार ते पंच रतन, ठवणी उपरें  
रो रे जतन ॥ मन निर्मल मोती वधावे, ते तो शि  
मणीसुख पावे ॥ ५ ॥ बुध न्यायसागरनो शिष्य,  
जणजे जिनगुण जगीश ॥ तस घर होय कोडी  
आण, वली पामे मोक्ष सुजाण ॥ ६ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ श्री गहूंली बीजी ॥

वालो माहारो आव्या श्रीगोकुल गाम रे ॥ एदेशी ॥



॥ चंद्रवदनी मृगलोयणी, एतो सजि शोले शणगार  
 रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरि हेंडे हर्षे अ  
 पार रे ॥ १ ॥ एतो मुक्ताफल मूठी नरी, रचे गहूंली  
 परम उदार रे ॥ जिहां वाणी जोजन गामिनी, धन  
 वरसे अखंमितधार रे ॥ २ ॥ हांरे जिहां रजत क  
 नक रत्नना, सुररचित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्य  
 मणिसिंहासनें, शोजित श्रीजगदाधार रे ॥ ३ ॥ जि  
 हां नरपति खगपति लसपति, सुरपति युत पर्षदा  
 बार रे ॥ लब्धिनिधान गुण आगरु, जिहां गौतमा  
 गणधार रे ॥ ४ ॥ जिहां जीवादिक नव तत्त्वना,  
 दूड्यजेद विस्तार रे ॥ एतो श्रवण सुणि निर्म  
 करे, निज बोध बीज सुखकार रे ॥ ५ ॥ जिहां त्र  
 ठत्र त्रिभुवन उदित, सुर ढालत चामर चार रे  
 सखि चिदानंदकी बंदना, तस होजो वारंवार रे ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री गहूंली त्रीजी ॥

घरे आवोजी आंबो मोरीणो ॥ ए देशी ॥

॥ माहावीरजी आवी समोसखा, राजगृही नयरी उ  
 न ॥ समवसरण देवें रच्युं, तिहां बेठा श्रीवर्द्धमान  
 माहा ॥ १ ॥ वनपालकें आपी वधामणी, हररु  
 श्रेणिक नूपाल ॥ गौतम आदि गणधरु, साधवी

त्रीश हजार ॥ माहा० ॥ १ ॥ राजा गज शणगाखा  
 मलपता, तूर्य तणो नहिं पार ॥ राजा बहु सामग्री  
 यें संचखो, सार्यें मंत्री अजयकुमार ॥ माहा० ॥ २ ॥  
 ढोल ददामा गडगडे, सरणाइ अतिहि रसाल ॥ राय  
 गजथकी हेठा कतखा, आवी वांदे प्रभुजीना पाय ॥  
 माहा० ॥ ४ ॥ राय त्रण प्रदक्षिणा देई करी, आवी  
 वेठा सजा मोठार ॥ राणी चेलणा जावे गहूंअली, सार्यें  
 सखियोनो परिवार ॥ माहा० ॥ ५ ॥ राणियें घाट उ  
 ढयो रे घूटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥ रा  
 णीयें कुंकुम घोड्यां कुंकावटी, राणियें लीधुं श्रीफल  
 श्रीकार ॥ माहा० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पूरे गहूं  
 अली, माहावीरना पावला हेठ ॥ राणी बहु परिवारें  
 परवरी, राणी गावे गीत रसाल ॥ माहा० ॥ ७ ॥  
 राणी लली लली लीये रे लूंढणां, राणी पूजे प्रभुजी  
 ना पाय ॥ माहावीरनी देशना सांजली, समकित  
 पाम्यो नरराय ॥ माहा० ॥ ८ ॥ प्रभु तुम सरीखा  
 गुरु मुक्त मळ्या, महारी दुर्गति दूर पलाय ॥ प्रभु सेवक  
 जाणी तारजो, मुने मुक्ति तणां सुख थाय ॥ माहा० ॥ ए  
 ॥ अथ श्री जीवाजिगम सूत्रनी गहूंली चोथी ॥  
 ॥ नवि तुमे वंदो रे सूरेश्वर गढराया ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर सुणीयें रे जीवाजिगमनी वाणी, मीठी ला  
 गे रे मुऊने वीरनी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ सूत्रतणी  
 रचना गणधरनी, अर्थ ते वीरें जांख्या ॥ गौतम पू  
 ढे वे कर जोडी, आतमहित करी दाख्या ॥ स० ॥  
 मी० ॥ १ ॥ जीव अजीव तणी जे रचना, पूढी  
 गौतमस्वामी ॥ नरक निगोद तणी जे वातो, जां  
 खे अंतरजामी ॥ स० ॥ मी० ॥ २ ॥ साते नरक  
 तणां दुःख जांख्यां, आतमहित करी शीख्या ॥ जे जे  
 प्रश्न पूढे गोयम, ते ते प्रजुजीयें जांख्या ॥ स० ॥  
 मी० ॥ ३ ॥ पांच अनुत्तर तणी जे रचना, विविध  
 प्रकारें जांखी ॥ नविक जीवने सुणवा कारण, श्री  
 जिन आगम साखी ॥ स० ॥ मी० ॥ ४ ॥ मीठी वा  
 णीयें गहूंली गावे, वीर जिणंद वधावे ॥ स्वस्तिक पूरे  
 जाव धरीने, अकृतें करीने वधावे ॥ स० ॥ मी० ॥  
 ॥ ५ ॥ नौतनपुरमां रंगें गाई, गहूंली चढते उमंगें ॥  
 कहे मुक्ति जिनराजनी वाणी, सुणजो अति उठरंगें  
 ॥ स० ॥ मी० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री जगवतीसूत्रनी गहूंली पांचमी ॥  
 ॥ नवि तुमें वंदो रे, सूरेश्वर गह्वराया ॥ ए देशी ॥  
 ॥ सहियर सुणीयें रे, जगवतीसूत्रनी वाणी ॥ पात

क हणीयें रे, आतमने हित आणी ॥ ए आंकणी ॥  
 समकितवंत तणी ए करणी, जवसागर उधरणी ॥  
 नरकनिगोद तणी गति हरणी, मोक्षतणी नीसरणी  
 ॥ स० ॥ १ ॥ पंचम अंग विवाहपन्नत्ती, बीजुं न  
 गवती नाम ॥ शतक एकतालीश बहु उद्देशें, अनंता  
 नंत गुणधाम ॥ स० ॥ २ ॥ वीर जगत गुरु गौ  
 तम गणधर, जोडी मोहनगारी ॥ प्रश्न ठत्रीश हज्जार  
 प्रकाश्या, वाणीनी बलिहारी ॥ स० ॥ ३ ॥ गंग  
 मुनि सिंहामुनिवरना, प्रश्न सरस ठे जेहमां ॥ जाव जे  
 द षड्द्रव्य प्रकाश्यां, अमृतरस ठे एहमां ॥ स० ॥ ४ ॥  
 संग्राम सोनी प्रमुख जे जावी, समकितवंत प्रसि  
 द्धो ॥ प्रश्ने कंचन मोर ठवीने, नरजव लाहो लीधो  
 ॥ स० ॥ ५ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफलशुं वधावो, ज्ञान  
 नक्ति गुरु सेवा ॥ जगवती अंग सुणो बहु जावें,  
 चाखो अमृत मेवा ॥ स० ॥ ६ ॥ वीरक्षेत्रना सकल  
 संघने, विघ्न हरे वरदाई ॥ दीपविजय कहे जगवती  
 सुणतां, मंगल कोटि वधाई ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गहूंली ठळी ॥

॥ चालोने बाई चालोने जुळ, सोहम गणधर रच  
 ना रे ॥ चालोने बाई चालोने ० ॥ ए आंकणी ॥

રાજગૃહી નગરી સોહામણી, તસ વનમાં સોહમ  
 આઘ્યા રે ॥ રાજા કોણિક વંદન આવે, જાવ ધરીને  
 વધાવે રે ॥ ચા૦ ॥ ૧ ॥ ચતુરંગિણી સેના લેઈ આ  
 વે, આનંદ મંગલ પાવે રે ॥ બહુ યુક્તે કરી સોહમ  
 વાંદે, રાજા મન આણંદે રે ॥ ચા૦ ॥ ૨ ॥ કેઠ  
 મુનિ તપસી કેઠ વ્રતધારી, કેઠ સંજમના રસિયા રે ॥  
 કેઠ મુનિ જિન આણાને ધારે, વારે વિષય કષાયા  
 રે ॥ ચા૦ ॥ ૩ ॥ પ્રત્યેકે સદુ મુનિને વાંદે, જવ  
 જલ પાર ઉતરવા રે ॥ રજત રકેલી હાથ ધરીને,  
 સોહમસ્વામી વધાવે રે ॥ ચા૦ ॥ ૪ ॥ ચિદું ગતિ  
 વારક સાથીયો પૂરે, મોતીયાલે વધાવે રે ॥ પદ્માવ  
 તી રાણી મનરંગે, શોભ સજ્યા શણગાર રે ॥ ચા૦ ॥  
 ॥ ૫ ॥ બહુ સખીને પરિવારે રાણી, મનમાં ઝલટ આ  
 ણી રે ॥ કોણિક રાજા દેશના નિસુણે, વાણી અ  
 મૃત સરસ્વી રે ॥ ચા૦ ॥ ૬ ॥ જાવ ધરીને રાજા રાણી,  
 અગ્નિનવ નિસુણી વાણી રે ॥ જલધર વાણી નિસુણી  
 રાજા, વાજ્યાં સુજશનાં વાજાં રે ॥ ચા૦ ॥ ૭ ॥  
 હુજપુર મંદણ ચિંતાચૂરણ, શ્રીચિંતામણિ સ્વામી  
 રે ॥ ચિદુંગતિ ચૂરણ ગદૂંલી ગાઈ, સંઘને સદા વધાઈ  
 રે ॥ ચા૦ ॥ ૮ ॥ જે ગદૂંલી ગાશે મનરંગે, તસ ઘર

( १५ )

नित्य उठरंग रे ॥ श्रीजिनआणा पाले अहोनिश, मु  
क्तिपद पामे विशेष रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री गहूंली सातमी ॥

॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ ए देशी ॥.  
॥ सखी सरस्वती जगवती माता रे, कांइ प्रणमीजें  
सुख शाता रे, कांइ वचन सुधारस दाता गुणवंता  
सांजलो वीर वाणी रे, कांइ मोहू तणी निशाणी ॥ गु०  
॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कांइ चोव्रीशमा जिन राया  
रे, सायें चौद सहस मुनिराया रे, जेहना सेवे सुर  
नर पाया ॥ गु० ॥ कां० ॥ २ ॥ सखी चतुरंगफोजा  
साथ रे, सखि आव्या श्रेणिक नर नाथ रे, प्रभु  
वंदीने हुआ सनाथ ॥ गु० ॥ कां० ॥ ३ ॥ बहु सखि  
संयुत राणी रे, आवी चेलणा गुणखाणी रे, एतो  
नामंमलमां उजाणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ४ ॥ करे सा  
थीयो मोहन वेल रे, कांइ प्रभुने वधावे रंग रेल रे,  
कांइ धोवा कर्मना मेल ॥ गु० ॥ कां० ॥ ५ ॥ बारे  
पर्षदा निसुणे वाणी रे, कांइ अमृतरस सम जाणी रे,  
कांइ वरवा मुक्ति पटराणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री गहूंली आठमी ॥

॥ आ जो रे बाइ आ जो रे, सोजाग। गुरुनां पगलां

रे ॥ पगले पगले रत्न जडावूं, मगले मगले हीरा रे ॥ ए  
 देशी ॥ चालो रे बाइ चालो रे जूठ, गौतम स्वामीनी  
 रचना रे ॥ लब्धिवंत गुणवंता गिरुवा, करता संजम  
 जतना रे ॥ चा० ॥ १ ॥ ठठे वरसें दीक्षा लीधी, ते  
 पण मुनि ठे सार्थे रे ॥ जिनआणाथी संजम पाळे,  
 करवा शिव वधू हार्थे रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि  
 गणधर पद सेवे ठे, केइ मुनि ध्यान धरे ठे रे ॥ केइ  
 मुनि आगम दान दिये ठे, केइ मुनि विनय करे ठे  
 रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ केइ मुनि चउ अनुजोग नणे ठे,  
 केइ मुनि जोग वहे ठे रे ॥ केइ मुनि पूर्व सूत्र नणे  
 ठे, केइ मुनि अर्थ ग्रहे ठे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ केइ मुनि  
 मास खमण तप धारी, केइ मुनि तपिया कहीये रे ॥  
 केइ मुनि विगय तणा परिहारी, केइ मुनि आतम  
 ध्याय रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ केइ आचारांग सूयगडांग ठा  
 णांग, केइ समवायांग गोखे रे ॥ जगवती सूत्र प्रमु  
 ख बहु आगम, नणी आतमरस पोखे रे ॥ चा० ॥  
 ॥ ६ ॥ सहु सहिअर गुणशीला वनमां, आवी गण  
 धर वांदे रे ॥ अमृतथी पण अधिकी वाणी, निसु  
 णी मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ पटोदर आगल

( १७ )

गहूंली पूरी, मुक्ताफलशुं वधाया रे ॥ धन्य धन्य माता  
 पृथ्वी जेणियें, गौतम गणधर जाया रे ॥ चा० ॥  
 ॥७॥ प्रभु वाणी निज चित्त समरती, परषद निज घर  
 आवे रे ॥ दीपविजय कहे गौतम नामें, माहा मंगल  
 पद पावे रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥७॥

॥ अथ गहूंली नवमी ॥

॥ जयो तप रोहणी ए ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नगरी उद्यानमां ए, आब्या सोहम गणधा  
 र ॥ नमो गुरु नावशुं ए ॥ हर्षपूरित नगरीजना ए,  
 वांदवा जाय उजमाल ॥ नमो० ॥ १ ॥ कोणिक  
 राय तव पूठतो ए, आज किश्यो उत्सव आय ॥  
 ॥ नमो० ॥ इइ उत्सव के कौमुदी ए, एवडां लोक  
 किहां जाय ॥ नमो० ॥ २ ॥ के कोइ जैनमुनि आ  
 विया ए, के तिहां जाये सवि जन्न ॥ न० ॥ तेह क  
 हे प्रभु सांजलो ए, हर्ष करीने मन्न ॥ न० ॥ ३ ॥  
 तव कोणिकें वात सांजली ए, उल्लसी साते धात ॥  
 ॥ न० ॥ गज रथ पायक सज्ज कछा ए, करी वलि  
 निर्मल गात्र ॥ न० ॥ ४ ॥ मस्तक मुकुट रत्न ज  
 डया ए, हइए हार सोहंत ॥ न० ॥ एक सूरज ए  
 क चंडमा ए, ए दोय कुंमल जलकंत ॥ न० ॥ ५ ॥



चतुरंगी सेनायें परिवह्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र  
 ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत अंग ध  
 ख्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां  
 अढे ए, तिहां आव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच  
 अजिगम साचवी ए, नक्तियें हर्ष जराय ॥ न० ॥  
 ॥ ७ ॥ साथीयो पूरे प्रेमछुं ए, चौगति दुःखवारण  
 हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उठाजे  
 अकृत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए,  
 नवजल तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्व  
 तुं ए, जे वांदे गुरु नले नाव ॥ न० ॥ ९ ॥ इति० ॥

॥ अथ गहूंली दशमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ए देशी ॥  
 ॥ वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां  
 समोसख्या आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ सम  
 वसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठा त्रिभुवनना  
 थ ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ जि० ॥  
 गजसरखी जस चाल ॥ सु० ॥ दीर्घचुजा तनु दीप  
 ती ॥ जि० ॥ तस रूडां नयन विशाल ॥ सु० ॥ २ ॥  
 नरना अमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणें धुणियां चर  
 णसरोज ॥ सु० ॥ मुखशोनायें लाजियो ॥ जि० ॥

( १९ )

शशी गयण वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें  
वारिया ॥ जि० ॥ जाव रिपु जे आठ ॥ सु० ॥ मुनिने  
शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वाख्यो परनो ठाठ ॥  
॥ सु० ॥ ४ ॥ द्दमाशूर जगवंत जी ॥ जि० ॥ चो  
त्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें क  
री ॥ जि० ॥ देशना दे जलधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ वन  
पालकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आव्या उद्या  
न ॥ सु० ॥ सांजली नरत नरेसरू ॥ जि० ॥ आपे  
बहुजां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना लेइने  
॥ जि० ॥ वांध्या श्रीजगवान ॥ सु० ॥ प्रभुजीनी वा  
णी सुणे ॥ जि० ॥ चक्री नरत सुजाण ॥ सु० ॥ ७ ॥  
वखाण अवसर साथियो ॥ जि० ॥ लावे नरतनी ना  
र ॥ सु० ॥ श्रद्धास्वस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥ गाये गो  
री गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु आग  
लें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत बहु मान ॥ सु० ॥ दर्शन  
सागर इम कहे ॥ जि० ॥ तस थाये परम कल्याण  
॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी ठोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधवा, आणी आधिक उमेद ॥ स

हियर मोरी हे ॥ आगम आगमधर सुणी, गुण  
 गुणी जाव अजेद ॥ १ ॥ सहियर मोरी हे ॥ गहूंली करो  
 गुरु आगले ॥ ए टेक ॥ पर परिणामने टालवा, लेवा  
 शिवपुर शर्म ॥ स० ॥ ग० ॥ १ ॥ इव्य जाव संजो  
 गथी, जे रहे नित्य अलेप ॥ स० ॥ स्याद्वादनी  
 दीये देशना, जाणंग नय निक्षेप ॥ स० ॥ ग० ॥ ३ ॥  
 आत्मजाव स्वरूपना, जासन जानु समान ॥ स० ॥  
 स्वपर विवेचन श्रुतथकी, तेणे नक्ति बहुमान ॥  
 ॥ स० ॥ ग० ॥ ४ ॥ रुचिवंता सुश्राविका, करवा  
 श्रुतनी बहु नक्ति ॥ स० ॥ विनयवती बहुमानथी,  
 फोरवती आत्मशक्ति ॥ स० ॥ ग० ॥ ५ ॥ आत्म  
 वाजोठ उपरें, समकित साथियो पूर ॥ स० ॥ लली  
 लली करती लूठणां, मिथ्यामति करी दूर ॥ स० ॥  
 ग० ॥ ६ ॥ जे सुणे आगम इण विधें, जन्म सफल  
 होय तास ॥ स० ॥ माहरे नवो नव नित्य होजो,  
 ज्ञानमहोदय वास ॥ स० ॥ ग० ॥ ७ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ गहूंली बारमी ॥

॥ जीरे मारे देशना द्यो गुरुराज, उलट आणि अति घ  
 णो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे आवियो हर्ष उल्लास, पूठ  
 देई संसारने ॥ जी० ॥ १ ॥ जीरे० ॥ विलंब न कीजें गुरुरा

ज, दास उपर दया करो ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ महेर करो मे  
 हेरबान, अमृतवचनें सींचियें ॥ जी० ॥ १ ॥ जीरे० ॥  
 सुणवा सूत्र सिद्धांत, हेजे हियडुं गहगहे ॥ जी० ॥  
 जीरे० ॥ जिम मोरा मन मेह, सीताने मनें रामजी  
 ॥ जी० ॥ ३ ॥ जीरे० ॥ कमला मन गोविंद, पारवती ई  
 श्वर जपे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ तिम मुऊ हृदय मऊार  
 जिनवाणी रूचे घणी ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे० ॥ नयगम  
 जंग निक्षेप, सुणता समकित संपजे ॥ जी० ॥  
 जीरे० ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव रूप, स्यादाद रचना घणी  
 ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीरे० ॥ नवतत्त्व ने षट् इव्य, चार निक्षेप  
 सप्तनयें करी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ निश्चय ने व्यवहार,  
 इणपरें मुऊ उलखावियें ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे० ॥ कृपा  
 करो गुरुराज, ते सुणवा इहा घणी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥  
 निज परसत्ता रूप, नासे ते सुणतां थकां ॥ जी० ॥  
 ॥ ७ ॥ जीरे० ॥ जिन उत्तम माहाराज, तस पदपद्म सेवे  
 सदा ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ प्रगटे आत्मस्वरूप, अनय  
 अर एणी परें नणे ॥ जीरे जी ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ गहूंली तेरमी ॥

॥ आढे लालनी देशी ॥ नयरी राजगृही सार, लोक  
 वसे रे अपार ॥ आढे लाल ॥ जंबुस्वामी समोसखा

रे ॥ १ ॥ पंचसया परिवार, तारे नर ने नार ॥  
 ॥ आ० ॥ देशना पुष्कर जलधरें रे ॥ २ ॥ इंडिय  
 जीपे पंच, वारे क्रोधनो संच ॥ आ० ॥ गुरुमुख  
 देखी नयणां ठरे रे ॥ ३ ॥ जिनमतकज दिनकार,  
 सोहम स्वामी पट्टधार ॥ आ० ॥ चरणकरण जंमार  
 ठे रे ॥ ४ ॥ सोजागी शिरदार, सुविहित मुनि आ  
 धार ॥ आ० ॥ पृथिवी पीठें विचरता रे ॥ ५ ॥ अ  
 प्रतिबंध विहार, समरस गुण सुखकार ॥ आ० ॥ वै  
 राग्यें जनताने रीऊवे रे ॥ ६ ॥ विचरे देश विदेश,  
 दे बहुला उपदेश ॥ आ० ॥ बूऊवे जाण अजाणने  
 रे ॥ ७ ॥ कोणिक नृप घरनार, स्वस्तिक पूरे उदार  
 ॥ आ० ॥ ज्ञाननी जक्ति करे घणी रे ॥ ८ ॥ श्रुत  
 जक्ति करे जेह, सुख विलसे नर तेह ॥ आ० ॥ दर्श  
 नसागर इम वदे रे ॥ ९ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ गहूंली चौदमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ॥ ए देशी ॥  
 ॥ राजगृही नगरी सोहामणी ॥ गुरु आवे ठे ॥ श्री  
 सोहम गणधार ॥ सुगुरु वधावे ठे ॥ पंचसया मुनि  
 साथ ठे ॥ गु० ॥ आतम सुखना करनार ॥ सु० ॥  
 ॥ १ ॥ गुणशील नामें उद्यानमां ॥ गु० ॥ उत्तम्या

ए वनमांय ॥ सु० ॥ वनपालकें जइ वीनव्या ॥  
 ॥ गु० ॥ ते सांजली कोणिक राय ॥ सु० ॥ १ ॥ च  
 तुरंगी सेना सज्ज करी ॥ गु० ॥ गज रथ पायक नहिं  
 पार ॥ सु० ॥ घणे आम्बरें राजवी ॥ गु० ॥ वांदे  
 थइ उजमाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुझने तारवा  
 ॥ गु० ॥ वार वार जवजंजाल ॥ सु० ॥ शोल शण  
 गार सजी करी ॥ गु० ॥ वांदे पद्मावती नार ॥ सु० ॥  
 ॥ ४ ॥ गहूंली करे मन रंगछुं ॥ ॥ गु० ॥ अकृत पूरे  
 सार ॥ सु० ॥ लली लली ले ठे उवारणां ॥ गु० ॥  
 प्रदक्षिणा दे मन सार ॥ सु० ॥ ५ ॥ चिहुं गति वा  
 रक साथियो ॥ गु० ॥ करता मनने कोड ॥ सु० ॥  
 कहे मुक्ति कर जोडिने ॥ गु० ॥ संघ मनना पूरजो  
 कोड ॥ सु० ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ अथ गहूंली पन्नरमी ॥

॥ गर्व नकीजें रे, ए सजुरु शीखडली ॥ ए देशी ॥  
 ॥ सरसती चरण नमी करी केछुं, गायछुं आगम  
 वाणी ॥ अर्थ ते अरिहंतजीयें प्रकाश्यो, सूत्र ते ग  
 णधर वाणी ॥ जवि तुमें सुणजो रे, सोहम गण  
 धर वाणी ॥ मीठी लागे रे, मुऊनैं वीरनी वाणी ॥ १ ॥  
 ए आंकणी ॥ चतुरा चालो गुरुनी पासैं, गहूंली करीयें

मन रंगें ॥ नवशत अंग धरी शणगार, प्रभुगुण गाउ उ  
 मंगे ॥ ज० ॥ १ ॥ हाथे रजत रकेबी धरीने, मांहे ठीप  
 ना पुत्रने लावो ॥ स्वस्तिक पूरो गुरुने वधावो, गुरु  
 गुण मधुरा गावो ॥ ज० ॥ २ ॥ राजगृही नयरे गुणशी  
 लचैत्यें, तिहां प्रभु वीरजी आव्या ॥ जंजासार ते सां  
 जली हरख्यो, चतुरंग सेनथी आव्या ॥ ज० ॥ ४ ॥ चौद  
 हजार मुनिराज संघातें, साध्वी सहस ठत्रीश ॥ इं  
 डजूति आदें देइ गणधर, प्रभुपरिवार जगीश ॥  
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ प्रभुआदि सरवेने वांदी, मगधाधीश  
 नूपाल ॥ चेलणा राणी करे ते गहूंली, प्रभुसन्मुख  
 ततकाल ॥ ज० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली साथीयो पूरे,  
 अष्ट कर्मने चूरे ॥ चिहुं गति चूरण दुःख निवारण,  
 मनोवन्धित सवि पूरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ श्रीअचलगह्वप  
 ति पूज्य पट्टोधर, पुण्यसागर सूरिराया ॥ सूरि ठ  
 त्रीश गुणें करि शोहे, नवि प्रणमो तस पाया ॥ ज०  
 ॥ ८ ॥ जखौ बंदरे सुंदर श्रावक, गुरुगुणना ठे रा  
 गी ॥ श्रीवीर प्रभुनो पसाय लहीनें, गातां शुनमति  
 जागी ॥ ज० ॥ ९ ॥ आषाढ वदि एकमनें दिवसें,  
 गहूंली गाई मनरंगें ॥ चतुरा मलि सुकंठें गाजो,  
 नाव धरी उमंगें ॥ ज० ॥ १० ॥ जे सोहागण मली

( ३५ )

गहूंली गाशे, एम कहे केवल नाणी ॥ सर्वार्थ सिद्ध  
तणां सुख विलसे, जेणे मुक्ति पट्टराणी ॥ गु० ॥ १ ॥ १ ॥ ५

॥ अथ गहूंली शोलमी ॥

॥ जीरे जिनवर वचन सोहंकरु ॥ जीरे अविचल  
शासन वीर रे ॥ गुणवंता गिरुआ वाणी मीठी रें  
माहावीरतणी ॥ जीरे पर्षदा बार मली तिहां,  
जीरे अरथ प्रकाशो गुणगंजीर रे ॥ गुणवंता गौत  
म, प्रश्न पूढे रे माहावीर आगळे ॥ १ ॥ जीरे नि  
गोद स्वरूप मुजने कहो, केम ए जीवविचार रे  
॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे मधुर ध्वनियें जगगुरु कहे,  
जीरे करवा जविक उपकार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ २ ॥  
जीरे राजचउद लोक जाणियें, जीरे असंख्याता जो  
जन कोडाकोडी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे जोजन ए  
क एमां लीजीयें, जीरे लीजीयें एक एकनो अंश रे ॥ गु०  
॥ वा० ॥ ३ ॥ जीरे एक निगोदें जीव अनंत ठे,  
जीरे पुजल परमाणुआ अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥  
जीरे एकप्रदेशें जाणीयें, जीरे प्रदेशें वर्गणा अनंत  
रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ जीरे एक असंख्य गोलासं  
ख्य ठे, जीरे निगोद असंख्य गोला शेष रे ॥ गु०  
॥ वा० ॥ जीरे परमाणुआ प्रत्यें गुण अनंत ठे,



जीरे वरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥  
 जीरे लोक सकलमय इम जखो, जीरे कहे गौतम  
 धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुने  
 आगल गहूंअली, जीरे फतेशिखर अमृतशिव निश्रे  
 णी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्तरमी ॥

॥ राग धोल ॥ बेनी संचरतां रे संसारमां रे, बेनी सह  
 गुरु धर्मसंजोग ॥ वधावो गहूंअली रे ॥ बेनी सदहणा  
 जिनशासननी रे, बेनी पूरण पुण्य संजोग ॥ व० ॥ १ ॥  
 बेनी सम संतोष साडी बनी रे, बेनी नवब्रह्म नवरंग  
 घाट ॥ व० ॥ बेनी तप जप चोखा ऊजला रे,  
 बेनी सत्यव्रत विनय सुपाट ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी सम  
 कित सोवनथालमां रे, बेनी कनक कचोले चंग  
 ॥ व० ॥ बेनी संवर करो शुज साथीयो रे, बेनी आणा  
 तिलक अजंग ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी समिति गुप्तिश्रीफल धरो  
 रे, बेनी अनुजव कुंकुम घोल ॥ व० ॥ बेनी नवतत्त्व  
 हश्ये धरो रे, बेनी चरचो चंदन रंग रोल ॥ व० ॥ ४ ॥  
 बेनी नवजल जेहमां जेदीयें रे, बेनी विवेक वधावो  
 शाल ॥ व० ॥ बेनी वीर कहे जिन शासने रे,  
 बेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ અથ ગઢૂંલી અઢારમી ॥

॥ વાહાલોજી વાયે ઢે વાંસલી રે ॥ એ દેશી ॥  
 ॥ સોહમસ્વામી સમોસચ્ચા રે, રાજગૃહી ઝઢ્યાન ॥ બહુ  
 મુનિ પરિકર સંજુતા રે, ચઢનાણી જગવાન ॥ સોહ ૦ ૫  
 એ આંકણી ॥ ૧ ॥ ગુરુમુખ કમલ વિલોકવા રે, આવે  
 શ્રેણિક માહારાય ॥ જાવ જક્તિ કરી વાંદિયા રે, ગ  
 ણધર કેરા પાય ॥ સો ૦ ॥ ૨ ॥ શ્રીગુરુજી દીયે દેશ  
 ના રે, તે સાંજલે શ્રોતાવૃંદ ॥ અમીય સમાણી વાણી  
 સુણી રે, મનમાં પામે આનંદ ॥ સો ૦ ॥ ૩ ॥ વચ્ચા  
 ણ અવસર જાણીને રે, જ્ઞાનની જક્તિ નિમિત્ત ॥ સ  
 તીય શિરોમણિ ચેલણા રે, સાથીયો પૂરે પવિત્ત ॥  
 ॥ સો ૦ ॥ ૪ ॥ જ્ઞાન પરમ ગુણજીવને રે, જે તસ  
 જક્તિ કરેય ॥ તેહને જ્ઞાનની સંપદા રે, દર્શન એમ  
 કહેય ॥ સો ૦ ॥ ૫ ॥ ઇતિ ॥ ૧૦ ॥

॥ અથ ગઢૂંલી ઝંગણીશમી ॥

॥ રાજગૃહી સમોસચ્ચા ॥ ગુરુરાજ રે ॥ સોહમ સ્વા  
 મીઆજ ॥ સમારો કાજ રે ॥ સહીયર મોરો વાંદ  
 વા ॥ ગુ ૦ ॥ આવો લેઈ વર લાજ ॥ સ ૦ ॥ ૧ ॥  
 ગુરુઆગલ રચો ગઢૂંચલી ॥ ગુ ૦ ॥ હુવિધજાવ બહુ  
 જાવિ ॥ સ ૦ ॥ અધ્યાતમ વર ચાલમાં ॥ ગુ ૦ ॥ ગુ

( १७ )

रुगुण मोती जावि ॥ स० ॥ १ ॥ गुणि मन सोवन  
 फूलडां ॥ गु० ॥ चुन रति कुंकुम घोल ॥ स० ॥ श्र  
 दा रकेबी कर ग्रही ॥ गु० ॥ दर्शन नूमि अमोल  
 ॥ स० ॥ ३ ॥ अनुनव श्रीफल रूखडुं ॥ गु० ॥ उ  
 त्तरगुण बहु शाल ॥ स० ॥ पंचाचार करो लूढणां ॥  
 ॥ गु० ॥ तिलक विवेक विशाल ॥ स० ॥ ४ ॥ इणि  
 परें इव्यनें जावथी ॥ गु० ॥ मंगल आठ कराय ॥  
 स० ॥ राणी कोणिक रायनी ॥ गु० ॥ गहूंली गुरु गुण  
 गाय ॥ स० ॥ ५ ॥ कंचनकमल विराजता ॥ गु० ॥  
 दिये देशना सार ॥ स० ॥ चरण करण रयणें न  
 खा ॥ गु० ॥ प्रभु पंचम गणधार ॥ स० ॥ ६ ॥ पं  
 च समिति समिता थका ॥ गु० ॥ नव कल्पी करय  
 विहार ॥ स० ॥ चउविह संघें परिवखा ॥ गु० ॥  
 जीत्या विषय विकार ॥ स० ॥ ७ ॥ जाव धरी नमुं  
 तेहना ॥ गु० ॥ चरणयुगल अरविंद ॥ स० ॥ वीर  
 वाणी संजलावतां ॥ गु० ॥ मलुकजाव अमंद ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ अथ गहूंली वीशमी ॥

॥ अने हारे वालोजी वाये ठे वांसली रे ॥ ए देशी ॥  
 ॥ अने हारे वीरजी दीये ठे देशना रे ॥ चालो चा  
 लो सहीयरनो साथ ॥ सुरवर कोडा कोडि तिहां म

व्या रे, प्रभु वरसे ठे त्रिभुवन नाथ ॥ वीर० ॥ १ ॥  
 अने हारे समवसरणनी शोना शी कहुं रे, जिहां सु  
 निवर चौद हजार ॥ महासती चंदनबाला मावडी  
 रे, सहु साधवी ठत्रीश हजार ॥ वीर० ॥ २ ॥ अने  
 हारे गणधर पूज्य अग्यार ठे रे, तेहमां गौतम स्वा  
 मी वजीर ॥ त्रणशें चउद पूर्वी दीपता रे, श्रुत  
 केवली जगवड वीर ॥ वीर० ॥ ३ ॥ अने हारे सातशें  
 केवली जगत प्रजाकरु रे, तेतो पम्भ्या ठे नवतीर ॥  
 पांचशे विपुलमति परिवार ठे रे, सहु परिकर ठे प्र  
 भुवीर ॥ वीर० ॥ ४ ॥ अने हारे आणंद श्रावक  
 समकित उच्चरे रे, वली द्वादश व्रत जयकार ॥ ए  
 क लाख उगणशाठ हजारमां रे, मुख्य श्रावक दृढ  
 व्रत धार ॥ वीर० ॥ ५ ॥ अने हारे सखी वयणे  
 उजमाली बालिका रे, आवी वंदे प्रभुजीना पाय ॥  
 माहामंगल प्रभुजीनी आगलें रे, पूरे चउ मंगल सु  
 खदाय ॥ वीर० ॥ ६ ॥ अने हारे सातमुं अंग उ  
 पासक सूत्रमां रे, प्रभु दीपविजय कविराज ॥ आ  
 णंद सरिखा दश श्रावक कह्या रे, लेहशे एक नवें  
 शिवपुर राज ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ અથ ગઢૂંલી એકવીશમી ॥

॥ ગામ નગર પુર વિચરંતા, ગુરુ આવે છે, મુનિ પંચ  
સયા પરિવાર ॥ સાથેં જાવે છે ॥ સહસ્ર અઢાર સીલાં  
ગના, જે ધોરી છે ॥ બ્રહ્મચર્યના જેઢ અઢાર, આપ વિચા  
રી છે ॥ ૧ ॥ જીવજેઢ વત્રીશની, દયા જાણી છે ॥  
નિરુપાધિક દેશના સાર, નાથ વચાણી છે ॥ દીક્ષા  
દોષ નિવારવા, નર તારે છે ॥ પાપ સ્થાનના દોષ અઢાર,  
દૂર નિવારે છે ॥ ૨ ॥ રત્નત્રયિ આરાધતા, ગુરુ રાજે છે ॥  
ગુરુરાજગૃહી ઝઘ્યાન, અધિક દિવાજે છે ॥ કનકકમલ  
બીરાજતા, ગુરુ ગાજે છે ॥ પ્રચુવીર પટ્ટોધર ધીર, જાવઠ  
જાંજે છે ॥ ૩ ॥ જંબુ કુમરયુક્તેં કરી, ગુરુ જેઢ્યા છે ॥  
કહે મુખથી મહારા આજ, પાતક મેટયાં છે ॥ સ  
મુઢસિરી જંબૂ તણી, પટ્ટરાણી છે ॥ વલિ બીજી સાતેં  
નાર, ગુણનાં ચાણી છે ॥ ૪ ॥ પહેરી કરુણા કાંચલી,  
મન મોતી છે ॥ ઝંઢી સમકિત સાઢી માંહે, ગુરુમુખ  
જોતા છે ॥ ધિરતા જાવના ચાલમાં, વ્રત મોતી છે ॥  
જરી કુંકુમરાગ કચોલ, પુણ્યપનોતી છે ॥ ૫ ॥ શ્રદ્ધાજાવ  
નો સાધિયો, ત્યાં પૂરે છે ॥ ઠવિ પંચાચાર રત્ન, ચિઢું ગ  
તિચૂરે છે ॥ તે દેચ્વી મોહરાયની, માત પુરે છે ॥ એ લેશે  
શિવસુચરાજ, ચઢતે નૂરે છે ॥ ૬ ॥ ગઢૂંલી કરો ગુરુ

आगलें, मन माचे ठे ॥ हवे जंबु सोहम पास, संजम  
जाचे ठे ॥ पांचशें सत्तावीशशुं, व्रत लीधुं ठे ॥ कहे  
मोहन माहाराज, कारज सीधुं ठे ॥७॥ इति ॥११॥

॥ अथ गहूंली बावीशमी ॥

॥ बेनी नरजव पुणें पामी रुअडा रे, शुचि रुचि  
करो शणगार रे ॥ वधावो गुरुने मोतीयें रे ॥ बेनी  
दर्शन करो आदि देवनुं रे, बेनी वली वली वांदो रे  
अणगार रे ॥ व० ॥ १ ॥ बेनी मयगल परें मुनि  
मालता रे, बेनी मधुकर परें लीये आहार रे ॥ व० ॥  
बेनी आतमराम रमे रंगशुं रे, बेनी सूत्र अर्थ नय  
जंमार रे ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी इम सोहागण पूरे  
साथियो रे, बेनी गाउ मंगल गीत रे ॥ व० ॥ बेनी  
विधिंशुं वधावी करो लूंढणां रे, बेनी ए जिन शास  
न रीत रे ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी पञ्चस्काण करो पाय  
पूजीने रे, बेनी वीरवाणी पीयो रसाल रे ॥ व० ॥  
बेनी शुद्ध होये आतमा आपणो रे, बेनी शिवसुख  
लहीयें रसाल रे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥१२॥

॥ अथ गहूंली त्रेवीशमी ॥

॥ विंमलगिरि रंगरसें सेवो ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर मारगमां वसिया, वसी उन्मारगथी ख

सिया, शिववहू खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १ ॥ वी  
 त्थुं गुणठाणुं बाल, नगवई अंगें सुविशाल, रहे  
 प्रमत्तें घणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अंतर मुहूरत स्थिति  
 आवे, निझामां गुण पलटावे, पण अप्रमत्त तणे जावें  
 ॥ मु० ॥ ३ ॥ इव्यनाव संजम धरिया, जंगम तीरथ  
 संचरिया, पाखरिया सिंह केसरिया ॥ मु० ॥ ४ ॥  
 डुविहासित सहे न लहे, ऊण परिसह वीश  
 सहे, मुनिवर आचारांग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्र  
 बाल दशविध पाले, चरणकरण गुण अजुआले,  
 शून्यदहन अवधि टाले ॥ मु० ॥ ६ ॥ एहवा मुनि  
 वरनी आंगें, चतुरा अहूर फल मागे, श्राविका मुनि  
 गुणरागें ॥ मु० ॥ ७ ॥ गहूंली करी निजमल धोती,  
 वधावती ऊजके मोती, लली लली गुरु सन्मुख जोती  
 ॥ मु० ॥ ८ ॥ आगम रयण गुणें रमती, गुरुगुण गा  
 ती मन गमती, श्रीशुनवीर चरण नमती ॥ मु० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनो विवाहलो चोवीशमो ॥

॥ पासकुमर महिमा निलो, गुणमणि रयण चंदा  
 र ॥ अवसर विवाहजिन तणो, गायशुं अति सुखकार  
 ॥ पा० ॥ १ ॥ शुन मंरुपें तोरण सोहियें रे, जोतां  
 सुर नरनां मन मोहियें रे ॥ महाजन मलीयो ठे

( ३३ )

अति मनोहार, राय राणानो नहिं पार ॥ पा० ॥  
 ॥ १ ॥ चंपक वरणी सुंदरी, वलि नील वरण सुखदाय ॥  
 दीसे ठे अति रे दयामणी, पास कुमर देखी सुख थाय  
 ॥ पा० ॥ २ ॥ पासकुमर चडया वरघोडे, शिर खूप  
 नखा ठे बहु मोडे ॥ मानुं रवि शशी आव्या ठे दोड,  
 कानें कुंमल मस्तक जोड ॥ पा० ॥ ४ ॥ सजन  
 संतोष्या बहुपरें, तिहां अश्वसेन माहाराय ॥ गुन  
 शणगार सजि सुंदरी, पासकुमर सुखदाय ॥ पा०  
 ॥ ५ ॥ देव उतारे आरती रे, वली नर नारी गुण  
 गाय ॥ सुवर्ण मुकुटें हीरा सोहीयें रे, तोरण आव्या  
 श्री जिनराय ॥ पा० ॥ ६ ॥ जिनमुखें सोहीयें तं  
 बोल रे, घणो दिसे ठे जाक जमोल रे ॥ परण्यां पर  
 ण्यां प्रजावती राणी, रूपें अप्सरा ने इंझाणी ॥  
 पा० ॥ ७ ॥ जिन परणीने निजघर आविया रे, जा  
 चकने दानशुं लाविया रे ॥ गुण गाये ठे गंधर्व रंग,  
 देवे उदय उलट अंग ॥ पा० ॥ ८ ॥ इति ॥ २४ ॥  
 ॥ अथ श्रीमाहावीरस्वामीना महिना पच्चीशमा ॥  
 ॥ पद्मसरोवर हुं गई रे, त्रिशला राणी करे रे कल्लोल  
 ॥ आजनो दिन रलीयामणो रे ॥ पहेलेने मासें अ  
 मीय पीयो रे, बीजे चंदन घोल ॥ आ० ॥ १ ॥ त्रीजे



ने मासें केसर कीयो रे, चोथे कपूरनी रेख ॥ आ० ॥  
 पांचमे षष्ठ पूजी जिमो रे, ठठे रह्या गर्जावास  
 ॥ आ० ॥ २ ॥ सातमे जाणुं सिंहें चडे रे, आठमे  
 दीजें दान ॥ आ० ॥ नवमे मासें यतना करो रे, स  
 वानवें पुत्र रतन ॥ आ० ॥ ३ ॥ धरणीयें पग देई  
 जनमीया ए, जन्म्या श्रीमाहावीर ॥ आ० ॥ सोना  
 ठरीयें नाल वधेरीयां रे, दायीने कोटी सोनैया दीध ॥  
 माहावीर कुंवर जन्म्या रे ॥ ए आंकणी ॥ ४ ॥ पुत्र  
 जन्म निज सांजली रे, राय सिद्धार्थने हर्ष न माय  
 ॥ मा० ॥ वधामणीयाने पंचांग पहेरामणी रे, वली  
 कीधी लाख पसाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पाणी सार्थें दूध  
 डे नवरावीया रे, चोखा सार्थें मोतीडे वधाव ॥ मा० ॥  
 चीर फाडीनें बालोतियां रे, पलंग पालखडीयें पोढा  
 व ॥ मा० ॥ ६ ॥ घर घर गूडियो उल्लेखे रे, नीलां तो  
 रण बांध्यां ठे बार ॥ मा० ॥ वठजीनी फईजी तेडा  
 वीयां रे, नाम दीधुं वर्द्धमान ॥ मा० ॥ ७ ॥ मेरु  
 शिखर ऊपर स्नात्र करे रे, ठप्पन कुमरी गावे ठे गीत ॥  
 मा० ॥ नाम पडामण हाथीयो रे, दीधां दीधां रत्न  
 बे चार ॥ मा० ॥ ८ ॥ सोना ते केरुं जुमणुं रे, मांहे  
 मोतीना जुमकार ॥ मा० ॥ त्रिशला राणी पुत्र तुमा

रडो रे, देवतणो शिरदार ॥ मा० ॥ ए ॥ काठा गहुं  
नी लापशी रे, मांहे मालवीयो गोल ॥ मा० ॥ जा  
जे धीयें लसलसी लापशी रे, गोत्रज आगल नैवेद्य  
कराय ॥ मा० ॥ १० ॥ कुंवरनी माता एम जणे रे;  
कुंवरजी अविचल राज ॥ मा० ॥ सोवन पाजणी  
ये पोढाडीया रे, नीलुडां वस्त्र उठाड ॥ मा० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली ठवीशमी ॥

॥ सरसति सामीने दिल धरी रे, वांछं गुरुने उत्साह ॥  
कमल पोयण सम लोयणी रे, कामिनी कंचनवान ॥  
चमर ढलावो जिणंद प्रभु वीरने रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥  
कंकण नेउर खलकती रे, ललकती कोकिलवान ॥ ग  
जगति चालशुं चालती रे, मलपती सहियर साथ ॥  
च० ॥ २ ॥ कनक कचोलां कुंकुम जरी रे, थाल  
मुक्ताफल सार ॥ चरम प्रभुजीनें वांदवा रे, शोल स  
जी शणगार ॥ च० ॥ ३ ॥ प्रह उगमतानी गहूंअली  
रे, वाजे वीणा सार ॥ चेलणा काढे ठे गहूंअली रे,  
श्रेणिकनी घरनार ॥ च० ॥ ४ ॥ मोतीनो पूखो ठे  
साथियो रे, ठवीयां पांच रतन ॥ चेलणा वधावे ठे  
मोतियें रे, देशना दिये जगवन्न ॥ च० ॥ ५ ॥ पाट  
पीठ प्रभु पाजजे रे, गाती रंगें रे साज ॥ सोवन सूर

( ३६ )

ज ऋगियो रे, सुरतरु मोखो रे आज ॥ च० ॥ ६ ॥  
पूर्वज तूठा पुण्यथी रे, वांध्या वीर जिणंद ॥ सुणी  
देशना जगवंतनी रे, हरख्यां नर नारी वृंद ॥ च०  
॥ ७ ॥ चेलणा चतुराई चित्तमें रे, संजारे दिवस ने  
रात्र ॥ त्रिशलानंदन देखतां रे, पवित्र थयां मोरां  
गात्र ॥ च० ॥ ८ ॥ सेवक लक्ष्मीसूरि तणो रे, प्र  
णमे नाण उदार ॥ वीर प्रभुजीने वांदतां रे, सफल  
कियो अवतार ॥ च० ॥ ९ ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ पडावश्यकसूत्रनी गहूंली सत्तावीशमी ॥  
॥ अहो मुनि चारित्रमां रमता, श्रीजिनआणा सुधी  
धरता, क्रियामारगमां अनुसरता ॥ अहो० ॥ १ ॥  
पडावश्यक सूत्रतणी रचना, ते सांजलो नवि एक  
मना, वाणी अमृत रस ऊरना ॥ अहो० ॥ २ ॥  
प्रथम सामायिक जे दाख्युं, बीजुं चउविसथ्यो जां  
ख्युं, तृतीय वांदण दिल राख्युं ॥ अहो० ॥ ३ ॥  
प्रतिक्रमण चोथे सुणतां, काउस्सग पांचमे अनुसर  
तां, ठठे पच्चस्काण करतां ॥ अहो० ॥ ४ ॥ पड्विध  
आवश्यक जे धारे, गुन परिणामें अवधारे, श्रीजिन  
मारग अजुवाले ॥ अहो० ॥ ५ ॥ स्थापना ज्ञानत  
णी मांमो, ममता माया दूरें ठांमो, तो शमतावृद्ध

होये जामो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ इणपरें सोहमनी  
वाणी, गहूंली करे चेलणा राणी, गुरु सन्मुख जोवे  
गुणखाणी ॥ अहो० ॥ ७ ॥ सीहोर नगरें गहूंली  
गाइ, कहे मुक्ति सुणोचित्त लाइ, श्रीजिन आणा धरो  
जाइ ॥ अहो० ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ गहूंली अष्टावीशमी ॥

॥ अरिहा आया रे, चंपावनके मेदान ॥ सुरपति  
गाया रे, शासनके सुलतान ॥ ए.आंकणी ॥ समव  
सरण सुर मली विरचावे, फूल सचित्त जल खलनां  
लावे ॥ विकसित जानु सम वरसावे, उपर बेसे रे,  
मुनिमुख परपदा बार ॥ प्रभु महिमायें रे, पीडा न  
हुवे लगार ॥ तत्त्वावतारी रे, प्रवचन सारउद्धार ॥  
॥ अ० ॥ १ ॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल ठटका  
यां फूल बिठाय, सजी सामईयुं वंदन आय, उववाई  
सूत्रें रे, देशना आमृत धार ॥ गौतम पूढे रे, अंबडनो  
अधिकार ॥ अदत्त न लेवे रे, सात सया परिवार ॥  
॥ अ० ॥ २ ॥ पाणी ठते तरशां व्रत पाली, गंगा रेव  
त वच्चें संथारी, देवलोके पंचम अवतारी, अंबडना  
में रे, ते सद्गुनो शिरदार ॥ अवधिज्ञानी रे, वैक्रियल  
ब्धि उदार ॥ तापस वेष्टें रे पाले अणुव्रत बार ॥ अ०

( ३० )

॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक जरिया, कंपिलपुरमां  
हे संचरिया, नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया, सहु  
को जाणे रे, अम घर उल्लव थाय ॥ घर घर होशे रे,  
कौतुक जोवा ते जाय ॥ देव नवांतर रे, अंबड सु  
क्ति वराय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सांजली हड्डे हर्ष नरा  
णी, बहुत साहेलीनी ठकुराणी, नामें सुजडा धारणी  
राणी, चीर पटोली रे, पहेरी निकट ते जाय ॥ घुंघट  
खोली रे, अंजलि शीश नमाय ॥ केशर घोली रे,  
साथिये मोती पूराय ॥ अ० ॥ ५ ॥ चतुरा चउमुख  
चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे, श्री  
शुजवीरनां चरण वधावे, मंगल गावे रे, रंजा अपठर  
नार ॥ जगतनो दीवो रे, विश्वंनर जयकार ॥ बहु  
चिरंजीवो रे, त्रिशला मात मल्हार ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली उगणत्रीशमी ॥

॥ अहो मुनि संयममांरमता ॥ ए आंकणी ॥ वीरनी आ  
णा शिरधरता, पवयणमायें सुविचरंता, सोहमपाट दी  
पावंता ॥ अ० ॥ १ ॥ श्रीजिन आणामती रागी, डब्य  
नव परिग्रह त्यागी, शिवरमणीछुं लय लागी ॥  
अ० ॥ २ ॥ ठत्रीश ठत्रीशीयें पूरा, रागादिकथी र  
हे दूरा, शांत मुझामांहे ससनूरा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वी

( ३९ )

रवाणी चित्त अनुसरता, कुमति तणा मद गाजंता,  
आव्या राजगृही फरता ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोणिक नू  
पतिनी राणी, नामंमलमां कजाणी, धवल मंगल  
करे गुणखाणी ॥ अ० ॥ ५ ॥ अनुजव झानें चित्त  
उरशे, सजुरु अंगें सदा वरसे, नविजलधर चात  
क वरसे ॥ अ० ॥ ६ ॥ एणी परें जे गुरु गुण गावे,  
संवरजावें चित्त लावे, महींइसिंह सूरिसुख पा  
वे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ गहूंली त्रीशमी ॥

॥ सखि राजगृही उद्यानमां, उतरियाश्री जिनराज ॥  
वारी जाऊं वीरनें ॥ सखि मननो ते सांसो उपशमे,  
जाणीयें मलीयो ठे शिवपुरीनो साज ॥ वा० ॥ १ ॥  
सखि देवठंदो ते देवेंरच्यो, तिहां बेठा ठे त्रिभुवन रा  
य ॥ वा० ॥ सखि बारे पर्षदा तिहां मली, जीरे स  
ती सुणवाने जाय ॥ वा० ॥ २ ॥ राणी चेलणा  
ते लावे गहूंअली, राजा श्रेणिकनी घरनार ॥ वा० ॥  
जीरें मुक्ता ते फलनो साथियो, जीरे उपर श्रीफल  
सार ॥ वा० ॥ ३ ॥ सखि ठवणीनी आगल गहूंअली,  
जीरे विच विच नागरवेल ॥ वा० ॥ जीरे दरजुं रे  
दरिया तणुं, जारे जेमां ठे जाजेरी रेल ॥ वा० ॥

॥ ४ ॥ जीरे वखाण जलुं रे वीरजी तणुं, जीरे सां  
 नले गुणिजन लाख ॥ वा० ॥ जीरे नानी ते नानी  
 नानडी, जीरे नानी ठे शाकर डाख ॥ वा० ॥  
 ॥ ५ ॥ जीरे नानी ते प्रभुजीनी जीनडी, जीरे बूऊ  
 व्या जाण अजाण ॥ वा० ॥ जीरे नाट नणे रे बी  
 रुदावलि, जीरे सईयर गावे गान ॥ वा० ॥ ६ ॥  
 जीरे आ जुगमां जोतां थकां, जीरे कोई न करे प्रभु  
 जीशुं होड ॥ वा० ॥ जीरे नव नव ए जिन जोमले,  
 वसंतसागर कहे कर जोड ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनारजीनो वधावो एकत्रीशमो ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखियो, जीहो उपनो अधिक आ  
 एंद ॥ वधावो मारे आवीयो ॥ बीजे नेमीशर बहु  
 गुणा, जीहो दीठो दोलतनो दिणंद ॥ व० ॥ १ ॥  
 ॥ ए आंकणी ॥ त्रीजे वधावे प्रभु तुं स्तव्यो, जीहो  
 अगर सुवास विहार ॥ व० ॥ केसर चंदन कुसुम  
 नी, जीहो पूजा सत्तर प्रकार ॥ व० ॥ २ ॥ चोथे  
 वधावे प्रभु चरणनुं, जीहो धरीयें मन शुन ध्यान  
 ॥ व० ॥ चतुर दरिसण चारित्रनां, जीहो गुण गाउं  
 गुरुग्यान ॥ व० ॥ ३ ॥ आसन युक्ति अनुसरी,  
 जीहो जादव गुणलय लीन ॥ व० ॥ जावुं प्रभुगुं

ए नावना, जिहो आतमशक्ति नवीन ॥ व० ॥ ४ ॥  
 एम सघलो टव्यो आंतरो, जीहो अम तुम अतिशय  
 एक ॥ व० ॥ ध्यायकनें वली ध्येयनो, जीहो अधि  
 क विवेक अनेक ॥ व० ॥ ५ ॥ नाग्य नले मलि नवि  
 जनें, जीहो जोयो श्रीजिनराज ॥ व० ॥ संघवी सहित  
 स्वरूपनुं, जीहो सफल थयुं सहु काज ॥ व० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीशूलीनङ्गीनी गहूंली बन्नीशमी ॥  
 ॥ जीरे मारे शूलीनङ्ग गुरुराय, सातमे पाटे सोहाम  
 णा जीरे जी ॥ जीरे मारे नङ्गबाहु मुणिंद, संनूति  
 विजय सूरि तणा ॥ जीरे० ॥ १ ॥ जीरे मारे पाट विशे  
 ष सुजाण, शियलगुणें अलंकखा ॥ जी० ॥ जीरे मारे  
 कोश्यायें बूझ्या ताम, जैनधर्मथी नवि पड्या ॥  
 जी० ॥ २ ॥ जीरे मारे जगमां राख्युं नीम, चोरा  
 शी चोवीशी लगें ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे संघ चतुर्विध  
 जाण, उडव करे उलट अंगें ॥ जीरे० ॥ ३ ॥ जीरे  
 मारे वाजे ढोल निशान, सरणार्थ्यु मधुरे स्वरें ॥  
 जीरे० ॥ जीरे मारे गोरी गावे गीत, सोहागण गहूंली  
 करे ॥ जीरे० ॥ ४ ॥ जीरे मारे धन्य सकमाल प्रधान,  
 धन्य लाठलदेमातने ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे धन्य ते नाग  
 रनात, धन्य ते सिरिया चातने ॥ जीरे० ॥ ५ ॥



जीरे मारे धन्य जह्वा प्रमुख, साते बेहेनो सोहामणी॥  
 जीरे० ॥ जीरे मारे सूरेश्वर शिरदार, श्रीयूजिनड शि  
 रोमणि ॥ जीरे० ॥ ६ ॥ जीरे मारे ध्यान धरो दिन  
 रात, एवा मुनिनुं खांतुं ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे लेशे  
 मंगलमाल, जे गावे नित्य जावतुं ॥ जीरे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पजूसणनी गहूंली तेत्रीशमी ॥

॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यने योगें, मलिया सह गुरु सं  
 योगें रे ॥ मारी सही रे समाणी ॥ सात पांच जेली  
 मलीनें टोली, गहूंली करे मन जोली रे ॥ मा० ॥ १ ॥  
 घुंघटपट खोली गुरुमुख जोती, तन मनना मल  
 धोती रे ॥ मा० ॥ समकितरागें ने धर्मनी बुद्धि, परि  
 एतिनी वाली बुद्धि रे ॥ मा० ॥ २ ॥ वांदी वधावी  
 गुरुजीनी वाणी, निसुणो जविजन प्राणी रे ॥ मा० ॥  
 उपशम जावो ने निंदा निवारो, जीव सद्गुं हित धारो  
 रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ गुरुपग मूले संघ सद्गुं स्वामो, क  
 षायतणा मद वामो रे ॥ मा० ॥ इणदिन आवे व्रत  
 तप कीजें, अधिक अधिक लाहो लीजें रे ॥  
 मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रनावना महिमाने देखी, हरखे  
 धरमना गवेषी रे ॥ मा० ॥ चैत्य परवाडी जिनमुख

( ४३ )

जोवो, जवजवनां पाप खोवो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कल  
प सुणीजें प्रजावना दीजें, अछाइ महिमा इम कीजें  
रे ॥ मा० ॥ गहूंली गावो ने वीरजिन ध्यावो, मलूक  
जावना जावो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ अथ चूनडी चोत्रीशमी ॥

॥ आढी सुरंगी चूनडी रे, चूनडी राती चोल रे ॥ रं  
गीली ॥ लाल सुरंगी चूनडी रे ॥ १ ॥ बुरान पुरनी  
बांधणी रे, रंगाणी उरंगावाद रे ॥ रंगीली ॥ चोल  
मजीठना रंगथी, कसुंबे लीधो हठवाद रे ॥ रंगीली  
॥ आ० ॥ २ ॥ सूरत शहेरमां संचखां रे, जातां जिन  
वाणीनें माट रे ॥ रंगीली ॥ चोराशी चोकने चहूवटे  
रे, दीठां दोशीडानां हाट रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ३ ॥  
नणदी वीराजीने वीनवे रे, ए चूनडीनी होंश रे ॥  
रंगीली ॥ चूनडीमां हाथी घोडला रे, हंस पोपट ने  
मोर रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ४ ॥ समरथ ससरे मू  
लवी रे, पासें पीयुजीने राख रे ॥ रंगीली ॥ समकित  
सासुना केणथी रे, सोनइयादीधा सवा लाख रे ॥  
रंगीली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सासूजीने साडीयो रे, ना  
नी नणदीनें घाट रे ॥ रंगीली ॥ देराणी जेठाणीनां  
जोडलां रे, शोक्यने लावो शा माट रे ॥ रंगीली ॥

आ० ॥ ६ ॥ चूनडी उठिनें संचखां रे, जातां जिनद  
खार रे ॥ रंगीली ॥ माणकमुनियें कोडथी रे, गाई  
ए चूनडी सार रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति० ॥ ३४ ॥

॥ अथ गहूंली पांत्रिशमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रिगुरुपद पंकजनी सेवा, लागी ठे मुऊ मन  
हेवा रे ॥ गुरुजी उपकारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु गु  
ए दरीयो सुपरें जरियो, मुऊथी किम जाये तरियो  
रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांच ज्ञानमांहे उपकारी, ए श्रुतनी  
बलिहारी रे ॥ गु० ॥ असंख्य जीवना जव सुविला  
सें, संख्याता जव प्रकासे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ लोकना  
जाव ते ज्ञानथी कहीयें, सजुरु मुखथी लहीयें रें  
॥ गु० ॥ दर्शन सहित ज्ञान ते नासे, दर्शन मोहनी  
नासे रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ विघटे मिथ्यात्व आतम  
केरो, टाले ते जवनो फेरो रे ॥ गु० ॥ समकितवि  
ए संजम नहिं रचना, आगम मांहे ठे वचना रे  
॥ गु० ॥ ४ ॥ समकित सहित करे जे किरिया, तें  
जवसमुझथी तरिया रे ॥ गु० ॥ एहवी वाणी सोह  
म केरी, नासे कर्मजो वैरी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सोह  
म पाट परंपर राजे, विजयदेवेंडू सूरि गाजे रे ॥ गु० ॥

( ४५ )

स्वस्तिक पूरे डःखने चूरे, वधावे चढते नूरे रे  
॥ गु० ॥ ६ ॥ सूरि गुणे ठत्रीश सोहावे, विजयानं  
द पद पावे रे ॥ गु० ॥ प्रेमथी नावे नवनिध पावे,  
अमृत शिव सुख ध्यावे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ गहूंली ठत्रीशमी ॥

॥ मोतीवाला नमरजी ॥ ए देशी ॥

॥ चरणकरणशुं शोजता ॥ व्रतधारी रे सुगुरु जी ॥  
नविजन मानस हंस रे ॥ जगत'उपकारी रे सुगुरुजी  
॥ जंगमतीरथ साधु जी ॥ व्र० ॥ लोन तणो नहिं  
अंश रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिरूवादिक गुण नखा,  
॥ व्र० ॥ षटकारण लिये आहार रे ॥ ज० ॥ सामु  
दाणी गोचरी ॥ व्र० ॥ ज्ञानरतन जंमार रे ॥ ज०  
॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ व्र० ॥ वनिता धरि  
य विवेक रे ॥ ज० ॥ सरखी साहेलियें परवरी  
॥ व्र० ॥ समकितनी घणी टेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥  
अस्तिक पीठनी उपरें ॥ व्र० ॥ अनुजव मुक्ता श्वेत रे  
॥ ज० ॥ चिहुं गति चूरण साथीयो ॥ व्र० ॥ वधा  
वती धरी हेत रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ गुणवंती गावें गहूंअ  
ली ॥ व्र० ॥ मुनिगुणमणि धरि हाथ रे ॥ ज० ॥

श्रीगुजवीरनी देशना ॥ ब्र० ॥ सुणतां मले शिवसा  
थ रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥अथ गहूंली साडत्रीशमी ॥

॥ केसरिया चडो वरघोडे ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही वनखंम विचाल, आब्या वीरजिणंद द  
याल, वंदे श्रेणिकनामें जूपाल तो ॥ वीर जगत गुरु  
वंदना करियें ॥ वंदना करियें ने नवजल तरियें तो  
॥ वी० ॥ १ ॥ कुष्टि कुरूप एक देव ते वार, मरण  
जीवन जन चार विचार, श्रेणिकरायने हर्ष अपार तो  
॥ वी० ॥ २ ॥ कोसंबी नगरीनो वासी, सेडूक ब्रा  
ह्मण धननो आशी, पुत्र कुटुंबने रोगें वासी तो ॥  
वी० ॥ ३ ॥ आवे राजगृही डुवार, मरण लही  
जल तरश अपार, जलमां मेडकनो अवतार तो  
॥ वी० ॥ ४ ॥ वारी हारी नारि वचनथी, पूर  
वचन लहि चाब्यो वनथी, मुज वंदन हरब्यो तन  
मनथी तो ॥ वी० ॥ ५ ॥ तुळ घोटक पद हणि  
यो जाम, लहि सुर नव आब्यो एणें ठाम, श्रेणिक  
देखे तुळ परिणाम तो ॥ वी० ॥ ६ ॥ मोहगमन  
कहो मुजने सार, दर्दूर रंक तणो अधिकार, उप  
देशमाला ग्रंथ मोजार तो ॥ वी० ॥ ७ ॥ राणी

चेलणा हर्ष न मावे, मुक्ताफलशुं गहूंली बनावे, श्री  
शुनवीर जिणंद वधावे तो ॥ वी० ॥ ८ ॥ ३७ ॥

॥ अथ गहूंली आडत्रीशमी ॥

॥ द्वारका नगरी दीपती ॥ जिन वंदीयें ॥ वसे जादच  
कुलनो परिवार ॥ रे जिन वंदीयें ॥ जिनजी ते आवी  
समोसखा ॥ जि० ॥ सार्थे गणधर वर अठार ॥  
रे जि० ॥ १ ॥ अठार सहस साधु जला ॥ जि० ॥ ते  
तो लब्धि तणा रे जंमार ॥ रे जि० ॥ समवसरण  
देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां वेठी पर्षदा वार ॥ रे जि० ॥  
॥ २ ॥ कृष्णजी वांदवा आविया ॥ जि० ॥ सार्थे अंते  
उरनो परिवार ॥ रे जि० ॥ गहूंली ते करे मन रंग  
शुं ॥ जि० ॥ सत्यनामा रुक्मिणी नार ॥ रे जि० ॥  
॥ ३ ॥ पहेरी पटोलां दाडमी ॥ जि० ॥ पाये जांऊरनो ज  
मकार ॥ रे जि० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो ॥ जि० ॥  
पांच रतन ते पंचाचार ॥ रे जि० ॥ ४ ॥ लली लली  
जेती लूठणां ॥ जि० ॥ जिनमुखडां जूवे रे निहाल  
॥ रे जि० ॥ कृष्णजीयें प्रभुजीने पूठियुं ॥ जि० ॥  
मुज श्रम चढयो रे अपार ॥ रे जि० ॥ ५ ॥ प्रभुजी  
कहे श्रम उतखो ॥ जि० ॥ तमें कारज कछुं मनो  
हार ॥ रे जि० ॥ सातमीनी त्रीजी करी ॥ जि० ॥

( ४७ )

तमें समकित नमो निर्धार ॥ रेजि० ॥ ६ ॥ रोम रोम  
हर्षित हुआ ॥ जि० ॥ प्रभु तार तार मुऊ तार  
॥ रेजि० ॥ न्यायसागर प्रभु निरखतां ॥ जि० ॥ तमे  
जय जय जणो नर नार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३७

॥ अथ गहूंली उगणचालीशमी ॥

॥ आर्यदेश नरजव लह्यो रे, श्रावक कुल मनोहार  
रे ॥ जिननी वाणी नित्य सुणे रे, धन्य तेहनो अवतार  
॥ गुरुने बोलडीये, मोह्या मोह्या रे त्रिचुवन लोक ॥ गु  
रुने बोलडीये ॥ १ ॥ उठी सवारें प्रभु नमे रे, करे  
नवकारसी सार रे ॥ शोल शणगार सजी करीने,  
आवे गुरु दरवार ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ  
करीने, वांदी बेसे ठाय रे ॥ उठ हाथ अलगी रहिनैं,  
गहूंली पूरवा जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ ॥ चिहुंगति दुःख  
निवारवा रे, माहामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल  
मांहे वडो ने, साथीयो कीजें उदार ॥ गु० ॥ ४ ॥ व  
धावे गुरुरायने रे, पठें करे पञ्चकाण रे ॥ लूठणीयां  
लटके करे ने, जाव जलो मन आण ॥ गु० ॥ ५ ॥  
आगम अर्थने धारती रे, करती विनय विशेष रे ॥  
एम आतमने तारती रे, सौजाग्यलक्ष्मी सुविशेष ॥  
॥ गु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३८ ॥

( ४९ )

॥ अथ गहूंजी चालीशमी ॥

॥ रूडी रे राजगृही उद्यानें, पंचसया मुनिमान हो  
॥ स्वामि ॥ आवीया गुरु गोयम स्वामी ॥ वनपालें जई  
राय वधाव्या, हर्ष वधामणी लाया हो ॥ स्वा० ॥  
॥ आ० ॥ १ ॥ आव्या वीरतणा आदेशी, कश्यें  
केवा केशी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक अंतेउर  
सहु तेडी, जीत नगरां गेडी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥  
॥ २ ॥ चेडा रायतणी तस बेटी, चेलणा गुणमणि  
पेटी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक रायतणी पट  
राणी, वीरें आप वखाणी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ३ ॥  
साथीयडो कीधो लटकालो, मंगल रंग रसाल हो ॥ स्वा०  
॥ आ० ॥ ललि ललि गुरुजीने लूढणां करती, की  
र्तिनां दानज देती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ देशना  
सांजली आनंद पामी, धर्म यथोचित राख्यो हो ॥  
स्वा० ॥ आ० ॥ उपगारी गुरुना गुण गाती, समकित  
रतनने चहाती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ श्री  
पालतणीपरें तरसे, शिव रमणी सुख वरसे हो ॥  
स्वा० ॥ आ० ॥ जे कोई गहूंजी एणी परें करशे, मुक्ति  
ताणां सुख वरशे हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥



॥ अथ गहूंली एकतालीशमी ॥

॥ सोहमस्वामी परंपरा ॥ सुखकारी रे साहेब जी ॥  
 मुनिगुणरत्न जंमार रे ॥ वालो मारो एही रे साहेब  
 जी ॥ सूरि ठत्रिश गुणें शोनता ॥ सु० ॥ धरता माहा  
 व्रत सार रे ॥ वालो० ॥ १ ॥ पंचेंडिय संवरपणे ॥ सु०॥  
 नवविध ब्रह्मचर्य धार रे ॥ वा० ॥ पंचाचारज पा  
 लता ॥ सु० ॥ टाले क्रोधादिक चार रे ॥ वा० ॥ २ ॥  
 समिति गुप्ति निजशुद्धता ॥ सु० ॥ पटकायिक प्रति  
 पाल रे ॥ वा० ॥ एहवा गुरुपद सेवीयें ॥ सु० ॥  
 पामीयें मंगलमाल रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ विहार करंता  
 आवीया ॥ सु० ॥ मुंबई बंदर मजार रे ॥ वा० ॥  
 संघ सकल अति जावशुं ॥ सु० ॥ सेवा करे नर नार  
 रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ अचल गह्वपति दीपता ॥ सु० ॥  
 रत्नसागर सूरिराय रे ॥ वा० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणम  
 तां ॥ सु० ॥ संघने कल्याण आय रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥ अथ गहूंली बहेंतालीशमी ॥

॥ आवो हरि लासरिया वाला ॥ ए देशी ॥  
 ॥ चालो सखि वंदनने जश्यें, वंदीने पावन तो अश्यें  
 ॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ माता त्रिशलाना जाया,  
 धर्म धुरंधर कहेवाया, गुणशील वनमांहे आया

॥ ચાલો ૦ ॥ ૧ ॥ શોના શી વરણબું બહેની, ત્રિચુવ  
 નમાં કીર્તિ જેહની, બલિહારી જાવું હું એહની ॥  
 ॥ ચાલો ૦ ॥ ૨ ॥ ઠાજે કેવલ ઠકુરાઈ, સાદિ અનંત  
 ગુણ પાઈ, ગણધર આગમમાં ગાઈ ॥ ચાલો ૦ ॥ ૩ ॥  
 સુરકોડી સેવા કરતા, ડંગણીશ અતિશય અનુસરતા,  
 જાવેં જવસાયર તરતા ॥ ચાલો ૦ ॥ ૪ ॥ ચૌદ  
 હજાર મુનિ સંગે, ધારક ચરણ કરણ રંગે, શીલ સ  
 ન્નાહ ધણ્યાં યંગે ॥ ચાલો ૦ ॥ ૫ ॥ શ્રેણિક ચેલ  
 ણા સદુ આવે, મુક્તાફલ જરીને લાવે, મંગલ આવ  
 કરી ગાવે ॥ ચાલો ૦ ॥ ૬ ॥ ગાતાં દુઃખ દોહગ  
 જાંજે, મંગલ મહિમંગલ કાજે, ઇમ કહ્યો દીપ ક  
 વિરાજે ॥ ચાલો ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥ ૪૨ ॥

॥ અથ ગદ્દૂલી ત્રેંતાલીશમી ॥

॥ વાડીના નમરા, ડાઘ મિઠી રે ચાંપાનેરની ॥ એ દેશી ॥  
 ॥ જીરે કામની કહે સુણો કંથ જી, જીરે ફલિયા  
 મનોરથ આજ રે ॥ નણદીના વીરા ગણધર આવ્યા  
 હે ચાલો વાંદવા ॥ જીરે જવોદધિ પાર ઉતારવા, જીરે  
 તારણ તરણ ઝહાજ રે ॥ ન ૦ ॥ ૧ ॥ જીરે ગુણશૈલ્ય  
 ચત્ય સમોસહ્યા, જીરે વીરતણા હે પટોધાર રે ॥ ન ૦ ॥  
 જીરે પાંચરોં મુનિ પરિવાર હે, જીરે તીરથના અવતા

र रे ॥ न० ॥ १ ॥ जीरे कंचन कामिनी परिहृषां,  
 जीरे प्रगट्या ठे गुण वीतराग रे ॥ न० ॥ जीरे परि  
 सहनी फोजने जीतवा, जीरे कर धरी उपशमखड्ग  
 रे ॥ न० ॥ ३ ॥ जीरे प्रवचन मातने पालता, जीरे समि  
 ति गुप्ति धरनार रे ॥ न० ॥ जीरे मेरुगिरि सम  
 मोटका, जीरे पंचमहाव्रत नार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जी  
 रे सुरपति नरपति जेहने, जीरे दोष कर जोडी हजूर  
 रे ॥ न० ॥ जीरे अमृतसमी गुरुनी देशना, जीरे पा  
 प पमल होये दूर रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जीरे कामिनी व  
 यण रे मीठडां, जीरे वांद्या ठे गुरु गणधार रे ॥ न० ॥  
 जीरे गुरुमुखयी सुणी देशणा, जीरे आनंद अंग अ  
 पार रे ॥ न० ॥ ६ ॥ जीरे मुक्ता ने रयणें वधावती, जी  
 रे गहूंली चित्त रसाल रे ॥ न० ॥ जीरे निजजव सुकृत  
 संनारती, जीरे जेहना ठे जाव विशाल रे ॥ न० ॥  
 ॥ ७ ॥ जीरे दीपविजय कविराज जी, जीरे पृथ्वीनं  
 दन बलिहार रे ॥ न० ॥ जीरे गौतम गणधर पूज्य  
 जी, जीरे वीरशासन शणगार रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ गहूंली चुम्मालीशमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सुरिजन विचरंता वसुधा तले, राजगृही उद्यान

ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਸੁਰ ਨਰ ਕੋਡੀਯੁੰ  
 ਪਰਵਝਾ, ਝਾਤਨੰਦਨ ਜਗਵਾਨ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥  
 ਸੁਰਿਜਨ, ਸ਼ਾਸਨ ਨਾਯਕ ਵੰਦੀਯੈਂ ॥ ੧ ॥ ਐ ਆਂ  
 ਕਾਣੀ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਤੇਜੈਂ ਤਰਾਣਿ ਪਰੈਂ ਝੀਂਪਤਾ, ਸਮਤਾਯੈਂ  
 ਸ਼ਾਰਦ ਚੰਦ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਗੋਪਥਕ  
 ਯੁੰਨਾਮਨੈਂ, ਧਿਰਤਾਯੈਂ ਮੇਰੁ ਗਿਰਿੰਦ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ  
 ॥ ਸੁ० ॥ ਸ਼ਾ० ॥ ੨ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਯੋਗਾਸਨ ਧਾਰੀ  
 ਧਾਣਾ, ਸਮਤਾਧਰ ਸੁਨਿਸੰਗ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁ  
 ਰਿਜਨ ਝਾਨ ਗਜੈਂ ਕੋਝ ਗਾਜਤਾ, ਰਾਜਤਾ ਧਿਆਨ ਤੁਰੰਗ  
 ਹੈਂ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁ० ॥ ਸ਼ਾ० ॥ ੩ ॥ ਸੁਰਿਜਨ  
 ਪ੍ਰਾਤਿਹਾਰਯ ਵਰ ਆਵਯੁੰ, ਸੇਵਿਤ ਸੁਰਸੁਲਤਾਨ ਹੇ, ਅਲ  
 ਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਗੁਣਸ਼ੀਲ ਚੈਤ੍ਯਮਾਂ ਜਵਿਕਨੈਂ,  
 ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ਨੁੰ ਦਾਨ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿ० ॥  
 ਸ਼ਾ० ॥ ੪ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਨੰਦਾਵਤੀ ਨੰਦੋਤ੍ਤਰਾ, ਸ਼ੋਲ  
 ਸਜੀ ਸ਼ਾਯਗਾਰ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਕੁੰਕੁਮ  
 ਅਕੁਤ ਫਲ ਲਝ, ਸ਼੍ਰੇਣਿਕਨੀ ਧਰ ਨਾਰੀ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ  
 ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿ० ॥ ਸ਼ਾ० ॥ ੫ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਸੁੰਦਰੀ ਪੂਰੇ  
 ਸਾਥੀਯੋ, ਪ੍ਰਾਣਮੀ ਵਧਾਵੇ ਜਿਯੰਦ ਹੇ, ਅਲਬੇਲ ਹੇਲੀ  
 ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਅਰਿਹਾ ਮੁਖ ਅਵਲੋਕੀਨੈਂ, ਪਾਮੇ ਪਰਮਾਨੰ  
 ਦ ਹੇ, ਅਲਬੇਲੀ ਹੇਲੀ ॥ ਸੁਰਿ० ॥ ਸ਼ਾ० ॥ ੬ ॥ ਸੁ

रिजन कीजें उंची एम साचवी, शासन नक्ति विशा  
ल हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन प्रचुनी वाणी अमृत  
समी अढे, रंगें सुणीयें रसाल हे, अलबेली हेली  
॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ अथ गहूंली पीस्तालीशमी ॥

॥ सुण गोवालणी, गोरसडावाली रे उनी रहेने एदेशी ॥  
॥ सुण साहेली, जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने ॥  
मुनि मुख जोतां, मन उलसे तन विकसे आपण बे  
ने ॥ ए आंकणी ठे ॥ यावर तीरथ दुर्गति वारें, प  
ण घर मेली जइयें ज्यारें, विधियोगें ध्यान धरे त्या  
रें, संसार समुद्रथकी तारे ॥ सुण० ॥ १ ॥ जंगम  
मुनि मारगमां फरता, संयम आचरणा आचरता,  
जगजीव उपर करुणा धरता, पुण्यशाली घर पावन  
करता ॥ सुण० ॥ २ ॥ अनाचीरण बावन परिहर  
ता, बोले दशवैकालिक करता, गणि पेटी बहु श्रुत  
नी धरता, मुखचंद्रथकी अमृत ऊरता ॥ सुण० ॥  
॥ ३ ॥ वर ज्ञान ध्यान हय गय वरिया, तप जप च  
रणादिक परिकिरिया, विरति पटराणीछुं ठरीया, मुं  
निराज सवाइ केशरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ सुविहित  
गीतारथ गुरु आंगें, विधियोगें वंदे गुणरागें, कर

कंकण पग जांजर वागे, गहूंली करतां अनुजव जा  
गे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कुंकावटीयें केशर लेता, करी स्व  
स्तिक पातकडां धोती, वधावती उज्ज्वल मोती, वल  
ती ललती गुरुमुख जोती ॥ सुण० ॥ ६ ॥ कलकंठ  
वती मधुरा रावे, गुणवंती तिहां गहूंली गावे, आ नव  
सौभाग्यपणुं पावे, गुनवीर वचन हैयडे नावे ॥ सु० ॥ ७

॥ अथ अगीयार गणधरनी गहूंली ठेंतालीशमी ॥

॥ जनक रायने रे मांनवे ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलो गोयम गणधरु, इंद्रनूति जेहनुं ठे नाम ॥  
अग्निनूति वखाणीयें, बीजो प्रभुगुण धाम ॥ गणधर  
शोना हुंशी कहुं ॥ एआंकणी ॥ १ ॥ वायुनूति त्रीजा  
वजीर ठे, गौतमगोत्र नगवंत ॥ चोथा व्यक्तजी जाणीयें,  
कीधा नवना रे अंत ॥ गण० ॥ २ ॥ स्वामी सुध  
र्मा ठे पांचमा, मंमिठ ठछा गणधार ॥ मोरिय पुत्र  
ठे सातमा, सह्य ए जगना आधार ॥ गण० ॥ ३ ॥  
अकंपितजी ठे रे आठमा, अचलजी नवमा रे जाण ॥  
मेतारय जग पूज्य जी, गणपति दशमो वखाण  
॥ गण० ॥ ४ ॥ स्वामी प्रजासजी वंदीयें, एकादश  
मा गणधार ॥ गणधर गह्वपति गणपति, तीरथ  
ना अवतार, द्वादशांगी धरनार, सह्य मुनिना

शिरदार, पाम्या जवनो रे पार, नामें जय जयकार,  
 वंदो वार हजार ॥ गण० ॥ ५ ॥ आणा लेऽ प्रभु  
 वीरनी, सद्गुजनने सुखदाय ॥ गुणशीला चैत्य पधा  
 रीया, श्रेणिकवंदन आय ॥ अमृतवाणी सवाय,  
 निसुणी हर्ष न माय, सुणतां मनडां लोनाय  
 ॥ गण० ॥ ६ ॥ चेलणा पूरे रे गहूंअली, सहीयर  
 गावे ठे गीत ॥ दीपविजय कवि राजनी, ए जिनशास  
 न रीत ॥ गण० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ गहूंली सुडतालीशमी ॥

॥ गह्व राया रे ॥ ए देशा ॥

॥ धित्त समरुं सरसति माय रे, वली वंदूं सजुरु पा  
 य रे, हुंतो गाइश तपगह्व राय रे ॥ गह्व राया रे  
 ॥ १ ॥ ठत्रीश गुणें गुरु राजे रे, गौतम गणधर पट  
 ठाजे रे, गुरु पंचाचार दीवाजे रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गु  
 रु सारण वारण दाता रे, जिनराज सदा मन ध्याता  
 रे, गुरु संयम धर्ममें राता रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ गुरु  
 पंच महाव्रत पाले रे, गुरु आतम तत्त्व संजाले रे,  
 गुरु जिनशासन अजुआले रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ जेणे  
 ज्ञाननी दृष्टि निहाली रे, गुरु देशना दे लटकाली रे,  
 गुरु प्रतपे कोडि दीवाली रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुरु मधु

रे वचनें वरसे रे, नव्य जीव तणा मन हरसे रे, गुरु  
 गुण सुणवा मन तरसे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ करो गहूंली  
 गह्वपति आगे रे, वधावो गुरु महाजागे रे, गाउ  
 मंगल मधुरें रागे रे ॥ ग० ॥ ७ ॥ गुरु धन्य आपंदि  
 बाइ जाया रे, साहेब राजकुलमां सवाया रे, श्री  
 विजयलक्ष्मी सूरिराया रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ गुरु प्रेम  
 पदारथ पाया रे, जेणे धर्मना पंथ बताया रे, एम  
 दीपविजय गुण गाया रे ॥ ग० ॥ ९ ॥ इति ॥४७॥

॥ अथ केशीकुमारनी गहूंली अडतालीशमी ॥

॥ जीरे वर वरघोडे संचखो, जीरे बिहुं पासें चमर  
 वींजाय ॥ जीया वरंनी घोडली ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे कुंकुम ठडो देवरावीयें, जीरे मोतीना चोक  
 पूरावो ॥ वधाइ वधाइ ठे ॥ जीरे घर रघ गूडी रे  
 सज करो, जीरे सोहागण मंगल गावो ॥ वधाइ वधा  
 इ ठे ॥ १ ॥ जीरे आज वधाईना कोड ठे, जीरे  
 सेतंबी नयरी मजार ॥ वधा० ॥ जीरे पास प्रभुजी  
 ना पटधरु, जीरे आव्या ठे केशी कुमार ॥ वधा० ॥  
 ॥ २ ॥ जीरे पांचशें मुनि परिवार ठे, जीरे जीवद  
 या प्रतिपाल ॥ वधा० ॥ जीरे डुकर परिसह जीप  
 ता, जीरे जगजसकार प्रनाल ॥ वधा० ॥ ३ ॥



जीरे ठंमया ठे मोह संसारना, जीरे व्रतधारी संयम  
 धार ॥ वधा० ॥ जीरे चरण करणनी सित्तरी, जीरे  
 सेवा लहे नव तार ॥ वधा० ॥ ४ ॥ जीरे तपीया ठे  
 केइ मुनिराज जी, जीरे त्यागी ठे केइ मुनिराज  
 ॥ वधा० ॥ जीरे मुनि गुणठाणे वरतता, जीरे शिव  
 वधू वरवाने काज ॥ वधा० ॥ ५ ॥ जीरे नृप परदेशी रे  
 हरखियो, जीरे पहोतो ठे वंदन काज ॥ वधा० ॥  
 जीरे गुरु उपकार संनारतो, जीरे पूज्य ठे गरीबनि  
 वाज ॥ वधा० ॥ ६ ॥ जीरे नृपपटराणी गहूंअली,  
 जीरे पूरे ठे पूज्य हजूर ॥ वधा० ॥ जीरे दीपविजय  
 कविराजने, जीरे वंदो उगमते सूर ॥ वधा० ॥ ७ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ गहूंली उगणपच्चासमी ॥ देशी उपरनी गहूंलीनी ॥  
 ॥ जीरे सूर उगमती गहूंअली, जीरे गुरु आगल श्री  
 कार ॥ मनोहर गहूंअली ॥ जीरे सहारे समाणी संच  
 री, जीरे पूठें बहु परिवार ॥ म० ॥ १ ॥ जीरे चालो  
 रे सहियो उतावली, जीरे हैयडे हर्ष न माय ॥ म० ॥  
 जीरे समकेतने अछुवालवा, जीरे वंदीयें श्री गुरुरा  
 य ॥ म० ॥ २ ॥ जीरे सरखा सरखी सुंदरी, जीरे  
 टोळें मली गहू घाट ॥ म० ॥ जीरे आठा शालु उ  
 ढणी, जीरे उपर नवरंग घाट ॥ म० ॥ ३ ॥ जीरे

नावें सहगुरु जेटवा, जीरे सहु मलीने साथ ॥ म० ॥  
 जीरे उलटें आब्या अप्पा सहि, जीरे सोवनथाली  
 हाथ ॥ म० ॥ ४ ॥ जीरे हीरें जडित कुंकावटी,  
 जीरे मांहे कपूर बरास ॥ म० ॥ जीरे मांहे मृगसद  
 महमहे, जीरे केसर चंदन खास ॥ म० ॥ ५ ॥  
 जीरे चतुरा चाली चमकती, जीरे ठमकेशुं ठवती  
 पाय ॥ म० ॥ जीरे चरणे नेउर रणऊणे, जीरे मा  
 निनी मानें गाय ॥ म० ॥ ६ ॥ जीरे पाये वींतुआ  
 वाजणां, जीरे जांजरना रमजोल ॥ म० ॥ जीरे प्रे  
 मेशुं गढुंअली करी, जीरें नवखंमी रंगरोल ॥ म० ॥  
 ॥ ७ ॥ जीरें पूरी सोहागण साथीयो, जीरे मोतीडे  
 मनरंग ॥ म० ॥ जीरे जूंगल जेरी जणहणे, जीरे  
 वाजे ढोल मृदंग ॥ म० ॥ ८ ॥ जीरें त्रण खमा  
 समण देझे, जीरे वंदे सहु नर नार ॥ म० ॥ जीरे  
 संघ मळ्यो सहु सामटो, जीरे उत्सवनो नहिं पार  
 ॥ म० ॥ ९ ॥ जीरे सहगुरु दीये तिहां देशना,  
 जीरे वांची सूत्रविचार ॥ म० ॥ जीरे जलधरनी पेरें  
 गाजता, जीरे वरसता अमृतधार ॥ म० ॥ १० ॥  
 जीरे मीठी रे मीठी मीठडी, जीरे मीठीसाकर डाख  
 ॥ म० ॥ जीरे तेहथकी पण मीठडी, जीरे मीठी म

हारा गुरुजीनी जाख ॥ म० ॥ ११ ॥ जीरे एकचिन्नें  
 जे सांजले, जीरे पामे ते जवपार ॥ म० ॥ जीरे नित्य  
 नित्य रंग वधामणां, जीरे सुख पामे संसार ॥ म० ॥  
 ॥ १२ ॥ जीरे हीररतन सूरि राजीया, जीरे तपगढ  
 केरा राउ ॥ म० ॥ जीरे अमें अमारा गुरुजीने गा  
 यशुं, जीरे न गमे ते उठीने जाउ ॥ म० ॥ १३ ॥  
 जीरे दानशीयल तप जवना, जीरे जे सुणे ए जि  
 नवाणी ॥ म० ॥ जीरे उदयरतन मुनि एम कहे, जीरे  
 ते लहे कोडि कव्याण ॥ म० ॥ १४ ॥ इति गहूंली ॥ ४९ ॥

॥ अथ गहूंली पञ्चासमी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ बेनी राजगृही उद्यान के, वीर प्रभु आविया रे लोल  
 के ॥ बेनी समवसरण मंमाण, रचे सुरवर तिहां रे  
 लोल ॥ बेनी चार निकायना देव, मली तिहां आ  
 विया रे लोल ॥ बेनी परखदा बेठी बार, सुणे प्रभु  
 देशना रे लोल ॥ १ ॥ बेनी सोहम गणधर मुनि  
 राय के, नर नारी मली रे लोल ॥ बेनी चौद सहस  
 परिवार के, आवी परवस्था रे लोल ॥ बेनी श्रेणिक  
 राय प्रमुख, वंदन मन जावियां रे लोल ॥ बेनी  
 राणी चेलणा नार, जरि थाल वधावीया रे लोल ॥ २ ॥  
 बेनी गुरुमुख जोती सार के, मनमां गह गहे रे

लोल ॥ बेनी सहियरो मली मंगल गाय के, वाजे  
 डुंडुनि रे लोल ॥ बेनी समकित धरती सार के, प्रभु  
 गुण आलवे रे लोल के ॥ बेनी सूत्र सुणे मनजाव  
 के, अरथने धारती रे लोल के ॥ ३ ॥ बेनी प्रभुवंदन  
 सुपसाक के, चिहुं गति चूरती रे लोल ॥ बेनी सोह  
 म गणधर पाट, परंपर शोजती रे लोल ॥ बेनी चं  
 डोदयरत्न गणधार के, लवणपुर राजता रे लोल के ॥  
 बेनी चउविध संघ सुपसाय . के, मांहे गाजता रे  
 लोल के ॥ ४ ॥ बेनी धर्मोपदेश सुणाय, मिथ्यात्वनें  
 वारता रे लोल ॥ बेनी शांतिचरित्र कहेवाय के,  
 नविने तारता रे लोल ॥ बेनी गहूंली करती जोय के,  
 ललि ललि लूठणां रे लोल ॥ बेनी सामायिक पोसह  
 समुदाय, करे वली पूठणां रे लोल के ॥ ५ ॥ बेनी  
 स्थानक तप आराधे, मन अति जावशुं रे लोल ॥  
 बेनी वली रोहणी तप अति जाव के, पाले प्रेमशुं  
 रे लोल के ॥ बेनी समेतशिखर गिरि जेटण, अल  
 जो ठे घणुं रे लोल के ॥ बेनी पुण्य पसायें तेह, मनो  
 रथ सवि फळ्या रे लोल के ॥ ६ ॥ बेनी संवत उगणीशें  
 वीशमां, कारज साधीयां रे लोल के ॥ बेनी चैत्र  
 शुदि तेरशने, जोमे वांदीया रे लोल के ॥ बेनी कहे क

वियण कर जोड, करी एक वीनति रें लोल के ॥ बेनी  
 चंडोदयरत्नसूरिंदने, तित्य नित्य वंदती रे लोल ॥ ७ ॥  
 ॥ अथ गहूंली एकावनमी ॥ गरबानी देशीमां ॥  
 ॥ बेनी गुरु गह्वपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे  
 ॥ लो० ॥ बेनी मुनि मंमल महाराज के, मनघर आ  
 णीयें रे ॥ लो० ॥ १ ॥ बेनी शासनना सुलतान, व  
 जीर श्री वीरना रे ॥ लो० ॥ बेनी लब्धिवंत निधान,  
 के श्रीगुण हीरना रे ॥ लो० ॥ २ ॥ बेनी मगधदेश  
 मजार के, गोवरगाम ठे रे ॥ लो० ॥ बेनी वसुचूति  
 पृथिवी नार के, माता नाम ठे रे ॥ लो० ॥ ३ ॥ बे  
 नी सोवन वान समान, शरीर सकोमलां रे ॥ लो० ॥  
 बेनी लोचन युगल प्रधान के, कर क्रम कोमला रे  
 ॥ लो० ॥ ४ ॥ बेनी ज्ञान रयण जंमार, सिद्धांतना  
 सागरु रे ॥ लो० ॥ बेनी माहाव्रत जस मनोहार,  
 महिमा गुणआगरु रे ॥ लो० ॥ ५ ॥ बेनी नहीं  
 प्रतिबंध विहार, नहीं ईहा कशी रे ॥ लो० ॥ बेनी  
 सकल जंतुहितकार, दया जस मन वसी रे ॥ लो०  
 ॥ ६ ॥ बेनी नयरी चंपा उपवन्न के, पूज्य पधारीया  
 रे ॥ लो० ॥ बेनी श्रेणिकसुत धनधन्य के, वंदन  
 पधारिया रे ॥ लो० ॥ ७ ॥ बेनी देशना दीये गुरु

( ६३ )

राय, नविक प्रतिबोधता रे ॥ लो० ॥ बेनी प्रह  
उठी प्रणमुं पाय, समिति पंच शोधता रे ॥ लो० ॥  
॥ ७ ॥ बेनी कोणिक नूपति नार के, गहूंली लावती  
रे ॥ लो० ॥ बेनी स्वस्तिक पूरति खास के, मोतीयें घ  
धावती रे ॥ लो० ॥ ८ ॥ बेनी कामिनी कोकिलवाणि  
के, गुरुगुण गावती रे ॥ लो० ॥ बेनी सौभाग्य लक्ष्मी  
सुखखाण के, सदा सुख पावती रे ॥ लो० ॥ बेनी गुरु  
गणपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे ॥ लो० ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली बावनमी ॥

॥ गरबानी देशी बेनी अपापा नयरी उद्यान के, वाजां वा  
गियां रे लोल ॥ बेनी देववाजिंत्र अनेक के, घनाघन गा  
जीयां रे लोल ॥ १ ॥ बेनी इंद्रनूत्यादि अग्यार के, ब्राह्म  
ण दीपता रे लोल ॥ बेनी वेदवादना जाण के, बहु वा  
द जीपता रे लोल ॥ २ ॥ बेनी संशय ठे अति गूढ,  
मिथ्यामति पूरिया रे लोल ॥ बेनी श्रीजिन अमृत  
वाणी के, सुणि सुख पामीया रे लोल ॥ ३ ॥ बेनी  
ठांमी सकल जंजाल के, दुवा व्रत नाविया रे लोल ॥  
बेनी इंद्र सजानो थाल, केवा जश आविया रे लोल  
॥ ४ ॥ बेनी अरिहा ए आचार के, तीरथ स्थापिया  
रे लोल ॥ बेनी लावो गहूंली गेल के, हरखें वधा

विया रे लोल ॥ ५ ॥ बेनी वधावो श्री जिनराज,  
 करो नित्य नामणां रे लोल ॥ बेनी गाउ मंगल गी  
 त के, लीजें वारणां रे लोल ॥ ६ ॥ बेनी बांधो तोर  
 ण बार के, सुरतरु मालिका रे लोल ॥ बेनी गाउ  
 मंगलगीत के, मला बहु बालिका रे लोल ॥ ७ ॥ बेनी  
 गौतम केवलज्ञान के, सोहम गह्वधणी रे लोल ॥  
 बेनी आपी जंबूने पाट के, पहोता शिवमणि रे  
 लोल ॥ ८ ॥ बेनी करतां एहनुं ध्यान के, लहीयें  
 जश घणो रे लोल ॥ बेनी विबुध कहे श्रीवीरनें,  
 सहु जय जय जणो रे लोल ॥ ९ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेपनमी ॥

॥ मुनि पंचम गणधर वीरना रे ॥ मुनि वंदीयें ॥ सार्थें  
 पांचज्ञें मुनि गुणधाम रे ॥ गुरु वंदीयें ॥ राजगृही  
 उद्यानमां रे ॥ मु० ॥ गुरु समवसखा गुन ठाम रे  
 ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत पालता रे ॥ मु० ॥  
 दशविध संयतिनो धर्म रे ॥ गु० ॥ संयम सत्तर प्रका  
 रथी रे ॥ मु० ॥ लही पाले तेहनो मर्म रे ॥ गु० ॥  
 ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय जलो रे ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य  
 नववाडें युत्तर रे ॥ गु० ॥ रत्नत्रयि आराधता रे ॥ मु० ॥  
 बार जेदे तपमां रत्त रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया

लोचने रे ॥ मु० ॥ जींपता करे उग्र विहार रे ॥ गु० ॥  
 चरणसित्तरी पालता रे ॥ मु० ॥ तिम करणसित्तरी  
 सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ वंदनहेतें आविया रे ॥ मु० ॥  
 राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेलणा लावे  
 गहूंअली रे ॥ मु० ॥ घाट शील पहेरी मनोहार रे  
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ आनूपण सत्यवचननां रे ॥ मु० ॥ करे  
 स्वस्तिक विनय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा अर्कत था  
 पती रे ॥ मु० ॥ करे लूठणां सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥  
 ॥ ६ ॥ देशना सांजले हर्षशुं रे ॥ मु० ॥ कहे धन धन  
 तुम गुरुज्ञान रे ॥ गु० ॥ उत्तम गुरुपद पद्मनी रे ॥ मु० ॥  
 सेवा करतां लहे शिवठाण रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ५३ ॥

॥ अथ गुरु आगल गहूंली चोपनमी ॥  
 ॥ तमें पीतांबर पेखां जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥  
 ॥ चेलणा लावे गहूंली ॥ गुरु ए रूडा ॥ श्रेणिक नृप  
 धरनार ॥ सजनी ए रूडा ॥ सोहम स्वामी समोस  
 खा ॥ गु० ॥ प्रभु पंचम गणधार ॥ स० ॥ १ ॥ ठ  
 त्रीश ठत्रीशी गुणें ॥ गु० ॥ शोजित पुण्य पवित्र  
 ॥ स० ॥ आगमवयण सुधारसें ॥ गु० ॥ वरशी ठारे  
 चित्त ॥ स० ॥ २ ॥ पडिरूवादिक चौद ठे ॥ गु० ॥  
 खांत्यादिक दश धर्म ॥ स० ॥ बारह जावना जाविया



॥ गु० ॥ एह ठत्रीशी मर्म ॥ स० ॥ ३ ॥ दंसण नाण  
 चरण तणा ॥ गु० ॥ तपआचारें युक्त ॥ स० ॥ क्रोधा  
 दिक चिहुं परिहरे ॥ गु० ॥ पंचेंद्रिय त्याग प्रयुक्त  
 ॥ स० ॥ ४ ॥ नवविध तत्त्वनी देशना ॥ गु० ॥ नव  
 कल्पी उग्र विहार ॥ स० ॥ नव नीयाणां परहस्यां ॥  
 गु० ॥ नव वाडें व्रत धार ॥ स० ॥ ५ ॥ आतम बा  
 जोठ उपरें ॥ गु० ॥ समकेत साधियो पूर ॥ स० ॥  
 मूल उत्तरगुण गहूंअली ॥ गु० ॥ उपशम अकृत  
 नूर ॥ स० ॥ ६ ॥ कोकिल कंठें कामिनी ॥ गु० ॥  
 सोहव गावे गीत ॥ स० ॥ माणक मोती लूढणां  
 ॥ गु० ॥ श्री जिनशासन रीत ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५४

॥ अथ समवसरणनी गहूंली पञ्चावनमी ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल सजनी रे महारी, समवसरणनी शोजा  
 सारी ॥ प्रथम गढ रूपानो राजे, सोवन कोसीसां तस  
 ठाजे ॥ सांजल ० ॥ १ ॥ बीजो कंचननो गढ निरखो,  
 रत्न कोसीसां जोइ जोइ हरखो ॥ त्रीजो रत्न तणो ग  
 ढ सोहे, मणि कोसीसैं मनडुं मोहे ॥ सां० ॥ २ ॥  
 जुगतें सुरवर रे जडीयां, वीश हजार जेहनां पावडी  
 यां ॥ मध्यें रत्न पीठ मनोहार, जडित सिंहासन

सोहे अपार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तखतें राजे श्रीवर्द्धमा  
 न, जाणे अजिनव उदयो जाण ॥ देव छुंछुजि नादें  
 गाजे, वाजित्र कोडि गमे तिहां वाजे ॥ सां० ॥ ४ ॥  
 सुगंध पाणी परिमल पूर, वरसे पंच वरणनां फूल ॥  
 जाणे वसंत ऋतु बहु फूली, चमरा कुसुम कुसुम  
 रह्या फूली ॥ सां० ॥ ५ ॥ थै थै नाचे सुरवधू बाजा,  
 गावे गीत सुकंठ रसाला ॥ चिहुं दिशि चामर रे ढल  
 के, मणिमुक्ताफल तोरण ऊजके ॥ सां० ॥ ६ ॥ शिर  
 पर ठत्र अनोपम सार, पुठें नामंमल तेज अपार ॥  
 बेठी पर्षदा रे बार, वाणी वरसे जिम जलधार ॥  
 सां० ॥ ७ ॥ राजा श्रेणिकनी राणी, नामें चेलणा  
 गुणनी खाणी ॥ कुमकुम चंदन रे घोली, करती ग  
 ढूंली नामिनि जोली ॥ सां० ॥ ८ ॥ ललि ललि नम  
 ती रे नावें, मुक्ताफलशुं वीरने वधावे ॥ हसि हसि  
 जिनमुख रे जोती, जाणे नवडुःखडांने खोती ॥ सां०  
 ॥ ९ ॥ एणी परेंजे कोइ गढूंली करशे, पुण्य पनोती  
 नवजल तरशे ॥ कीर्त्ति गुरुनी रे गावो, माणक शिव  
 सुख वेगें पावो ॥ सां० ॥ १० ॥ इति ॥ ५५ ॥

॥ अथ गढूंली ठप्पनमी ॥

॥ वर अतिशय कंचन वाने, राजगृही नयरी उद्या

ने हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ आवीया गुरु गौतम  
 स्वामी, सुर असुर नमे शिर नामी हो ॥ धन० ॥ १ ॥  
 ज्ञानादिक गुण मणि जरीया, उपशम रस केरा दरी  
 या हो ॥ धन० ॥ मुनि पंचसया परिवारें, जे आप त  
 ह्या पर तारे हो ॥ धन० ॥ २ ॥ आव्या जाणी चउ  
 नाणी, श्रेणिक नरपति पटराणी हो ॥ धन० ॥ चे  
 लणा नामें गुण पेटी, चेटक माहाराजनी बेटी हो  
 ॥ धन० ॥ ३ ॥ आवे गणधर वांदवा, शुद्ध समके  
 त लाज लहेवा हो ॥ धन० ॥ करे स्तुति नित्य कर  
 जोडी, दुर्दम मद आवने मोडी हो ॥ धन० ॥ ४ ॥  
 करे कुंकुम स्वस्तिक मोती, वधावे पुण्य पनोती हो  
 ॥ धन० ॥ करे लूढणां गुरुमुख निरखी, हैयडामांहे  
 घणुं हरखा हो ॥ धन० ॥ ५ ॥ निसुणी सजुरुनी  
 वाणी, मीठी जे अमिय समाणी हो ॥ धन० ॥  
 करे निर्मल समकित करणी, घरे पढोती समकित  
 घरणी हो ॥ धन० ॥ ६ ॥ एम शासन सोह वधा  
 रो, करो जवियण सफल जमारो हो ॥ धन० ॥  
 ध्यावो अविनाशी धाम, उलसे निज आतम राम  
 हो ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५६ ॥

( ६९ )

॥ अथ गहूंली सत्तावनमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥  
॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नार्ये  
सोहम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद  
कषाय, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, नि  
जपरिणति नजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान, करे गुण  
देशना ॥ उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सु  
एवा जिनवर वाण, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारी  
ना थोक के, हर्ष मनैं बहु ॥ २ ॥ वसन आनूषण  
व्रत, तणा अंगें धरे ॥ कोणिक नूपति नार, हवे गहूं  
ली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरना, सार्यें आवती ॥  
आत्म असंख्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धाकुंकु  
म घोली, स्वस्तिक करे जावथी ॥ आतम पीठनी उपर,  
जिनगुण गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, इम गहूं  
ली करे, अनुजवनां करि लूठणां, आणा तिलक धरे  
॥ ४ ॥ इव्यजावथी एणी परें, जे गहूंली करे ॥ सम  
कितवंती श्राविका, जव सायर तरे ॥ मणि उद्योत  
गुरुराजना, गुण सखी मन धरो ॥ पामी मनुज अव  
तार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ ५७ ॥

॥ अथ गहूंली अछावनमी ॥

॥ चरणकरणगुणआगरुरे ॥ गणधर ॥ गिरूआ गौतम  
स्वाम ॥ सुहावो गहूंअली रे ॥ सुरगुरु सुरतरु सुरमणि  
रे ॥ गणधर ॥ प्रगटे जेहने नाम ॥ सु० ॥ १ ॥ नयरी  
विशाला उद्यानमां रे ॥ गणधर ॥ वर्द्धमान वड  
शिष्य ॥ सु० ॥ चौद सहस्र अणगारमां रे ॥ ग० ॥  
तिलक समान जगीश ॥ सु० ॥ २ ॥ सुररचित कज  
उपरें रे ॥ ग० ॥ बेसी वरसे वयण ॥ सु० ॥ कन  
काचल चूला चढ्यो रे ॥ ग० ॥ पुष्कर जलधर अय  
न ॥ सु० ॥ ३ ॥ राणी चेलणा रायनी रे ॥ ग० ॥  
फाल जबूके कान ॥ सु० ॥ स्वामी वीरजिणंदनी रे ॥  
ग० ॥ चतुरा चंपकवान ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुंकुमरणक  
चोलडी रें ॥ ग० ॥ रजत रकेबी हाथ ॥ सु० ॥  
मुक्ताफलनो साथीयो रे ॥ ग० ॥ सात पांच सखी  
साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ पंचाचार उवारणो रे ॥ ग० ॥ वारू  
पंच रतन ॥ सु० ॥ जिनशासन मुनि दीपतो रे  
॥ ग० ॥ कीजें कोडी जतन ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली उंगणशाठमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥  
॥ राजगृही रलीयामणी, जिहां गुणशीलचैत्य सुग

म ॥ साथण मोरी हे ॥ सहीयर मोरी हे ॥ बेहेन  
 ड मोरी हे ॥ आवो सवाइ गुरु नेटवा, कांइ मेटवा  
 कर्म कठोर ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ मुनि  
 गणतारा चंद ज्युं, आव्या गणधर गौतम स्वाम ॥ सा०  
 स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ १ ॥ जेह पंचेंद्रिय वश करे,  
 वली पाले पंचा चार ॥ सा० ॥ जेह पंच समिति गुप्ति  
 धोरी परें, वहे पंच महाव्रत नार ॥ सा० ॥ स० ॥  
 बे० ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाडें ब्रह्म धरे सदा, वली  
 परिहरे चार कषाय ॥ सा० ॥ जे लब्धि अछावीशनो  
 धणी, जयो आठ प्रानाविक राय ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥  
 अ० ॥ ३ ॥ पहेरण पीत पटोलडी, उपर उठण नव  
 रंग घाट ॥ सा० ॥ कुंकुम रोल सुसाथीयो, करे अकृत  
 पूरी सुघाट ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वली ललि  
 ललिकीजें लूबणां, लेइ रजत कनकनां फूल ॥ सा० ॥  
 करो जिन शासन प्रजावना, वजडावो मंगल तूर  
 ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ए ॥

॥ अथ गहूंली शाठमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ वाला राजगृही उद्यान के, वीर समोसखा रे  
 लोल के ॥ वाला मलिया चोशठ इंद के, बहु परि  
 वारछुं रे लोल के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला वधामणी

माहाराजनी, श्रेणिक सांजली रे लोल के ॥ वाला  
 श्रेणिक पुर जन लोक के, सौ मली एकठां रे लोल  
 के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला वंदी बेगो नूप के, प्रचुजी  
 आगलें रे लोल ॥ वाला चेजणा घूंघट ताणी के,  
 उठी मन गहगही रे लोल के ॥ वा० ॥ ३ ॥ वा  
 ला स्वस्तिक पूरी पास, बधावे मन रुली रे लोल के ॥  
 वाला लूढणां करे वार वार, सोहागण सहु मली रे लो  
 ल के ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला सजी शोले शणगार के,  
 मली घणी बालिका रे लोल के ॥ वाला एणी परें  
 जे जिन आगल, करे नित गहूंअली रे लोल ॥  
 वा० ॥ ५ ॥ वाला जाय सकल जंजाल के, नवोद  
 धि दुःख हरे रे लोल के ॥ वाला कहे गौतम निर  
 धार के, चित्त चोखे करी रे लोल के ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ पर्यूपणने विषे कल्पसूत्र पधरा ॥

॥ ववानी गहूंली एकशठमी ॥

॥ जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे  
 गुरुराज ॥ जीरे सुगुण सनेही सांजलो, जीरे पर्व  
 पर्यूपण आज ॥ जीरे ललित० ॥ १ ॥ जीरे आश्र  
 वनाव निवारीने, जीरे स्वजन सहित बहु मान ॥  
 जीरे कल्पसूत्र घर लावीयें, जीरे अछाश्धर धरी

ध्यान ॥ जीरे ललित० ॥ १ ॥ जीरे दीपक अग्र  
 उखेवियें, जीरे रात्रि जागरण नित्य ॥ जीरे पूजा वि  
 विध रचावीयें, जीरे त्रण दिवस इणि रीत ॥ जीरे  
 ललित० ॥ २ ॥ जीरे सुण सजनी रजनी गइ, जीरे  
 कटप धुरा परजात ॥ जीरे सहियर मली मंगल नणे,  
 जीरे हय गय रथ मेलात ॥ जीरे ललित० ॥ ४ ॥  
 जीरे वरघोडे जली जातगुं, जीरे शुचि तनु पुस्तक  
 हाथ ॥ जीरे इम मंमाणें आवीय, जीरे जिहां श्रुत  
 निधि गुरुनाथ ॥ जीरे ललित० ॥ ५ ॥ जीरे गुरुस  
 न्मुख लही वांचना, जीरे प्रमुदित पर्षदामांह ॥  
 जीरे इणि अवसर गजगति सती, जीरे मुनिपद नम  
 त उत्साह ॥ जीरे ललित० ॥ ६ ॥ जीरे समकितवंती  
 श्राविका, जीरे सहियर मली समदिष्ठ ॥ जीरे अनु  
 जव उज्ज्वल मोतीयें, जीरे स्वस्तिक लक्षण पीठ ॥  
 जीरे ललित० ॥ ७ ॥ जीरे स्वस्तिक पूरी वधावती,  
 जीरे बेसती बेसण्ठाथ ॥ जीरे पंच कव्याणक देशना,  
 जीरे नव व्याख्यान सुणाय ॥ जीरे ललित० ॥ ८ ॥  
 जीरे ठठ अठम तप जिन नमी, जीरे सांजलशे नर  
 नारी ॥ जीरे श्री गुजवीरने शासने, जीरे करशे एक  
 अवतार ॥ जीरे ललित० ॥ ९ ॥ इति ॥ ६१ ॥



॥ अथ गहूंली बाशछमी ॥

॥ हाररो हीरो माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥  
 ॥ जगगुरु जगचिंतामणि ॥ सहियर मोरी ॥ जगबंधव  
 जगत्रात हो ॥ द्वारिकां नगरी समोसखा ॥ सहि० ॥  
 बावीशमा जगतात हो ॥ उलट आणी एतो, लाज  
 ने जाणी एतो, पुण्यनी खाणी, शुद्ध श्राविका ॥ ज  
 वि तमे गहूंली करो मनरंग हो ॥ १ ॥ हरि वांदी  
 नमी करी ॥ सहि० ॥ बेठा बे कर जोडी हो ॥ अमृ  
 तसम जिनदेशना ॥ सहि० ॥ सांजले मनने खोडी  
 हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥  
 ॥ २ ॥ श्याम शरीरें शोभता ॥ सहि० ॥ तेज तणो  
 नहिं पार हो ॥ जबक बनी जिनराजनी ॥ सहि० ॥  
 विश्व मानस हितकार हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥  
 ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ३ ॥ धन्य धन्य राणी  
 रुक्मिणी ॥ सहि० ॥ व्रत नूषण अंग हो ॥  
 तप सुघाट घूंटी समो ॥ सहि० ॥ चूनडी सु  
 शील सुचंग हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥  
 शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ४ ॥ क्रिया कुंकावटी. कर ग्रही  
 ॥ सहि० ॥ जिनगुण कुमकुम घोल हो ॥ मननिर्म  
 ल जल जेलती ॥ सहि० ॥ चित्त उल्लसी मनरंग

रोल हो ॥ उल० ॥ लान० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥  
 नवि० ॥ ५ ॥ समकित बाजोठ उपरें ॥ सहि० ॥  
 श्रद्धा स्वस्तिक जोर हो ॥ रुचि मुक्ताफल पूरती ॥  
 सहि० ॥ चूरती कर्म कठोर हो ॥ उल० ॥ लान०  
 ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ६ ॥ नाण चिंताम  
 णि स्थापती ॥ सहि० ॥ अनुजव कुसुम सुरंज हो ॥  
 विनयें करी वधावती ॥ सहि० ॥ लजती जेम सुरं  
 ज हो ॥ उल० ॥ लान० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥  
 नवि० ॥ ७ ॥ सम्यग्दृष्टि निरखती ॥ सहि० ॥ ह  
 रखती हृदय मजार हो ॥ कृण कृणमां जिनराज  
 ने ॥ सहि० ॥ तृप्ति न पामे लगार हो ॥ उल० ॥  
 लान० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ८ ॥ इव्य  
 जावें करी गहूंअली ॥ सहि० ॥ रुक्मिणी राणी एम  
 हो ॥ तेम करो तमें श्राविका ॥ सहि० ॥ कीर्त्ति  
 पामो जेम हो ॥ उल० ॥ लान० ॥ पुण्य० ॥  
 ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ९ ॥ इति ॥ ६१ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेशष्ठी ॥

हारनो हीरो माहारो ॥ ए देशी ॥ अथवा साचनो ॥  
 शूरो नृप चंदजी, राजिंद माहारा जाग्यतणे बलिहारी  
 हो ॥ ए देशी ॥ चउनाणी चोखे चित्तें, सहियर मो

री ॥ श्री सोहम गणधार हो ॥ आप स्वनावमां खे  
 लता, सहियर मोरी ॥ धरता ध्यान उदार हो ॥ सह  
 ज सोनगी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, गुनमति जागी  
 गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उद्गास हो  
 ॥ १ ॥ बारे नावना नावतां, सहियर मोरी ॥ अनि  
 त्यादिक गुणगेह हो ॥ माहाव्रत पामीने वली ॥ स  
 हि० ॥ नावे पणवीश तेह हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥  
 गुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ २ ॥ संज्ञादिक योगें  
 करी ॥ सहि० ॥ सहस अठार जे आय हो ॥ तेह  
 ने शील कहीजियें ॥ सहि० ॥ ते पाले निर्माय हो  
 ॥ सह० ॥ शिव० ॥ ॥ गुन० ॥ सहि० ॥ चालो०  
 ॥ ३ ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे ॥ सहि० ॥ चरण  
 करण गुण धाम हो ॥ पडिलेहण आवश्यकादिकें ॥  
 सहि० ॥ अहोनिश रहे सावधान हो ॥ सह० ॥ शिव०  
 ॥ गुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ सदाचार एम  
 पालतां ॥ सहि० ॥ वर्त्ते आत्मनाव हो ॥ नयरी राज  
 गृही आविया ॥ सहि० ॥ नवोदधि तारण नाव हो  
 ॥ सह० ॥ शिव० ॥ गुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥  
 ॥ ५ ॥ उदंत सुणीने आवियो ॥ सहि० ॥ वंदन श्रे  
 णिकराय हो ॥ सार्थे राणी चेजणा ॥ सहि० ॥ गहूं

ली करे गुण गाय हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ गुन० ॥  
 ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ६ ॥ मनमोहन गुरु तिहां  
 कणो ॥ सहि० ॥ देई देशना हितकार हो ॥ जाव  
 धरीने जे सुणो ॥ सहि० ॥ ते लहे सुख श्रीकार  
 हो ॥ सहज सोजागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, गुन  
 मति जागी गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष  
 उच्चास हो ॥ ७ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ अथ गहूंली चोशठमी ॥

॥ जगजीवन जमुना रे, जल जरवा द्यो ॥ ए देशी ॥  
 ॥ आतमरुचि गुणधारणी रे, मनोहारणी ॥ करे ग  
 हूंअली तजी खेद रे ॥ सुखकारणी ॥ नाम स्थापना  
 इव्यथी रे ॥ मनोहारणी ॥ जावे मंगल चिहुंजेद रे ॥  
 सुख० ॥ १ ॥ जीव अजीव ने मिश्रथी रे ॥ म० ॥  
 एतो नाम मंगल त्रिहु नाम रे ॥ सु० ॥ आपे मंग  
 ल ए सही रे ॥ म० ॥ कीजें नित नित गुन काम रें  
 ॥ सु० ॥ २ ॥ आगम नोआगमथकी रे ॥ म० ॥ ए  
 तो इव्यमां होय विचार रे ॥ सु० ॥ जावमांहे दोय ए  
 वली रे ॥ म० ॥ तेह नोआगम अधिकार रे ॥ सु० ॥  
 ॥ ३ ॥ नंदी दाखी सूत्रमां रे ॥ म० ॥ सही जाव  
 मंगल होय तेह रे ॥ सु० ॥ पंच नाण निर्विघ्नतां

रे ॥ म० ॥ ए तो तेहनुं कारण तेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 अंग कहाँ ए जावनां रे ॥ म० ॥ एतो सहहियें गु  
 नचित्त रे ॥ सु० ॥ इव्य मंगल मेली करो रे ॥ म० ॥  
 एतो गहूंअली जिनमत रीत रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ टाळे  
 जन्म मरणयकी रे ॥ म० ॥ कह्यो मंगल शब्द नि  
 रुत रे ॥ सु० ॥ अध्यवसाय ए आदरी रे ॥ म० ॥  
 नवि कीजें जन्म पवित्त रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ योग जेह  
 जिनशासनै रे ॥ म० ॥ सवि अध्यातम संयुक्त रे ॥  
 सु० ॥ शिवफल दायक ते सही रे ॥ म० ॥ कहे  
 राम सदागमरीत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥ अथ गहूंअली पांशवमी ॥

॥ धवलशेठ लइ जेटणुं ॥ ए देशी ॥ आगम अमृत  
 पीजियें, बहुश्रुतथी गुरु पासैं रे ॥ श्रोता गुण अंगें  
 करी, विनय करी उल्लासैं रे ॥ आ० ॥ १ ॥ शुद्ध  
 नाषक समता धरा, पंचम कालें थोडा रे ॥ दीसे  
 बहु आमंबरी, जेहवा उद्धत घोडा रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 वस्तुधर्मनी देशना, जे दीये हेत राखी रे ॥ कीजें  
 तेहनी सेवना, उपकारी गुण दाखी रे ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 आगमतत्त्व प्रकाशमां, जे नवियण चित्त फूले रे, अ  
 नुनव रस आस्वादथी, शुणीयें जेह रसीले रे ॥ आ०

( ७९ )

॥ ४ ॥ नय निह्नेप प्रमाणथी, साधुनो बंध सुरीतें  
रे ॥ तत्त्वातत्त्व विशेषणा, लहीयें परम प्रतीतें रे  
॥ आ० ॥ ५ ॥ तत्त्वारथ श्रद्धान जे, समकित कहे  
जिनराया रे ॥ जापण रमण पणे लहे, जेद रहित  
मति पाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्वस्तिक पूजन जावना,  
करता नक्ति रसाल रे ॥ पुण्य महोदय पामीयें, केव  
ल क्खि रसाला रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६५ ॥

॥ अथ गहूंली ठाशुमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सजनी शासन नायक दिल धरी, गाछुं तपगह्व  
राया हो ॥ अलबेली हेली ॥ सजनी जाणीयें सोहम  
घणधरु, पटधर जगत गवाया हो ॥ अलबेली हेली ॥  
सजनी वीर पटोधर वंदियें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ स  
जनी वसुधापीठने फरसता, विचरता गणधार हो  
॥ अ० ॥ स० ॥ ठत्रीश गुणछुं बिराजता, ठे नवि  
जनना आधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ २ ॥ स० ॥  
तखतें शोहे गुरुराज जी, उदयो जिम जग जाण हो  
॥ अ० ॥ स० ॥ निरखतां गुरुराजने, बूजे जाण  
अजाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ स० ॥ मु  
खडुं शोहे रे पूरण शशी, अणीयालां गुरुनेण हो

( ७० )

॥ अ० ॥ स० ॥ जलधरनी परें गाजता, करता नवि  
जन सेण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ४ ॥ स० ॥  
अंग उपांगनी देशना, वरसत अमृतधार हो ॥ अ० ॥  
स० ॥ श्रोता सर्वनां दील ठरे, संयमशुं धरे प्यार हो  
॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ५ ॥ स० ॥ शुन शणगार  
सजी करी, मोतीयडे नरी थाल हो ॥ अ० ॥ स० ॥  
श्रद्धा पीठनी उपरें, पूरें गहूंली विशाल हो ॥ अ० ॥  
स० ॥ वी० ॥ ६ ॥ स० ॥ सौनाग्य उदयसूरि पा  
टना, धारक गुरु गुणराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्री  
विजयलक्ष्मी सूरिंद जी, दीपविजय कविराज हो ॥  
॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सडशछमी ॥

॥ रुडीने रढीयाली रे वाहाला तारी वांशली रे ए देशी ॥  
॥ सुकृत तरुनी वेल वधारवा रे, सींचती उपशम  
उदकनी धार, गुरुगुण हृदय धरंती प्यार, मानुं रं  
जानो अवतार ॥ सु० ॥ १ ॥ पुण्य पनोती रे सार्थें  
साहेलीयो रे, मली मली शोल सजी शणगार,  
कर धरी रजत रकेबी सार, कुंकुम घोली करी मनो  
हार ॥ सु० ॥ २ ॥ अकृत सारा रे उज्ज्वलता नखा  
रे, पूरती स्वस्तिक मंगल सार, चूरती चिहुं गति क्रोध

ज चार, ठवती श्रीफल हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ३ ॥  
 अनुजव रंगें रे मोती वधावती रे, ललित परिणामें  
 नमती पाय, गुरुमुख देखी हर्ष न माय, सन्मुख  
 बेसती बेसण ठाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ नोजन पामे रे  
 अमृत नूखमां रे, नागर ग्रीषम पाम्यो गंग, जिन  
 वाणी सुणवानो रंग, अर्थ मनोहर नय गम जंग ॥  
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रीशुनवीरनुं शासन पामीने रे, धरती  
 ह्येडे समकितवास, अनुक्रमें केवलज्ञान प्रकाश,  
 मलती मुक्ति सहेली पास ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ६७ ॥

॥ अथ गहूंली अडशष्ठमी ॥

॥ देशी उपरली गहूंलीनी ॥ गिरिवैजारे रे वीर समोस  
 ह्या रे, चौद सहस मुनिवर संघाय, त्रिगडे बेठा त्रिजु  
 वनराय ॥ १ ॥ रूडीने रढीयाली रे जिनजीनी देशना  
 रे ॥ ए टेक ॥ वरसे जिम पुष्कर जलधार, सांचलवा बे  
 ठी परखदा बार ॥ रूडी० ॥ १ ॥ निजनिज जाषायें सम  
 जे सहू रे ॥ जिम समजावी जीलें नार, योजन जिन  
 वाणी उदार ॥ रूडी० ॥ ३ ॥ नय गम जंग प्रमाण  
 निक्षेपथी रे ॥ जीवादिक नवतत्त्व विचार, उत्पाद व्य  
 य ध्रुवथी धार ॥ रूडी० ॥ ४ ॥ दान शीयल तप जाव जे  
 दें करी रे ॥ चउमुखथी चौ जिनवरवाण, निसुणी पा



( ७१ )

मे पद निर्वाण ॥ रूडी० ॥ ५ ॥ पटराणी श्रेणिकनी  
चेजणा रे ॥ आदरथी उठे धरीने प्यार, लेइ (सहस)  
सहीयो संगें सार ॥ रूडी० ॥ ६ ॥ सोवन जवथी  
स्वस्तिक पूरती रे ॥ वांदी वधावे थइ उजमाल, लूठ  
णडां लटके करे रसाल ॥ रूडी० ॥ ७ ॥ चतुरा उ  
सरती पाठे पगें रे, जोती जिनमुखचंद अमंद, पामे  
मनमां परमानंद ॥ रूडी० ॥ ८ ॥ जिनवचनामृत  
सांजले रंगथी रे ॥ नक्ति पूर्वक चित्त मजार, धरती  
अरथ सरूप विचार ॥ रूडी० ॥ ९ ॥ इति ॥ ६० ॥

॥ अथ गहूंली उगणोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे, गुणशील वनके मेदान ॥ विप्र प  
डिबोह्यो रे, केवलज्ञान प्रधान ॥ अरिहा तीन जगतके  
जाण, समवसरण तखतें महेराण, जलके नामंमल  
गुणखाण, श्रेणिक हरख्यो रे आयो वंदन काज,  
चतुरंगी फोजां रे वांकडीया करी साज, साथें तरुणी  
रे पंचसयाको समाज ॥ वी० ॥ १ ॥ धर्म प्रकाशे  
बारे परखदा मांहे, मजकुर पूठे गोयम उत्साहे,  
चउ अनुयोगें उत्तर सोहाय, श्रेणिक पूठे रे बेशी  
यथोचित ठाय, वाणी निसुणी रे मनमां हर्षित थाय,  
संशय टाले रे आत्मअनंत सुख थाय ॥ वी० ॥ १॥

बत्रीश बद्ध नाटक रची सार, करी नर नारी रूप  
 रसाल, खलके कंकणना खलकार, प्रचुने वंदे रे दड्ड  
 रांक सुर सार, झातासूत्रे रे वरणवियो अधिकार,  
 समकित संगे रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥ वी० ॥ ३॥  
 चेलणा नारी मन हरखाणी, अंगे अनेक शणगार  
 सोहाणी, बहुत साहेलीकी ठकुराणी, कुंकुम घोली  
 रे साथीयो रंग रसाल, रयणें पूरी रे वधावे जरी या  
 ल, नेह धरीने रे गुण गाये उजमाल ॥ वी० ॥ ४ ॥  
 त्रिशला नंदन सूरिजन वंदो, अवसर लइ आ फंद  
 निकंदो, पामे नित्य नवनवा आनंदो, बहु चिरंजीवो  
 रे तीरथपति सुलतान, दिल जरी ध्याउ रे प्रचुगुण  
 नुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मीसूरि गुण ठाण  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तेरमी ॥

॥ प्रचुजी आवाया रे शहेर जरुअचके मेदान, अश्व  
 प्रतिबोध्यो रे जाणे पूरवको सयाण ॥ ए टेक ॥ ऊजके  
 उगमते परजात, जूपति हरख्यो रे साख्यो अर्थीको  
 काज, स्वामीजी वांछा रे बहु फोजां के साज, नक्ति  
 रागें रे जीव पामे शिवराज ॥ प्रचु० ॥ १ ॥ उपदेश  
 आपे त्रिचुवनजाण, सुणे परखदा बारे वाण, मन

मां जाणो कोइ सुजाण. नृप पूढे रे मुनि सुव्रत जि  
नराय, प्रतिबोध्यो रे कोइ जीव एणो ठाय, देवें दीठो  
रे एक तुरंग धर्म ध्याय ॥ प्र० ॥ २ ॥ अणसण  
लेइ प्रभुके पाय, पढोतो सुरलोकें दिल लाय, तीर  
थ थापे मन उमाय, संघ सेवे रे दूरदेशथी आय,  
जावना जावे रे तजी विषय कषाय, दुःसम कालें रे  
ए महिमा गवराय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नाटक नाचे नव  
नव रंग, करे अशुंन करमनो जंग, साचो समकित  
गुणनो रंग, सूत्रें दीसे रे सूरियाज सुरनो अधिकार,  
पूजा कीधी रे सतर चेद सुखकार, शंका टाळे रे न  
विक जीव निरधार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पद्मावतीनो नंदन  
महानाग, दाखे शिवगति पूरीनो माग, जगमांहे क  
हेवाये वीतराग, आढे रायो रे जिनशासन सुलतान,  
माग्या दीजें रे मनवंछित प्रभु दान, वांढा कीजें रे वि  
बुध विमल शुंन ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहूंली एकोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे गुणशीलवनके मेदान ॥ ए देशी ॥  
॥ नवियण वंदो रे चोवीशमो जिनराय, सुगति  
आपे रे टाळे कुगति कुठाय ॥ ए टेक ॥ पावन देशां  
तर करता स्वाम, विचरंता वली गामो गाम, पातक

जाये लीधे नाम, जग पडिबोहे रे ए त्रिहुं लोक  
 नो नाथ, मुनि परिवार रे चउद सहस ठे संघात,  
 सायर ठोडी रे कोण सेवे ठीलर पाथ ॥ नवियण०  
 ॥ १ ॥ राजगृही नयरी उद्यान, गुणशीला चैत्यकै  
 मेदान, आया पुंमरिक् प्रधान, सुर तिहां रचे रे स  
 मवसरण तेणि वार, इंइ इंझाणी रे वंदे प्रभुने  
 अपार, आनंद पावे रे देखी प्रभुनो देदार ॥ नवि० ॥  
 ॥ २ ॥ वननो पालक जेहनुं नाम, दीधी वधामणि  
 जइने ताम, श्रेणिक हरख्यो सुणीने नाम, चलचित्त  
 थियो रे मगधपति माहाराज, परिवार संयुक्त रे  
 सार्थे रमणी समाज, तिहांथी चाव्यो रे प्रभुने वं  
 दन काज ॥ नवि० ॥ ३ ॥ चतुरंगी सेना सजीय उ  
 दार, गज रथ पायक अमुल तुखार, बहु नव उतर  
 वाने पार, श्रेणिक हरखे रे वंदे प्रभुजीना पाय,  
 प्रभुपद वंदी रे बेठो यथोचित ठाय, तव उपदेसे रे  
 वीर जिनेसर राय ॥ नवि० ॥ ४ ॥ चेलणा राणी अति  
 सोजागी, जिन वंदिने नक्ति जागी, गहूंली करवा रढ  
 बहु लागी, कनक चोखा लइ रे हाथे अतिही रसाल.  
 गहूंली पूरे रे, जगपति आगे विशाल, मोतीडे वधावे  
 रे, टाळे पाप प्रजाल ॥ नवि० ॥ ५ ॥ देशना दीधा

( ८६ )

श्रीजगवंत, संशय टाट्या श्री अरिहंत, श्रेणिक वंदी  
पुर पढोचंत, एम बहुनावें रे नित्य नित्य मंगल गाय,  
सुकृत कमावे रे दीपविजय कविराय ॥ जवि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बहोतेरमी ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ केशरचंदन जरीय कुंकावटी, सोवनथालले कामिनी ॥  
गहूंअली करीने मंगल गाई, बलिहारी गुरुनामनी ॥  
॥ गहूंली करे रे गजगामिनी ॥ १ ॥ शोल शणगार  
सजीने सुंदर, जाणे ऊबूके दामिनी ॥ साधु साधवी  
श्रावक श्राविका, जरी रे सजामां जामिनी ॥ गहूंली०  
॥ २ ॥ नवखंढी नवरंगी निरुपम, विधविधरंग ब  
नावनी ॥ मोतीयें साथीया पूरे मनोहर, जक्ति करे  
शुज जावनी ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रवचन रचना जग  
जन पावन, देशना श्रीगुरुरायनी ॥ धवल मंगल गां  
धर्वगुण गानें, सांजले सद्गु सुखदायिनी ॥ ग० ॥ ४ ॥  
उदयतन वाचक उपदेशें, रूढी सजा रसरगनी ॥  
प्रीठे ते परमारथ पामे, वाणी श्रीवीतरागनी ॥ ग० ॥ ५ ॥

॥ अथ गहूंली ब्रहोतेरमी ॥

॥ सजनी मोरी गुणशीलवनके मेदान रे, सजनी मो  
री आख्या श्रीवर्द्धमान रे ॥ स० ॥ ज्ञानादिक गुणदरी

या रे ॥ स० ॥ पतित पावन पीयरीया रे ॥ स० ॥ १ ॥  
॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ श्रेणिक हरख्यो आवे रे  
॥ स० ॥ समकित द्वायिक जावें रे ॥ स० ॥ कंचन  
वरणी नार रे ॥ स० ॥ पंचसया परिवार रे ॥ स०  
॥ २ ॥ स० ॥ धर्मदेशना जिन जांखे रे ॥ स० ॥ न  
वपद महिमा दाखे रे ॥ स० ॥ नवपद आतम जा  
णो रे ॥ स० ॥ आतम नव पद वखाणो रे ॥ स०  
॥ ३ ॥ स० ॥ नवतत्त्व जूषण सार रे ॥ स० ॥ रत्न  
रकेबी उदार रे ॥ स० ॥ श्रवण मनन बहु मूल रे  
॥ स० ॥ पहेरी वस्त्र अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥  
क्रिया कुंकावटी हाथ रे ॥ स० ॥ मन निर्मलने  
पाथ रे ॥ स० ॥ जिनगुण कंकु घोली रे ॥ स० ॥  
मली सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥  
आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेलणा गढूंली  
बनावे रे ॥ स० ॥ एणी परें गढूंली कीजें रे ॥ स० ॥  
॥ नरनव लाहो लीजें रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥  
विषय ते विष सम जाणो रे ॥ स० ॥ बोले त्रण्य  
छुवननो राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुर सासरे चालो रे  
॥ स० ॥ सुजवमांहे माहालो रे ॥ स० ॥ ७ ॥  
॥ स० ॥ मणि उद्योत गुरु मलीया रे ॥ स० ॥ आज

मनोरथ फलिया रे ॥ स० ॥ छुं कहीयें वारो वार  
रे ॥ स० ॥ ते कां करो परिहार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रनी गहूंली चम्मोतेरमी ॥

हांरे महारे ठाम धर्मना साडा पञ्चवीश देश जो ॥ ए  
देशी ॥ ॥ हांरे माहारे जिनआणा लेइ इंदूति गण  
धार जो, विचरे रे चउविह अप्रतिबंध विहारथी रे  
लो ॥ हांरे महारे संयम धारी मुनिगणना शिरदार  
जो, चउझानी गुजध्यानी धर्मना सारथी रे लो ॥  
॥ १ ॥ हांरे महारे राजगृही उद्यानें आव्या नाथ  
जो, हरख्यो रे मगधाधिप त्रिकरण जावछुं रे लो ॥  
हांरे मारे आवे नृप चेलणादिक राणी साथ जो,  
अंग नमावी वंदे गणधर पावने रे लो ॥ २ ॥  
हांरे महारे जवनिस्तरणी जिनवाणी उपदेश जो,  
जांखे रे प्रभु गोयमस्वामी रंगथी रे लो ॥ हांरे  
मारे सेवो जविजन सिद्धचक्र गुज लेश जो, बहुसु  
ख पाम्यां मयणा तेहना संगथी रे लो ॥ ३ ॥  
हांरे मारे अवसर पामी मगधाधिपनी नार जो, उ  
छसी रे मन हर्षी स्वस्तिक पूरवा रे लो ॥ हांरे मारे स  
हियर मंगल गाती गीत अपार जो, मानुं जव जव  
संकटने ए चूरवा रे लो ॥ ४ ॥ हांरे मारे इणी

( ८९ )

विध स्वस्तिक पूरे श्रद्धा पीठ जो, पामे रे ते मंगल  
माला माननी रे लो ॥ हारे मारे शिवपद कारण  
जावें जोग उक्किष्ठ जो, दीप कहे एम एठे वात नि  
दाननी रे लो ॥ ५ ॥ इति ॥ ७४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचोत्तरमी ॥

धोलनी देशीमां ॥ राजगृही उद्यानमां, श्रीसोहम ग  
णधार ॥ समोसरिया परिवारचुं, मुनिजनना आधा  
र ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा ॥ ए आंकणी ॥  
पंच महाव्रत पालता, दशविध यतिधर्म सार ॥ सत्त  
र जेदें संयम वखा, वैग्यावच्च दश धार ॥ चा० ॥ २ ॥  
गुप्ति धरे नववाडचुं, ज्ञानादिक तप बार ॥ निग्रह  
क्रोध तणो करे, चरणसित्तरि शणगार ॥ चा० ॥ ३ ॥  
पिंमविशुद्धि समिति धरे, जावना पडिमा बार ॥ ४  
डियरोधक पडिलेहणा, गुप्ति अग्निग्रहधार ॥ चा०  
॥ ४ ॥ करणसित्तरी ए पालवे, टाले सकल कलेश ॥  
कमलासने बेसी कहे, जविजनने उपदेश ॥ चा०  
॥ ५ ॥ श्रेणिक नृपति मानचुं, प्रणमी पट्टोधर राय ॥  
उचित अग्रह ते साचवे, धर्म सुणो सुखदाय ॥ चा०  
॥ ६ ॥ गुणवंती करे गहूंअली, चतुरा चेजणानार ॥  
माणक मोती वधावती, जरती सुकृत जंमार ॥ चा०



( ९० )

॥७॥ कोकिल कंठें कामिनी, सोहासणी निर्मल वृंद ॥  
गुरुगुण अमृत गावती, पामति परमानंद ॥ चा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीजंबुगुरुनी गहूंली ठहोंतेरमी ॥

॥ अजब कियो रे मुनिराय, लघुवयें जोग लियो रे ॥  
शोल वरस संयम लियो रे, तरुणी आव विठोड ॥ मु  
निवर योग लियो रे ॥ कोडि नवाणुं सोवन तणी रे,  
ढोडी मनने कोड ॥ मु० ॥ १ ॥ तप द्वादश जेदें करे  
रे, जावता जावना बार ॥ मु० ॥ पडिमा बारना उद्यमी  
रे, गुण ठत्रीशना आधार ॥ मु० ॥ ११ ॥ पडिरूवादिक  
चउदे जला रे, निमित्त अठंग सुठाय ॥ मु० ॥ निपुण ते  
गुणठाणंग तणा रे, गुणसागर गुरुराय ॥ मु० ॥ ३ ॥  
मुनि मंमलशुं परवह्या रे, जंबू जुग प्रधान ॥ मु० ॥  
विचरंता पाउधारिया रे, राजगृही उद्यान ॥ मु० ॥  
॥ ४ ॥ कोणिक नरपति वांदवा रे, साथें लइ परिवा  
र ॥ मु० ॥ पद्मावती करे गहूंअली रे, इव्य प्रधान  
विचार ॥ मु० ॥ ५ ॥ चउ गति चूरण साथियो  
रे, श्रद्धा पीठ बनाय ॥ मु० ॥ वसन आनूपण व्रत  
तणां रे, शिवफल श्रीफल ठाय ॥ मु० ॥ ६ ॥  
उत्तम गुरु गुणनक्तिथी रे, वधावे गुरुराज ॥ मु० ॥  
गुरुमुखपद्मनी देशनारे, सुणि पामे शिवराज ॥ मु० ॥

( ९१ )

॥ अथ गहूंली सत्त्योतेरमी ॥

॥ वाले महारे मारगडो रुंध्यो रे रतिणा हाथ, तेनी  
मुने जापटु लागी रे ॥ ए देशी ॥

॥ जग उपकारी रे वीरजिणंद, मगधें विचरता आवे  
रे ॥ साथें सुर नरना लइ वृंद, गिरिवैजारें सुहावे रे  
॥ १ ॥ गोयम सोहम जास वजीर, मुनिगण सुपद  
सेवता रे ॥ अजिग्रह धारी रे केइ मुनि धीर, रविशुं  
दृष्टि लगावता रे ॥ २ ॥ आवे लुवनाधिपना वीश,  
बत्रीश व्यंतरना राजा रे ॥ मलिया वैमानिकना ईश,  
दश शशी रवि तेजें ताजा रे ॥ ३ ॥ इणि परें चारे  
जातना देव, कोडाकोडि मली घणा रे ॥ करता सम  
वसरण ततखेव, निज निज कृत्यनी नहिं मणा रे  
॥ ४ ॥ त्रिगडे बेसी त्रिचुवन तात, धर्म कहे करुणा  
आणी रे ॥ जेहवी सत्तागतनिज जात, आत्मतत्त्व  
जहे प्राणी रे ॥ ५ ॥ नरपति श्रेणिकनी घरनार,  
चंडमुखी चेलणा राणी रे ॥ करती स्वस्तिक मंगल  
सार, निज गुरु आगल गुण खाणी रे ॥ ६ ॥ प्रचुने  
माणक ममेती वधाव, विच विच पद प्रणमे तिहां  
रे ॥ अंतर आतमजाव जगावे, पुण्यजंमार नरे  
जिहां रे ॥ ७ ॥ सोहव गावे रे मधुरां गीत, गहूंली

( ९१ )

जाव उमंगशुं रे ॥ साची वाणी करी ए रीत, अमृत  
वाणी रंगशुं रे ॥ ८ ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ गहूंली अष्टोत्तेरमी ॥

॥ आवी हुं देवा उलंनडो सासुजी ॥ ए देशी ॥

॥ सजुरु पद पंकज नमी, सामणीजी ॥ गाशुं गुरु  
गुणमाल रे ॥ सजुरु विचरंता वंदीयें ॥ सामणी

जी ॥ १ ॥ द्वादश अंग सिद्धांतना ॥ सा० ॥ पारग  
धारक एह रे ॥ स० ॥ गुरु गुण ठत्रीजें अलंकखा

॥ सा० ॥ चरणकरण जंमार रे ॥ स० ॥ सा० ॥  
॥ २ ॥ नव्य जीवने प्रतिबोधता ॥ सा० ॥ रत्न त्र

यादि गुणधाम रे ॥ स० ॥ गहूंअली करो गुरु आ  
गलें ॥ सा० ॥ हर्ष धरी मन चंग रे ॥ स० ॥ सा० ॥

॥ ३ ॥ समकेत कुंकुम तिण समे ॥ सा० ॥ समता  
निर्मल नीर रे ॥ स० ॥ थाल नखो शुन जावनो

॥ सा० ॥ चोखा अखंम परिणाम रे ॥ स० ॥ सा०  
॥ ४ ॥ मंगल साथीयो तिहां वन्यो ॥ सा० ॥ रत्न

त्रयादि गुण प्रीठ रे ॥ स० ॥ जिनशासन सिंहासणे  
॥ सा० ॥ बेसी करे उपदेश रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥

पुहवी मंगल विहरता ॥ सा० ॥ तारण तरण ऊ  
हाज रे ॥ स० ॥ श्रीकव्याणसागरसूरि जे नमे

( ९३ )

॥ सा० ॥ देखी सकल गुणखाण रे ॥ स० ॥ सा०  
॥ ६ ॥ विशाल सागर कहे वंदीयें ॥ सा० ॥ एह  
वा मुनि नित्यमेव रे ॥ स० ॥ आतम मंगल अनु  
जवे ॥ सा० ॥ तेहिज नित्य नित्यमेव रे ॥ स० ॥  
सा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७८ ॥

॥ अथ गहूंली उगण्याएंशीमी ॥

॥ हस्तियाम वन खंममजार, राजगृही नालिंदा बार,  
आव्या इंडूति गणधार तो ॥ गौतम गुरु वंदवा ज  
इयें ॥ वंदना करीयें ने शिवसुख वरायें तो ॥ गौतम  
गुरु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उदक पेढाल मुनीसर  
दोय, पार्श्वनाथ संतानीया सोय, पूढे प्रश्न ए  
णी परें जोय तो ॥ गौ० ॥ २ ॥ श्रावकले अणुव्रत  
उच्चरावे, मुनिवर देशथी विरति करावे, स्थावर अनु  
मति मुनिने आवे तो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ कहे गौतम  
सुणो मुनिवर बात, शेवपुत्र षटनो दृष्टांत, नृप अ  
न्यायथी मारण जात तो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ तास  
पिता करे विनति राय, ठ कुलनो उहेद ते थाय,  
पंच पुत्रने मूको ताय तो ॥ गौ० ॥ ५ ॥ इम विनति  
करता तस आपे, पुत्र एक तस हर्ष ते व्यापे ॥ मार  
णनी नहिं अनुमति आपे तो ॥ गौ० ॥ ६ ॥ राय

प्रमुख सुणी वंदन आवे, अंतरंग राणी गहूंली जावे ॥  
उत्तम गुरुपद पद्म वधावे तो ॥ गौ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एंशीमी ॥ जुमखडानी देशी ॥

॥ ज्ञानदीवाकर शोभता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सुहं  
कर साधु जी ॥ मूकी काम विडंबना, कूखी संबल  
साज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ १ ॥ नहिं ममता सम  
ताधरा, शांत सुदंत महंत ॥ सु० ॥ पटपद वृत्ति आ  
हारता, देश काल मतिमंत ॥ सु० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत  
जावना, जावंता पचवीश ॥ सु० ॥ पणविश चित्त  
न धारता, अशुन जावन निश दीस ॥ सु० ॥ ३ ॥ शिवना  
री रंजन जणी, पहेखो साधुनो वेश ॥ सु० ॥ ते  
आगल मृगलोचना, करती विनय विशेष ॥ सु० ॥  
॥ ४ ॥ क्रोधादिक चउ जींतवा, वरवा चार अनंत ॥  
सु० ॥ स्वस्तिक पूरी वधावती, सजुरु चरण नमंत  
॥ सु० ॥ ५ ॥ गावे सोहागण गहूंअली, धरती हर्ष  
अमंद ॥ सु० ॥ श्रीशुजवीर वचन सुणी, पामे पद  
महानंद ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहूंली एकाशीमी ॥

॥ अने हारे सरसतीने चरणे नमी रे, वांडुं गुरुना  
पाय ॥ अलिय विधन सवी टले रे, मागुं एक पसा

( ९५ )

य ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा रे ॥ अने हारें  
राजगृही रत्नीयामणी रे, तिहां श्रेणिक राजा अमं  
द ॥ समकित शुद्ध ते सदहे रे, अविदारे सवि फंद  
॥ चा० ॥ २ ॥ अ० ॥ वीर प्रभु तिहां आवीया रें,  
तेह नयरी उद्यान ॥ वनपालकें दीधी वधामणी रे,  
हरख्यो देइ तस दान ॥ चा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ लाख  
दान देइ करी रे, राजा श्रेणिक आय ॥ चार निका  
यना देवता रे, वंदे प्रभुना पाय ॥ चा० ॥ ४ ॥ अ० ॥  
त्रण प्रदक्षिणा देइ करी रे, वेठा इंद नरिंद ॥ वीर  
वाणी तिहां सांजली रे, मनमां हुउ आनंद ॥ चा० ॥  
॥ ५ ॥ अ० ॥ नविजनने पडिबोहता रे, जस आत  
म उद्धार ॥ पाप चक्र सवि चूरता रे, पामे सुरग  
ति सार ॥ चा० ॥ ६ ॥ अ० ॥ चेलणा करे तिहां  
गहूंअली रे, सोवन नरी ने थाल ॥ प्रभुने मोतीडे  
वधावती रे, मुख जोती सुविशाल ॥ चा० ॥ ७ ॥  
॥ अ० ॥ धर्मलान तिहां उच्चरे रे, वरसता अमृत  
वाण ॥ जे नवि जावें ते सांजलें रे, तस घर कोडि  
कल्याण ॥ चा० ॥ ८ ॥ अ० ॥ समवसरण बिराजता  
रे, नवकमलें उवता पाय ॥ इम अनेक गुणो शोचता  
रे, चंडमुनि गुण गाय ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति ॥ ८१ ॥

( ६६ )

॥ अथ गहूंली बाशीमी ॥

॥ सह्याचालो श्री महावीरने, नमवा जइयें रे ॥ गणी  
गौतम स्वामी वजीर, बेनी तिहां जइयें ॥ सह्या० ॥ १ ॥  
त्रिगडानी रचना करी सारी, त्रिदशपति अति नारी  
रे ॥ मध्यपीठ उपर अती तगारी, बेठा वीरजी तारी  
॥ बे० ॥ सह्या० ॥ २ ॥ चौद सहस मुनिशुं परवरिया,  
गुणशील वन उतरीया रे ॥ अनंत अनंत गुणें करी  
जरिया, समता रसना दरिया ॥ बे० ॥ सह्या० ॥  
॥ ३ ॥ श्रेणिक स्वामी समागत जाणी, सार्थे चेल  
णा राणी रे ॥ लेती समकित लाज कमाणी, वंद्या  
उलट आणी ॥ बे० ॥ सह्या० ॥ ४ ॥ बाल कुमरी  
शुनराज समाजें, जलधरनी परें गाजे रे ॥ आतप  
त्र प्रभु शिरपर राजे, नामंफल ठवि ठाजे ॥ बेनी० ॥  
सह्या० ॥ ५ ॥ एम निसुणी चाली ते बाला, ठोडी सहु  
जंजाला रे ॥ गति चालती जिम गजबाला, शुणवा  
जिनगुणमाला ॥ बेनी० ॥ सह्या० ॥ ६ ॥ तिहां  
आवी प्रभुमुडा परखी, बेठी अवसर निरखी रे ॥  
गहूंली पूरे अति मन हरखी, सह्यायर सरखा सरखी  
॥ बे० ॥ सह्या० ॥ ७ ॥ चरण ठवी मुक्ताशुं व  
धावे, हरख अति दिल लावे रे ॥ बहु बाला मली

( ९७ )

गहूंली गावे, सरवे कंठ मिलावे ॥ वे० ॥ सहि० ॥  
॥ ८ ॥ अंग उपांग सुणी जिन पासें, धारी अति उ  
द्दासें रे ॥ दीप कहे प्रभुध्यान विलासें, पढोती निज  
आवासें ॥ वे० ॥ सहि० ॥ ए ॥ इति ॥ ८१ ॥

॥ अथ अध्यात्म गहूंली व्याशीमी ॥  
॥ नवि तुमें वंदो रे शंखेश्वर जिन राया ॥ ए देशी ॥  
॥ अमृत सरखी रे सुणीयें वीरनी वाणी, अति म  
न हरखी रे प्रणमो केवल नाणी ॥ ए आंकणी ठे ॥  
योजनगामिनी प्रभुनी वाणी, पांत्रीश गुणथी नांखे ॥  
पूरव पुण्य अपूरव जेहनां, प्रभुवाणी रस चाखे ॥  
अमृत सरखी ॥ १ ॥ जेहमां इव्य पदारथरचना,  
धर्माधर्म आकाश ॥ पुजल काल अने बलि चेतन,  
नित्यानित्य प्रकाश ॥ अमृत ॥ २ ॥ इव्य गुण ने  
पर्याय प्रकाशे, अस्ति नास्ति विचार ॥ नय सातेथी  
मालकोशमां, वरसे ठे जलधार ॥ अमृत ॥ ३ ॥  
गुणसामान्य विशेष विशेषें, होय मलि गुण एकवी  
श ॥ तस चउ जंगी चार निक्षेपे, नांखे श्रीजगदी  
श ॥ अमृत ॥ ४ ॥ जिलदृष्टांतें खेचर नूचर, सु  
रपति नरपति नारी ॥ निज निज जापायें सद्गु सम  
जे, वाणीनी बलिहारी ॥ अमृत ॥ ५ ॥ नंदी व



ईननी पटराणी, चउ मंगल प्रभु आगें ॥ पूरे स्व  
स्तिक मुक्ताफलनो, चडवा शिवगति पागें ॥ अमृत० ॥  
॥ ६ ॥ चउ अनुयोगी आतमदर्शी, प्रभुवाणी रस  
पीजें ॥ दीपविजय कवि प्रभुता प्रगटे, प्रभुने प्रभुता  
दीजें ॥ अमृत० ॥ ७ ॥ इति ॥ ८३ ॥

॥ अथ जंबुकुमारनी गहूंली चोराशीमी ॥

॥ घरुडामें सहियो फूले हाथणी ॥ ए देशी ॥  
॥ राजगृही नयरी समोसखा, पांचशें मुनि परिवार  
॥ मोरी सहियां हो ॥ केवलज्ञान दिवाकर, श्री श्री  
सोहम गणधार ॥ मोरी० ॥ चालो पटोदर गुरु वां  
दवा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जंबुकुमर आवे हेजशुं,  
पूज्यजीने वंदन काज ॥ मोरी० ॥ ब्रह्मचारी शिर  
सेहरो, लेवा मुक्तिगढ राज ॥ मोरी० ॥ चालो० ॥  
॥ २ ॥ गुरुमुखथी रे सुणी देशना, संयमें उल्लसित  
जाव ॥ मो० ॥ ह्यायिक समकेतनो धणी, तरवाने  
जवजल दाव ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ अणुव्रत लेइ  
गुरु आगलें, संयमनो रे उजमाल ॥ मो० ॥ परणी  
ने घरणी आठने, बूकवी वयण रसाल ॥ मो० ॥  
॥ चा० ॥ ४ ॥ संयम लीये मुनि पांचशें, सत्तावीश  
परिवार ॥ मो० ॥ चरण करण गुण आगला, जेह

( एए )

ना ठे धन्य अवतार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ५ ॥ सुध  
र्मा स्वामीना पाटवी, केवल लही गढराय ॥ मो० ॥  
गुणशीला चैत्य पधारिया, उदायिन हर्ष न माय ॥  
॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ पटराणी राणी पूरे गहूंअली,  
करवा सफल अवतार ॥ मो० ॥ दीपविजय कविरा  
जने, प्रणमे ठे बहु नर नार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७४

॥ अथ फूलडां पंच्याशीमां ॥

॥ सखी रे में कौतुक दीतुं, साधु सरोवर जीजता  
रे ॥ सखी नाकें रूप निहाजतां रे ॥ सखी लोचनथी  
रस जाणतां रे ॥ सखी मुनिवर नारीशुं रमे रे ॥ १ ॥  
सखी नारी हींचोले कंतने रे ॥ सखी कंत घणा एक  
नारीने रे ॥ सखी सदा यौवन नारी ते रहे रे, सखी  
वेश्या विलुद्धा केवली रे ॥ २ ॥ सखी आंख विना  
देखे घणुं रे ॥ सखी रथ बेठा मुनिवर चले रे ॥ स  
खी हाथ जलें हाथी मूवीयो रे ॥ सखी कुतरियें के  
शरी दहण्यो रे ॥ ३ ॥ सखी तरशो पाणी नवि पीये  
रे ॥ सखी पग विट्ठणो मारग चले रे ॥ सखी नारी न  
पुंसक जोगवे रे ॥ सखी अंबाडी खर उपरें रे ॥ ४ ॥  
सखी नर एक नित्य उजो रहे रे ॥ सखी बेठो नथी  
नवि बेसजो रे ॥ सखी अर्द्ध गगनवच्चें ते रहे रे ॥

सखी मांकडे महाजन घेरीयो रे ॥ ५ ॥ सखी उंदरे  
मेरु हलावियो रे ॥ सखी सूर्य अजवालुं नवि करे  
रे ॥ सखी लघु बंधव बत्रीश गया रे ॥ सखी शोकें  
घडी नहीं बेनडी रे ॥ ६ ॥ सखी शामलो हंस में  
देखीयो रे ॥ सखी काट वयो कंचनगिरि रे ॥ सखी  
अंजनगिरि उज्ज्वल थया रे ॥ सखी तोहे प्रभु न सं  
जारीया रे ॥ ७ ॥ सखी वयरसामी सुता पारणें  
रे ॥ सखी श्राविका गावे हालरां रे ॥ सखी महोटा  
थइ अर्थ ते कहेजो रे ॥ सखी श्रीगुनवीरने वाहा  
लडा रे ॥ ८ ॥ इति हरियालीनी गहूंली ॥ ८५ ॥

॥ अथ चूनडी ठयाशीमी ॥

॥ हांजी समकित पालो कपासनो, हांजी पेंजण  
पाप अढार ॥ हांजी सूत्र जलुं रे सिद्धांतनुं, हांजी  
टालो आठ प्रकार ॥ हांजी शीयल सुरंगी चूनडी ॥ १ ॥  
हांजी त्रण गुप्ति ताणो ताणो, हांजी नलीय जरी  
नव वाड ॥ हांजी वाणो वाणो रे विवेकनो, हांजी  
खेमा खुंटीय खाय ॥ हांजी शी० ॥ २ ॥ हांजी  
मूल उत्तर गुण घूघरा, हांजी ठेडा वणो नें चार ॥  
हांजी चारित्र चंदो वच्चे धरो, हांजी हंसक मोर च  
कोर ॥ हांजी शी० ॥ ३ ॥ हांजी अजब बिराजे

चूनडी, हांजी कहो सखी केटलुं मूढ्य ॥ हांजो लाखें  
 पण लाजे नहीं, हांजी एह नहीं सम तोल ॥  
 हांजी शी० ॥ ४ ॥ हांजी पहेली उढी श्री नेम  
 जी, हांजी बीजी राजुल नेट ॥ हांजी त्रीजी गजसुकु  
 मालजी, हांजी चौथी सुदर्शन शेठ ॥ हांजी शी०  
 ॥ ५ ॥ हांजी पांचमी जंबू स्वामीने, हांजी ठछी  
 धनो अणगार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी  
 आठमी एवंती कुमार ॥ हांजी शी० ॥ ६ ॥  
 हांजी सीता कुंता झैपदी, हांजी दमयंती चंदनवा  
 ल ॥ हांजी अंजना ने पद्मावती, हांजी शीयलवती  
 अतिसार ॥ हांजी शी० ॥ ७ ॥ हांजी अजब  
 बिराजे रे चूनडी, हांजी साधुनो शणगार ॥ हांजी मेघ  
 मुनीसर एम जणे, हांजी शीयल पालो नर नार ॥  
 हांजी शी० ॥ ८ ॥ इति ॥ ८६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्त्याशीमी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सहियरोजी साधुजी वंदीयें, श्रीवीरतणा  
 पट्टोधार रे ॥ चउनाणी सोहम गणधरु, सूत्र रय  
 ए तणा जंमार रे ॥ चालो ० ॥ १ ॥ एकविध असं  
 यम टालता, धर्म दोय यति गृही गमता रे ॥ ॥

विध गारवने परिहरे, चार सुख शय्या मांहे रमता रे  
 ॥ चालो० ॥ १ ॥ प्रमाद तजे नजे व्रतीने, नय टाले  
 मातने पाले रे ॥ नियाणां न करे साधु जी, दश श्र  
 मण धरम अजुवाले रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ ॥ श्रद्धावंती  
 शुद्ध श्राविका, गुरु आगल नक्ति करंती रे ॥ गुरु आ  
 गल पूरे गहूंअली, शासन करती बहु उन्नति रे ॥  
 ॥ चा० ॥ ४ ॥ जिनवाणी अनुनवरस नरी, गुरु उक्त  
 म रत्नना मुखयी रे ॥ सुणतां पामे निज आतमा, सु  
 ख अनुनवमां रहे एयी रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ८७

॥ अथ तपनी जाण्य अठ्ठाशीमी ॥

॥ साहेवा महारा अरज करुं तुं कंत, कहे सुणो का  
 मिनी जी ॥ साहिवा महारा गुरुउपदेशें तुं, सहियां  
 मांहे कपनी जी ॥ १ ॥ सा० ॥ आझा आपो, मास  
 खमण तप आदरुं जी ॥ सा० ॥ अवसर पामी, मान  
 व नव सफलो करुं जी ॥ २ ॥ गोरी माहारी हाथ  
 न चाले, मन नवि चाले माहरुं जी ॥ गोरी महा  
 री ए तप महोटुं, शरीर खमे नहिं ताहेरुं जी ॥ ३ ॥  
 ॥ सा० ॥ व्योने आदरुं, संवत्सरीना खोला पाथरुं  
 जी ॥ सा० ॥ मान मागुं तुं, अंतराय तमें कां करो  
 जी ॥ ४ ॥ गोरी अमें आझा आपी, पञ्चस्काण जइ

( १०३ )

उच्चरो जी ॥ ससरा महारा ढोल वजडावो, धर्मस्था  
नक धन वावरो जी ॥ ५ ॥ सासु महारी साथें आ  
वो, चोक पूरावो गहूंजी साथीये जी ॥ सह्यार म  
हारी साथें आवो, गुरुजी वधावो गजमोतीयें जी  
॥ ६ ॥ गुरुजी महारा पच्चस्काण करावो, मास खम  
एनुं मन रूली जी ॥ जेठजी महारा वाजां वजडा  
वो, खेला नचावो खांतशुं जी ॥ ७ ॥ वीरा महारा  
घाट घडावो, पाट धरावो शेरीयें जी ॥ सामणी महारी,  
सांगी देवरावो वाजित्र जूंगल जेरीयें जी ॥ ८ ॥ सामणी  
महारी आंगी रचावो, गुरुजी मनावो पाय लागीने  
जी ॥ सामणी मोरी पासें रहीने पोथी पूजावो, वास  
नखावो मागीने जी ॥ ९ ॥ नवियां एहवी जावना चावो,  
तपें काया निर्मल करो जी ॥ तपीने महारी वंदना हो  
जो, उदयरत्न एम उच्चरे जी ॥ १० ॥ इति ॥ ८८ ॥

॥ अथ नव पदनी गहूंजी नेव्याशीमी ॥

॥ आतमराम मुनिराजीया, नवजल तारण नाव ॥  
मोरी सह्यो रे ॥ पांचे योगने साधवा, लीधो ते  
मुनिवरनाथ ॥ मोरी ० ॥ चालोने गीतारथ गुरुने वां  
दवा ॥ १ ॥ वृत्ति कहे योग पांचमो, साधन करे ए  
विलास ॥ मोरी ० ॥ अनुनव अन्यासी सदा, व

તા જ્ઞાન અન્યાસ ॥ મોં ॥ ચાં ॥ ૧ ॥ પહેલો  
 અધ્યાતમયોગ જે, જાવનાયોગ તેમ જાણ ॥ મોં ॥  
 ધ્યાનયોગેં ત્રીજો સહી, સમતા યોગ મન હોય ॥  
 ॥ મોં ॥ ચાં ॥ ૩ ॥ એમ અનેક ગુણેં શોજતા, વીર  
 આણા લેઃ માન ॥ મોં ॥ ગોયમસ્વામી સમોસઘ્યા,  
 રાજગૃહી ઉદ્યાન ॥ મોં ॥ ચાં ॥ ૪ ॥ શ્રેણિકરાય  
 આવે વાંદવા, સુણી આગમન ઉદંત ॥ મોં ॥ ક્ષાધિ  
 ક સમકિતનો ધણી, વાંદે ગુરુ ગુણવંત ॥ મોં ॥ ચાં ॥  
 ॥ ૫ ॥ ઇણ અવસર રાણી ચેલણા, જાવ સજી શણ  
 ગાર ॥ મોં ॥ શ્રદ્ધાપીઠ ઉપર સહી, ગઢૂંતી કરે મ  
 નોહાર ॥ મોં ॥ ચાં ॥ ૬ ॥ તવ ગોયમ દિયે દેશ  
 ના, સેવો જવિક સિદ્ધ ચક્ર ॥ મોં ॥ આંબિલ ઝંતી  
 આરાધિયેં, જિમ ન પડો જવચક્ર ॥ મોં ॥ ચાં ॥  
 ॥ ૭ ॥ પાંચે ધર્મીને ચાર ધર્મ છે, ધર્મી સેવ્યા ધર્મ  
 હોય ॥ મોરીં ॥ મયણા ને શ્રીપાલનો, સંબંધ કહે  
 સવિ સોય ॥ મોરીં ॥ ચાં ॥ ૮ ॥ વલી નવપદમ  
 ય છે આતમા, આતમ નવપદ જોય ॥ મોં ॥ ધ્યે  
 ય ધ્યાતા ધ્યાન એકથી, જેડ લહો નવિ કોય ॥ મોં  
 ॥ ચાં ॥ ૯ ॥ આતમધર્મીને દેશના, ધારજો હૃદય  
 ખજાર ॥ મોં ॥ સ્વિમાવિજય જસ સંપદા, શુનવિ

(१०५)

जय सुखकार ॥ मो० ॥ चा० ॥ १० ॥ ८ए ॥

॥ अथ गहूंली नेवुंमी ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर चतुर चकोरडी, गुण उरडी हो यइने उज  
माल ॥ आवो गुरुने जेटवा, दुःख मेटवा हो सुणी  
धर्म रसाल ॥ बलिहारी गुणवंतनी ॥ १ ॥ रुजुमति हो  
होय कोडि कट्याण ॥ ब० ॥ ए आंकणी ॥ जावठ नांजे  
जव तणी, बलि वाजे हो घरे जीत निशाण ॥ बलि० ॥  
॥ २ ॥ बलि आतमतत्त्वनी सेवना, शुन देशना  
हो सुणतां जे रीऊ ॥ तेहिज तत्त्व प्राप्ति तणुं, प्रभु  
नांख्युं हो आगममां बीज ॥ बलि० ॥ ३ ॥ नमना  
निगमन वंदनें, गुरु विनयें हो होय लाज अपार ॥  
समकित शुद्ध ग्रही सही, ते वेहेजो हो लहे जवज  
लपार ॥ बलि० ॥ ४ ॥ स्वस्तिक कारण स्वस्तियुं,  
गुरु आगल हो रचियें मनरंग ॥ कुंकुमरोल कचोल  
डां, धरि ऊपर हो श्रीफल शुन चंग ॥ बलि० ॥ ५ ॥  
इव्य मंगलथी जावियें, जावमंगल हो दानादिक  
चोक ॥ उपर साकर संपदा, सहि पामे हो शुनदृष्टि  
लोक ॥ बलि० ॥ ६ ॥ चोक पूखो गति चारनो, क



( १०६ )

फेरा हो नवमांहि अनंत ॥ आतमराम सुगुरु हवे,  
मुक्त दीजें हो सहि सुख अनंत ॥ बलि० ॥७॥इति॥

॥ अथ गहूंली एकाणुमी ॥

॥ रूडीने रढियाली रे समकित श्राविका रे ॥ सज  
करि शोल जना शणगार, कर धरी रजत रकेबी  
सार ॥ रूडीने० ॥ १ ॥ कुंकुम रूडी मांहे कुंकावटी  
रे ॥ कुंकुम थाल नखो करि श्रीकार, निरखवा  
चाली गुरु देदार ॥ रूडीने० ॥ २ ॥ सहियर टोली  
रे साथें मली संचरी रे ॥ जई गुरु केरा वंदे पाय ॥  
गहूंली करे शुच चित्त लाय ॥ रूडीने० ॥ ३ ॥ मंगल  
करती रे निज आतम जणी रे ॥ बलि जलो कंकण  
नो करे रणकार ॥ थाय रूडो जांऊरनो ऊमकार ॥ रू  
डीने० ॥ ४ ॥ लूढणां करती रे गुरुगुण हेजगुं रे ॥  
श्रीफल ठवती करे रंगरोल ॥ जाणती नथी कोइ  
गुरुने तोल ॥ रूडीने० ॥ ५ ॥ मंगल करती हियडे  
हेजगुं रे ॥ बलि सुणी आगमनो समुदाय ॥ नवजल  
सायर तरण उपाय ॥ रूडीने० ॥ ६ ॥ उत्तम घरनी  
रे श्रवणें चेतना रे ॥ सांजली ह्यैडे हरख न माय ॥  
म कहे जिम अमिय समाय ॥ रूडीने० ॥७॥ए१॥

॥ अथ जयंती श्राविकानी गहूंली बाणुंमी ॥

॥ फतमलनी देशी ठे ॥

॥ चित्तहर ॥ चोवीशमा जिनराय, नयरी कोसंबी समो  
सख्या ॥ चि० ॥ मनमोहन मुनिराज, चउद हजारें  
परवखा ॥ १ ॥ चि० ॥ सुरनर परषदा बार, रतन  
गढें आवी ठ्या ॥ चि० ॥ वेठा सिंहासन नाथ, चा  
मर ठत्र अलंकखा ॥ २ ॥ चि० ॥ वंदे उदायन जूप,  
रूप चार दर्शन दिये ॥ चि० ॥ समकिती व्रतधर  
लोक, कोक कमलपरें विकसियें ॥ ३ ॥ चि० ॥ रंजा  
अप्सरा ताम, गहूंली करीने वधावती ॥ चि० ॥ रुं  
जयंती समान, नामें जयंती माहासती ॥ ४ ॥ चि०  
॥ वीर अक्षर दोय मंत्र, जपती नित्य जपमाजिका  
॥ चि० ॥ जक्ति सोवन रसी देह, जेह हजुरी श्रा  
विका ॥ ५ ॥ चि० ॥ नष्टाद जोजाइ साथ, नाथ  
आगल कनी रही ॥ चि० ॥ प्रश्न पूठे कर जोडी,  
प्रभुजी उत्तर देता सही ॥ ६ ॥ चि० ॥ जागता उंघता  
कोण, उद्यमी आलसु कोण जना ॥ चि० ॥ धर्मी  
अधर्मी लोक, शतक बारमे जगवइ वरा ॥ ७ ॥  
चि० ॥ सुणी हरखित कहे देव, महेरनजर महो  
तणी ॥ चि० ॥ थइ हुं जगविरख्यात, जो प्रभु पो

नी गणी ॥ ८ ॥ चि० ॥ विचरो देश विदेश, पण मुऊ  
हृदय वसो सदा ॥ चि० ॥ श्री शुनवीरजिणंद, बेह  
न देशो मुऊ कदा ॥ ए ॥ इति ॥ ए२ ॥

॥ अथ गहूंली त्राणुंमी ॥

॥ सुण वात कहुं साहेजी रे, गुरु गुण गावा टेव प  
डी ॥ नहिं आवे फरी आ एवी रे, पुण्यतणी आ  
एक घडी ॥ सुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहु सखी  
यो मलीने चाली रे, गुरु आगल जइ पाय पडी ॥ ए  
केक थकी अधिकेरी रे, गुरुगुण गाती हर्ष धरी  
॥ सु० ॥ २ ॥ जब अनंता नमतां रे, पुण्य संयोगें  
योग मळ्यो ॥ जिनवाणी अति मीठी रे, सुरतरु महारे  
आज फळ्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसारसमुझने तरवा रे,  
जोने एहिज जाहज समी ॥ जिनवाणी अतिसारी  
रे, नविजनने हृदयें अतिय गमी ॥ सु० ॥ ४ ॥ योग्य  
जीवने हितकारी रे, शांत सुधारस ए वाणी ॥ नय  
निक्षेप प्रमाणी रे, अनेक गुणनी जे खाणी ॥ सु०  
॥ ५ ॥ रत्नत्रयनुं कारण रे, तारण नव्यने एह स  
ही ॥ सरस सुधारस जेहवी रे, देवेंइसूरियें एह  
पही ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रभु मुखबिटथी खरती रे, ग  
भर लीये चित्त धरी ॥ अंग उपांगनी रचना रे, नय

( १०९ )

गम जंग अनेक करी ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रवचन कुसमे  
गुंथी रे, मुनिवर राजने कंठ ठवी ॥ देवेंड्र सूरि एम  
जांखे रे, जविजन प्राणी ए खेत जणी ॥ सु० ॥ ८ ॥  
स्वस्तिक पूरे मनरंगें रे, गुरु मुख जोती सुविशाल ॥  
प्रेमेथी जविजन जावो रे, अमर लहे वर शिव बा  
ला ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ ए३ ॥

॥ अथ रूपैयांनी गहूंली चोराणुंमी ॥ धोलनी देशीमां ॥  
॥ देश मूलकने रे परगणां, हाकम हुकम करंत ॥  
ठडिदार चोपदार उजला, एसहु महोटा जाइ धरंत ॥  
रूपैयांनी शोजा रे शी कहुं ॥ १ ॥ कसबी ठोगाली  
पालखी, रथ धरी घूघरमाल ॥ सेवक हींमे रे मलप  
ता, धनपाल घोडींनी चाल ॥ रूपैया० ॥ २ ॥ उंचा उंचा  
मंदिर मालियां, खाजलीयाला ठे गोख ॥ कोरणी  
याला ठे गोख ॥ रूप० ॥ ३ ॥ आवो बेसो रे सहु करे, वली  
दीये आदर मान ॥ तोये पण बेसे नहीं, नहीं सां  
जले देइ कान ॥ रूप० ॥ ४ ॥ निर्धन आवे रे दूक  
डो, न दीये आदर मान ॥ महोदुं मरडी नीचुं जूए,  
पग मेलवानुं नहिं ठाम ॥ रूपैया० ॥ ५ ॥ ग्रंथ  
विनानो रे गांगलो, गरथें गांगा रे शेठ ॥ गरथविनान  
रे शेठीया, दीसे करता रे वेठ ॥ रूप० ॥ ६ ॥ वि

वाजमें ऊजला, संपत्ति नाम धराय ॥ जगमां कहे  
 वाया रे ऊजला, ए सहु महोटा जाइ पसाय ॥ रू०  
 ॥ ७ ॥ संग्राम शोनी रे वावरे, महोरो ठत्रीश हजा  
 र ॥ वस्तुपाल तेजपाल ऊजला, ए सहु जगत मजा  
 र ॥ रू० ॥ ८ ॥ दीपविजय कविराजने, होजो मंग  
 ल माल ॥ जगमां कहेवाया रे ऊजला, कोरडीया  
 लाने मान, फूदडीयालाने मान ॥ रू० ॥ ९ ॥ ९४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचाणुंमी ॥

॥ एतो अमल कप्प उद्यानमां, देवाची नारी ॥ एतो  
 रूपकला गुण नारी हो ॥ एतो धारी रेसम जाली रे,  
 आवी वंदे वीरने जी ॥ १ ॥ देइ प्रदक्षिणा स्वामीने  
 ॥ दे० ॥ एतो निज निज नाम सुणावी हो ॥ एतो  
 जावे रे वधावे रे प्रभुने नाचे रंगशुं जी ॥ २ ॥ ठम  
 ठम ठमके वींढीया ॥ दे० ॥ एतो घम घम घूघरा वागे  
 हो ॥ एतो रागें रे प्रभु आंगें रे संगे स्वर आलापती जी  
 ॥ ३ ॥ जणणण वीण वजावती ॥ दे० ॥ एतो घणणण  
 घुमणी छेती हो ॥ एतो देती रे कर ताली रे, ताली  
 गाती गीतनेजी ॥ ४ ॥ दौं दौं धप मप ठंदशुं ॥ दे० ॥ एतो  
 वागे मृदंग सुदंगी हो ॥ ए तो रंगी रे गुण संगी  
 गी वागे वांसली जी ॥ ५ ॥ थेइ थेइ थेइ मुख उच्चरे ॥

दे०॥ एतो बिच बिच अंगने वाली हो ॥ ए तो वाली  
 रे सुकुमाली रे, जाली मुखडुं वीरनुं जी ॥ ६ ॥ लली  
 लली देती उवारणां ॥ दे० ॥ एतो समकित निर्मल  
 करती हो ॥ एतो धरती रे गुण धरती रे, जिहां प्रचुजी  
 विचरता जी ॥ ७ ॥ एणी परें नाची नमी करी ॥ दे० ॥  
 एतो अनुनव सुख मतवाली हो ॥ एतो गाली रे निज  
 नव टाली रे दुःखडुं पढोती स्वर्गमां जी ॥ ८ ॥ वा  
 चक रामविजय कहे ॥ दे० ॥ एतो समकितवंतनी  
 करणी हो ॥ एतो वरणी जिननक्ति नीसरणी हो ॥  
 शिव मंदिर तणी जी ॥ ९ ॥ इति ॥ ए५ ॥

॥ अथ गढूंली ठनुंमी ॥

॥ ते तरिया जाइ ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आज नगरमां महिमा उब्बव, जलें अम्ह गुरु आ  
 व्या रे ॥ संघ सद्गुने मनमां जाव्या, आणंद हरखें व  
 धाव्या रे ॥ आज० ॥ १ ॥ पंच समिति त्रण गुप्तियें  
 गुप्ता, ठक्काय जीवने पाले रे ॥ पंच माहाव्रत सूधां  
 धारे, पंचाचारशुं माले रे ॥ आज० ॥ २ ॥ आगम गु  
 रुनो सांजली हार्षित, वंदन बहु जन आवे रे ॥ नर  
 नारीतो मलि मलि टोलें, गुरुगुण गढूंली गावे  
 आज० ॥ ३ ॥ शुनपरिणति वर पट्ट बिठाइ, आ

थाल लइ हाथे रे ॥ गुजरति कुंकुम निजगुण तांडल,  
 समकित श्रीफल सार्थे रे ॥ आज० ॥४॥ जिनवाणी  
 बहुरंगी उठणी, उठी मनने जावें रे ॥ ज्ञानादिक गुण  
 लूठणां रूडां, जावहुं शालि वधावे रे ॥ आज० ॥५॥  
 इव्य ने जावें गुरुने वंदी, सांजलो वीर प्रभु वाणी रे ॥  
 तप जप नियम व्रत बहु कीजें, मनुक जावना आ  
 णी रे ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति ॥ ६६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्ताणुंमी ॥

॥ अंबसाल उद्यानमां, कांइ विचरंता वीर जिणंद रे ॥  
 समवसरण देवें रच्युं, कांइ बेठा नयनानंद ॥ जिन  
 जीने बोलडीये ॥ मोह्या मोह्या रे सुर नर लोक  
 ॥ जि० ॥ १ ॥ पर्षदा बार तिहां मली, कांइ बेठी  
 नमी गुन चित्त रे ॥ कोडी गमे सेवा करे, कांइ नि  
 र्जर नेपुर दुंत ॥ जि० ॥२॥ चउमुख चउदिशि वीर  
 जी, कांइ देवे देशना सार रे ॥ दान शीयल तप जाव  
 ना, कांइ शिवपुर मारग चार ॥ जि० ॥ ३ ॥ चार  
 निकायना देवता, कांइ अण दूंतें एक कोडी रे ॥ से  
 वा करे प्रभुजी तणी, कांइ उजा बेकर जोडी ॥ जि०  
 ॥ ४ ॥ वनपालकें जइ वीनव्यो, कांइ श्रीकोणिक  
 हाराय रे ॥ सपरिवारहुं आवियो, कांइ बेठो नमि

प्रभु पाय ॥ जि० ॥ ५ ॥ समतारसमयी देशना,  
 कांइ जांखे वीर रूपाल रे ॥ नयगर्जित सुणी बोल  
 डा, कांइ हरख्यो चित नूपाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिथ्या  
 मत दूरें टढ्यो, कांइ ऊग्यो समकित सूर रे ॥ मोहंम  
 हामद मोडियो, कांइ प्रगढ्यो आतम नूर ॥ जि० ॥  
 ॥ ७ ॥ कोणिक घरणी धारणी, कांइ जरी अकृत  
 शुचि थाल रे ॥ जिन आगल स्वस्तिक करे, कांइ कुं  
 कुम रंग रसाल ॥ जि० ॥ ८ ॥ मलीने सौ गावे तिहां,  
 कांइ प्रभुगुण नक्ति सलोक रे ॥ ज्ञान सुजस विनो  
 दमां, कांइ मग्न दुआं बहु लोक ॥ जि० ॥ ९ ॥ ९७ ॥

॥ अथ गहूंली अछाणुंमी ॥

॥ कठमारां हो नणदि वाजां वाजीयां ॥ ए देशी ॥  
 ॥ पंच महाव्रत हो पालता, पालता जीव ठ काय  
 ॥ मोरी आढी बहेनी, चतुर चोमासुं गुरुजी  
 आविया ॥ ए आंकणी ॥ संघ सहुने हो मन जाव  
 ता, जावता प्रवचन माय ॥ मोरी० ॥ च० ॥ १ ॥  
 ठाम ठाम हो नवि बोधता, रोधता विषय प्रमाद  
 ॥ मो० ॥ पुण्य प्रनावें हो गुरु इहां, मलिया धर्मना  
 वाद ॥ मोरी० ॥ च० ॥ २ ॥ शोल शणगा  
 सजी सुंदरी, गावेजी गीत रसाल ॥ मोरी०



गहूंली रचे मन रंगछुं, सुणीयेंजी सूत्र विशाल  
॥मोरी०॥च०॥३॥ धवल मंगल गावे गोरडी, वाजंते  
ढोल निशान ॥मोरी०॥ ललि ललि कीजें जी लूढणां,  
धरंताजी धर्मनुं ध्यान ॥ मोरी० ॥ च० ॥ ४ ॥ नगर  
लोक सहु हरखियां, वाथ्योजीधर्मनोरंग ॥ मोरी०॥  
वीरशासन मांहे एहवा, मल्लूक जाव अजंग ॥मो०॥५॥

॥ अथ चक्रेसरी मातानी गरबी नवाणुंमी ॥  
॥ अलबेली रे चक्रेसरीमात, जोवाने जश्यें ॥ जेह  
नां सोवन वर्णां गात्र, जोवाने जश्यें ॥ ए आंक  
णी ॥ जोवा जश्यें पावन अश्यें, देखी मन गहग  
ह्यीयें रे ॥ एक तीरथ बीजी जगदंबा, वंदी संपत  
लहीयें ॥ जो० ॥ अ० ॥ १ ॥ आठ जुजाली अति  
लटकाली, मृगपति वाहन वाली रें ॥ जिनगुण गाती  
लेती ताली, तीरथनी रखवाली ॥ जो० ॥ अ० ॥  
॥ २ ॥ श्री सिद्धाचल गिरि पर गाजे, देवी देव समा  
जे रे ॥ रंगित जाली गोंख बिराजे, घडी घडी घडीयालां  
वाजे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाटडी लाल गुलाल  
सोहावे, पीला राता चरणा रे ॥ बहु शोने ठे जग  
जननीने, केशर कुंकुम वरणा ॥ जो० ॥ अ० ॥ ४ ॥  
।लके कर कंकणने चूडी, नवसरो ह्यैयडे हार रे ॥

रत्नजडित जांजर ठे चरणे, घूघरीयें घमकार ॥ जो०  
 ॥ अ० ॥ ५ ॥ नाके मोती उज्ज्वल वाने, बाजुबंध  
 वेढु बाहें रे ॥ केडें कटि मेखला रणजणती, फलके  
 हीरा मांहे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देश देशना न्हा  
 ना महोटा, संघ लइ संघवी आवेरे ॥ ते सहु पहेलां  
 श्रीफल चूनडी, जगजननीने चढावे ॥ जो० ॥ अ०  
 ॥ ७ ॥ धन्य धन्य ए श्रीपुंमरगिरि जिहां, जगदंबा  
 नो वास रे ॥ जे कोइ ए तीरथने सेवे, तेहनी पूरे  
 आश ॥ जो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ संघवी संघतणी रख  
 वाली, श्रीजिन सेवा कारी रे ॥ दीपविजय कहे मांग  
 लिक करजो, ठे बहु शोना तारी ॥ जो० ॥ अ० ॥ ९ ॥  
 ॥ अथ गहूंली शोमी ॥

॥ शामलिया शामजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानगुणें वखा रे, अरिहा अजित जिणंद जग  
 वान ॥ आवी समोसखा रे, नयरी साकेतन उद्या  
 न ॥ साथें पटोधरा रे, सिंहसेनादिक वर गणधार ॥  
 एक लाख मुनिवरा रे, ज्ञान क्रियाना जे जंमारा ॥ १ ॥  
 रूपक आरोहिने रे, मुनि गुणठाणे वधता जाय ॥  
 वर निरमोहीने रे, केइ मुनि घाती करम खपाय  
 केइ परिपाटीयें रे, डुकर तप अनिग्रह करनार

इम बहु घाटीयें रे, प्रचुने संघे ठे परिवार ॥ १ ॥  
 सहु देवें मली रे, कीधुं समवसरण मंमाण ॥ वेठा  
 मन रली रे, त्रीजा गढमां त्रिचुवन जाण ॥ जइ आ  
 रामीयें रे, दीधी वधाइ प्रचुनी ताम ॥ पटखंम सा  
 मीयें रे, पूरित मनोवंठित काम ॥ ३ ॥ बहु आम्  
 वरें रे, आवे चक्रिसगर उत्साह ॥ नक्ति पुरस्सरें रे,  
 वांदे प्रचुजीना पाय ॥ प्रचु दीये देशना रे, नवियण  
 ने प्रेम प्रकाश ॥ चार प्रकारने अनुसरी रे, पामो  
 नवियण नव निस्तार ॥ ४ ॥ सखीयें परवरी रे,  
 नामें रत्न सुकेशा नार ॥ अति हरखें करी रे, पूरे  
 मंगल आव उदार ॥ त्रण खमासणें रे, वांदे वधावें  
 थइ उजमाल ॥ रंगनरथी सुणे रे, प्रचुनां अमृत व  
 यण रसाल ॥ ५ ॥ इति ॥ १०० ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने एकमी ॥

॥ द्वारिका नयरी सुंदरु ॥ तारुजी ॥ सहसावन अ  
 निराम हो ॥ गुणवंती गहूंली करे फागमां ॥ वारुजी  
 ॥ १ ॥ नेम जिणंद समोसखा ॥ ता० ॥ वन  
 पालक दीये वधाइ हो ॥ गु० ॥ श्रीकृष्ण अग्रमही  
 ॥ अष्टशुं ॥ ता० ॥ वंदन पडह वजाय हो ॥  
 गु० ॥ २ ॥ पंच अजिगम साचवी ॥ ता० ॥ वांदें

तिहां गोविंद हो ॥ गु० ॥ जगगुरु आगल गहूंली  
 करे ॥ ता० ॥ देखी प्रभु मुख अरविंद हो ॥ गु० ॥  
 ॥ ३ ॥ श्रद्धारत्न चोक उपरें ॥ ता० ॥ नक्ति कुंकुम  
 रंग रोल हो ॥ गु० ॥ पंच प्रमादनी तर्जनी ॥  
 ता० ॥ पंच रत्न उवित अमोल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥  
 ज्ञान गुलाल उडावतां ॥ ता० ॥ तप अवीर न  
 रि नरि मूठि हो ॥ गु० ॥ दर्शन पीचकारी नरी ॥  
 ता० ॥ चारित्र परिमल उत्कंठी हो ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 जावना वसंत गाये तिहां ॥ ता० ॥ गिरुआ नेम  
 नी पास हो ॥ गु० ॥ समकित फगुवा तिहां दिये  
 ॥ ता० ॥ जेथी जाये नवनी काश हो ॥ गु० ॥  
 ॥ ६ ॥ गहूंली एणी परें कीजीयें ॥ ता० ॥ पामें मु  
 क्ति विलास हो ॥ गु० ॥ पंमित ज्ञान शिवपद लहे  
 ॥ ता० ॥ विनयें सफल होये आश हो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने बेमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥  
 ॥ चंपानयरी उद्यान, सुरतरु मोरी रह्योरी ॥ वीर  
 पटोदर धीर, सोहम आय रह्योरी ॥ १ ॥ जीय कोट  
 जीय मान, माया लोन दह्योरी ॥ संपूरण श्रुतज्ञा  
 जिनवर बिरुद वह्योरी ॥ २ ॥ आश्रव विषय प्रम

(११७)

निझा पंच तजेरी ॥ दशविध सामाचारी, षटविध जय  
णा नजेरी ॥ ३ ॥ उपकारें धरे बार, जावना तप  
पडिमारी ॥ निःकारण जगबंधु, रवि शशी मेह समारी  
॥ ४ ॥ कंचन कमल विचाल, बेसी धर्म कहेरी ॥  
जेहथी जवियण लोय, आतम तत्त्व लहेरी ॥ ५ ॥  
कोणिक नूपति नारि, घोयली गेली करेरी ॥ माणक  
मोति वधाय, पुण्य जंमार जरेरी ॥ ६ ॥ जिनशास  
ननी जक्ति, करतां पाप हरेरी, सोहव सरिखे साद,  
घोयली गीत जणेरी ॥ ७ ॥ इति ॥ १०२ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रणमी ॥ आठे लालनी देशी ॥  
॥ ज्ञानादिक गुणखाण, राजगृही उद्यान ॥ गणधर  
लाल ॥ सोहम सामी समोसखा जी ॥ १ ॥ कंचन  
गौर शरीर, वाणी गंगा नीर ॥ ग० ॥ त्रिहुं पंथें प  
सरे सदा जी ॥ २ ॥ अंग उपांगह बार, दशविध  
रुचिनो धार ॥ ग० ॥ दुगविध शिक्षा उपदिसे जी  
॥ ३ ॥ तेर क्रिया व्रत बार, गिहि पडिमा अगीया  
र ॥ ग० ॥ श्रावक गुण जेद सिद्धना जी ॥ ४ ॥  
वितय वैद्यावच्च कल्प, धरे दशविध छ अकल्प  
ग० ॥ वंदन दोष विकथा तजे जी ॥ ५ ॥ कुंकुम  
कचोल, गहूंली करे रंगरोल ॥ ग० ॥ अकृत श्री

( ११ ए )

फल उपरें जी ॥ ६ ॥ मगधाधिपनी नारी, शोल स  
जी शणगार ॥ ग० ॥ ललि ललि करती लूठणां जी  
॥ ७ ॥ जोती गुरुमुख चंद, पामती परमानंद ॥ ग० ॥  
चतुर चकोरडी गोरडी जी ॥ ८ ॥ सुरवधू नरवधू  
कोडि, मलि मलि सरखी जोडि ॥ ग० ॥ गावे जिन  
शासन धणी जी ॥ ९ ॥ इति ॥ १०३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने चारमी ॥

॥ पंचम पदने गाइयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रुतनाणी श्रुतधर गुरु रे, पंचाश्रवना त्यागी रे ॥  
दशत्रिक वेत्ता जाव समेता, संवर तप सोजागी ॥  
धन गुरु वंदो रे ॥ वंदो रे जगत हितकार ॥ धन० ॥  
॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवाजिगम ए सूत्रजमांदे,  
जीवाजीव विचार रे ॥ इग डु ति चउ पण ठविहा,  
जूजूआ जेद उदार ॥ धन० ॥ २ ॥ शशी रवि ग्रह  
नक्षत्र तारा, जंबु लवणें बमणा रें ॥ धाश्य त्रिगुणा  
जणजो सघले, चउदिशि फरे परिजमणा ॥ धन० ॥  
॥ ३ ॥ इण परें देशना दिये गुरु नाणी, पुण्य पाप  
उलखाणी रे ॥ श्रद्धा जासन तत्त्वरमणथी, आयें  
अनुजव नाणी ॥ धन० ॥ ४ ॥ श्रद्धावंत सुश्रावि  
रे, निसुणी श्रीजिनवाणी रे ॥ सन्मुख जोती अ

( १२० )

पूरती, मुक्तिपदनी निशानी ॥ धन० ॥ ५ ॥ चिहुं ग  
ति दुःखडां चूरती रे, ठवती पंच रतन्न रे ॥ प्रभुगुण  
गाती पाप पखालती, प्रणमी शुणती धन्य ॥ धन० ॥  
॥ ६ ॥ मुक्ताफल वर थाल वधावी, लेती समकित  
रंग रे ॥ जगगुरुनो विनय साचवती खेमें, धरती  
ध्यान तरंग ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥ १०४ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो नें पांचमी ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाला ॥ ए देशी ॥

॥ महासेन वनभां रे आवे, तिहां श्रीवीरजिणंद सु  
हावे ॥ समवसरण तिहां सुर विरचावे, चोशठ इंद्र  
नमे अर्चावे ॥ महा० ॥ १ ॥ शम दम शांत गुणें  
ते जरिया, जाणे जंगम नाणना दरीया ॥ चौदसहस  
मुनिशुं परवरिया, राजगृही नयरी संचरीया ॥ महा०  
॥ २ ॥ राजा श्रेणिक वंदन आवे, चेलणा राणी साथें  
सुहावे ॥ बारे पर्षदा वंदे जावें, देशना सुणी मन रंज  
न थावे ॥ महा० ॥ ३ ॥ गुरुमुख आगल गहूंली  
कीजें, नरनव पामी लाहो लीजें ॥ कुंकुम घोली मो  
तीडे वधावे, जावें समकित शुद्धज थावे ॥ महा० ॥  
॥ ४ ॥ श्री चंडोदय रत्न सूरिंद, निर्मल उग्यो पूनम  
॥ जाणे जंगम मोहन वेली, टोळें मलि मंगल

( १३१ )

गाय साहेली ॥ महा० ॥ ५ ॥ गढूंली गाइ रंग रसा  
ली, गुणिजन हृदय कमलमां वाली ॥ श्रीविजयराज  
सूरीश्वर राया, जे प्रणमे ते शिव सुख पाया ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ अथ गढूंली एकशो ने ठछी ॥

॥ चालो साहेली, जंगम तीरथ वंदन करवा जइयें, हां  
रे मुनि मुख निरखी, आपण सरवे सार्थे पावन थइयें  
॥ चा० ॥ पंच महाव्रत तो जे नित्य पाळे, समिति सम  
दृष्टि समजाळे ॥ षट्कायजीव नित्य प्रतिपाळे, पंचेंद्रिय  
विषयने टाळे ॥ चालो ० ॥ १ ॥ नवविध ब्रह्म गुप्ति जे धारे,  
चार कषाय चोरने वारे ॥ वली त्रण दंमने मनशुं वारे,  
त्रण गुप्तिशुं आतम तारे ॥ चा० ॥ २ ॥ आवर निरय  
तिरि गति नावे, देव मनुष्य पदवि पावे ॥ एम शुद्ध  
संयम मन जावे, ते मुनिवर मुक्ति जावे ॥ चा० ॥ ३ ॥  
राग द्वेषने जेणे परहरिया, मुनि गुणसमतारसना द  
रिया ॥ एम गुण सत्तावीजें जरिया, ते मुनिवर शिवर  
मणी वरिया ॥ चा० ॥ ४ ॥ गणधर आगल गढूंली  
कीजें, कुंकुम अकृत थाल जरीजें ॥ सुणी वाणी ध  
लडां रीजे; नरजव पामी लाहो लीजें ॥ चा० ॥ ५ ॥  
द्वादश अंग गुणें जरिया, जिन मारग आराधे वि  
या ॥ जेणें ताच्या ठे आपणा परिया, संवेग सुध



संचरिया ॥ चा० ॥ ६ ॥ विजयराज सूरेश्वगढराया,  
 पट्टोदर चंडोदय गाया ॥ जिनवाणी सुधारस पा  
 या, जवि जीवें निर्मल गुण गाया ॥ चा०॥७॥१०६॥  
 ॥ अथ गहूंली एकशो ने सातमी ॥ थारा महेला उपर  
 ॥ मेह जरूखे वीजली ॥ हो लाल ॥ ऊ० ॥ ए देशी ॥  
 ॥ शोल करी शणगार, सोहागण जामिनी हो लाल ॥  
 सोहागण जामिनी ॥ उढी नवरंग घाट, चाले गज  
 गामिनी हो लाल ॥ च० ॥ शीजवती कर थाल, ग्रही  
 कुंकुम जरी हो लाल ॥ ग्रही० ॥ आवे समोसरण  
 मांहे, हैये उलट धरी हो लाल ॥ हैये० ॥ १ ॥ सिंहा  
 सन मणि पीठ, विराजत जगधणी हो लाल ॥  
 विरा० ॥ वीरजिनेश्वर वाणि, वखाणे अति घणी  
 हो लाल ॥ वखा०॥ पट घटि पर्यंत, प्रकाशे परवडो  
 हो लाल ॥ प्रका० ॥ नैगम अर्थ प्रवाह, त्रिभुवन  
 दीवडो हो लाल ॥ त्रिभु० ॥ २ ॥ कुमति मत अंधकार,  
 हरे ज्युं दिनमणि हो लाल ॥ हरे० ॥ पार्षद हर्षित  
 लहे जिम सुरमणि हो लाल ॥ लहे० ॥ सुणी  
 प्रभुनी वाणी, करे गुण गहूंअली हो लाल ॥ करे० ॥  
 गढो चोखा मान, सोपारी ऊजली हो लाल ॥ सो  
 ॥ ३ ॥ वधावे मुनिराय के, दिलमांहे हरखती

( १२३ )

हो लाल के ॥ दिल० ॥ गुरु मुख पूनमचंद के, नय  
 ए निरखती हो लाल के ॥ नय० ॥ पामी स्त्री अव  
 तार, गणे ए सारता हो लाल ॥ गणे० ॥ खारा स  
 मुड् मांहे, एमीठी वारता हो लाल ॥ ए मीठी० ॥ ४ ॥  
 गोरी गावे गीत, गुरु गुण रस चढी हो लाल ॥  
 गुरु० ॥ राग द्वेष दोय चोर, संघातें अति वढी हो  
 लाल ॥ संघातें० ॥ करे प्रशंसा देव के, धन धन ए  
 वशा हो लालके ॥ धन० ॥ मनुज पणानो लाहो, ली  
 ये ठे शुनदशा हो लाल के ॥ लीये ठे० ॥ ५ ॥ पधारे  
 देवठंदे, तीर्थकर मलपता हो लाल ॥ तीर्थ० ॥  
 आवी बेसे पदठाण, श्रीगौतम दीपता हो लाल ॥  
 श्री गौ० ॥ सूत्र तणी जलधार, वरसावे वेगशुं हो  
 लाल ॥ वरसावे० ॥ विबुध दर्शन वृद्ध, वधारे नेगशुं  
 हो लाल ॥ वधारे० ॥ ६ ॥ इति ॥ १०७ ॥

॥ अथ पर्यूषणस्तुति एकशो आठमी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यें पामी, श्रावक करे ए करणी  
 जी ॥ आठे दिन आचार पलावे, खंमण पीसण ध  
 रणी जी ॥ सूक्ष्म बादर जीव न विणासे, दया ते  
 नमां जाणे जी ॥ वीरजिनेसर नित पूजीने, सू  
 समकित आणे जी ॥ १ ॥ व्रत पाले ने धरे ते शु

( १२४ )

पाप वचन नवि बोले जी ॥ केसर चंदनं जिन सवि  
पूजे, नवजय बंधन खोले जी ॥ नाटक करीने वा  
जित्र वजाडे, नर नारीने टोलें जी ॥ गुण गावे जि  
नवरना इण विध, तेहने कोइ न तोले जी ॥ १ ॥  
अछम जत करी लइ पोसह, बेसी पौषध साले जी  
॥ राग द्वेष मद मत्सर ठांमी, कूड कपट मन टाले  
जी ॥ कट्सूत्रनी पूजा करीने, निशिदिन धर्म माले  
जी ॥ एहवी करणी करतां श्रावक, नरक निगोदिक  
टाले जी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणुं करियें शुद्ध जावें,  
दान संवत्सरी दीजें जी ॥ समकेतधारी जे जिन  
शासन, रात्रि दिवस समरीजें जी ॥ पारणवेला पडि  
लाजीने, मनोवांछित महोत्सव कीजें जी ॥ चित्त चोखे  
पजूसण करशे, मन मान्यां फल लेशे जी ॥ ४ ॥ १०८

॥ अथ गहूंली एकशो ने नवमी ॥

॥ वीरजीने वचने अमृत रस ऊरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ जक्ति करीजें रे जवि श्रुतधर तणी रे, जेहनी सा  
जरे जिणदेव ॥ संदेह पूढीजें नित मेव ॥ जक्ति०

॥ तुंगीया नामें रे नगरी अति जली रे, जिहां  
क बारे व्रतधार ॥ जेहनां मोकलां घर तणां  
॥ जक्ति० ॥ १ ॥ गुणना रागी रे जाण नवत

(१३५)

त्वना रे, जिनमतरंजित जेहनी मींज ॥ वायुं स  
मकित सुरतरु बीज ॥ नक्ति० ॥ ३ ॥ तेणहिज  
नयरें रे थिविर समोसखा रे, पाश संतानीया श्रुत  
जंमार ॥ सार्थें पांचशें ठे अणगार ॥ नक्ति० ॥ ४ ॥  
पुण्फवई चैत्यें रे अवग्रह अवग्रही रे, ते सुणी आ  
वक हर्षित थाय ॥ गुरुपद वांदवा संघ तिहां जा  
य ॥ नक्ति० ॥ ५ ॥ गहूंली करे रे शुन चित्तें आवि  
का रे, गुरु मुख निरखी हर्षित थाय ॥ वांदा वेसे  
यथोचित ठाय ॥ नक्ति० ॥ ६ ॥ धर्म सुणीने रे आ  
वक वीनवे रे, संयम फल तपफलथी होय ॥ पूठ्या  
प्रश्न तिहां एम दोय ॥ नक्ति० ॥ ७ ॥ संयम केंरुं  
रे फल अनाश्रव कहुं रे, तपफल निर्झरा ते होय ॥  
एम कहे उत्तर मुनि सहु कोय ॥ नक्ति० ॥ ८ ॥  
वली ते पूठे रे कहो तुमें पूज्यजी रे, तो किम देव  
गति ते जाय ॥ गुरु कहे सांजलो महानुजाव ॥ न  
क्ति० ॥ ९ ॥ सुरपणुं होवे रे सराग संयमें रे, शेष  
करमथी ते थाय ॥ इम सुणी सहु निज निज घर  
जाय ॥ नक्ति० ॥ १० ॥ जगवती अंगें रें नांखे वी  
जी रे, एहमां नहीं कोइ संदेह ॥ श्रीविजयउठ  
सूरिमुखथी एह ॥ कहे मुनिरामविजय गुणगेह ॥ १

( १२६ )

॥ गहूंली एकशो दशमी ॥

॥ साहेली महारी राजगृही उद्यान, प्रचुजी समो स  
खा रे लोल ॥ सा० ॥ गणधर मुनिवर सहस, चौद  
शुं परिवखा रे लोल ॥ सा० ॥ करता जवि उपकार,  
दया मन धारीने रे लोल ॥ सा० ॥ सकल जंतु प्र  
तिपाल, बिरुद संजारीने रे लोल ॥ १ ॥ सा० ॥ ली  
धो ठे अवतार, जगत प्रतिबोधवा रे लोल ॥ सा०  
चउगइ दुःख जंजाल, प्रतिमल रोधवा रे लोल ॥ सा०  
अणहूंते सुरकोडि, सेवामां नित्य रहे रे लोल ॥ सा० ॥  
कर जोडी मोडी मान, आणा शिर निर्वहे रे लोल ॥  
२ ॥ सा० ॥ चार निकायना त्रिदश, मली त्रिगडो करे  
रे लोल ॥ सा० ॥ चार गाउ परमाण, चतुर्मुख उच्च  
रे रे लोल ॥ सा० ॥ जिनमुखपूरव पाय पीठ, बिराजे  
गणधरू रे लोल ॥ सा० ॥ आठ पर्षदा सुरराज, चार  
तिहां नरवरू रे लोल ॥ ३ ॥ सा० ॥ कहे वनपाल नूना  
अने, नाथ जी पधारिया रे लोल ॥ सा० ॥ मगधाधि  
प नूपाल, जुजाल मनरंजीया रे लोल ॥ सा० ॥ दैइ  
धामणी सार के, जिनगुण गावतो रे लोल ॥ सा० ॥  
चन रजत ते आठ, दूरथी वधावतो रे लोल ॥  
सा० ॥ हय गय रह नड चतुरंग, सैन्य नरनारणुं

( १२७ )

रे लोल ॥ सा० ॥ शेर सेनापति अंते, उर परिवारशुं  
 रे लोल ॥ सा० ॥ धुरथी त्रण प्रदक्षिणा, वंदे सुख क  
 रू रे लोल ॥ सा० ॥ पामी यथोचित गाम, बेसे तिहां  
 नूथरु रे लोल ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुक्तिक स्वस्तिक राणा,  
 चेलेणा पूरती रे लोल ॥ सा० ॥ विच विच जिनमुख  
 देखती, दुःखडां चूरती रे लोल ॥ सा० ॥ धाराधर जि  
 म वीर, वाणी प्रकाशतां रे लोल ॥ सा० ॥ तप जप  
 संयम करी, सुख पामी शाश्वतां रे लोल ॥ ६ ॥ सा० ॥  
 सर्व विरति देश विरति, जिनमुख उच्चरे लोल ॥  
 ॥ सा० ॥ रथणी नोजन केइ, ब्रह्मचर्य मन धरे रे  
 लोल ॥ सा० ॥ जंजा सारादियादि, पुर नणी आवीया  
 रे लोल ॥ सा० ॥ विजयलक्ष्मी सूरिंद के, गुरुगुण  
 गाइया रे लोल ॥ ७ ॥ ११० ॥

॥ अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराज मुंबइमां  
 पधाख्या ते वखत बनावेली गढूंली एकशोने अग्यारमी॥  
 ॥ सजनी मोरी, पासजिणंदने पूजो रे ॥ स० ॥ दु  
 नियामां देव न दुजो रे ॥ स० ॥ सुहित गुरु अहिं  
 आव्या रे ॥ स० ॥ सद्गु संघतणे मन जाव्या रे ॥ १॥  
 ॥ स० ॥ मोहनलालजी माहाराज रे ॥ स० ॥ सुण  
 सद्गु अधिकार रे ॥ स० ॥ पंच महाव्रत सूधां पा

( १२७ )

॥ स० ॥ शास्त्र तणे अनुसारें रे ॥ १ ॥ स० ॥ स  
मता गुणना दरीया रे ॥ स० ॥ क्रिया पात्रना जरी  
या रे ॥ स० ॥ ज्ञान तणा जंमार रे ॥ स० ॥ क  
हेतां न आवे पार रे ॥ ३ ॥ स० ॥ मधुरी वाणी  
यें जांखे रे ॥ स० ॥ संघ स्वाद सर्वे चाखे रे ॥ स०  
प्रश्न व्याकरण वंचाय रे ॥ स० ॥ आश्रव संवर अ  
र्थ थाय रे ॥ ४ ॥ स० ॥ उपर चरित्र वंचाय रे ॥  
॥ स० ॥ पृथ्वीचंद कुमार रे ॥ स० ॥ सुणतां वैरा  
ग्यवंत थाय रे ॥ स० ॥ अज्ञान मिथ्याय हठावे रे  
॥ ५ ॥ स० ॥ षट चेला तमें जाणो रे ॥ स० ॥  
विनय गुणनी खाणो रे ॥ स० ॥ जोबन वयमां ठे  
सरखा रे ॥ स० ॥ वंदो पूजो ने हरखो रे ॥ ६ ॥  
॥ स० ॥ जंगम तीरथ कहीयें रे ॥ स० ॥ वंदीने पा  
वन थड्यें रे ॥ स० ॥ संघना पुण्यें अहीं आव्या रे  
॥ स० ॥ जैनधर्मने दीपाव्या रे ॥ ७ ॥ स० ॥ जाव  
सहित नक्ति करजो रे ॥ स० ॥ पुण्यनी पोठी तमें  
जरजो रे ॥ स० ॥ जरतबाहु पेरे तरशो रे ॥ स० ॥  
पमुड्पार उतरशो रे ॥ ८ ॥ स० ॥ व्रत पञ्चस्काण  
गां थाय रे ॥ स० ॥ सात क्षेत्रें धन खरचाय रे  
॥ १० ॥ देहरे देहरे उठव मंमाय रे ॥ स० ॥ चोथो

( १५ए )

आरो वरताय रे ॥ ए ॥ स० ॥ सधवा स्त्री गहूंजी क  
हाड़े रे ॥ स० ॥ मुक्ताफलशुं वधावे रे ॥ स० ॥  
नागर पानासुत गावे रे ॥ स० ॥ मगन लागे मु  
नि पाये रे ॥ स० ॥ पास जिनंदने पूजो रे ॥ स० ॥  
डुनियामां देव न दूजो रे ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री मोहनलालजी माहाराजनी

॥ गहूंजी एकशो बारमी ॥

॥ हो मुनिवरजी, तुज अति मीठी वाणी मुज मनमां  
वसी ॥ ए आंकणी ॥ तमें नविक जनोने बोधो ठो,  
मुक्ति तणो मारग शोधो ठो, वलि काम कषायने रो  
धो ठो ॥ हो मुनि० ॥ १ ॥ तमें नवसागरथी तरिया  
ठो, अगणित गुणोथी जरिया ठो, वली ज्ञानतरंग  
ना दरिया ठो ॥ हो मुनि० ॥ २ ॥ तुम दरिसनथी  
दूरित जावे, सवि जन वलि सुख संपति पावे, नर  
नारी मलीने गुण गावे ॥ हो मुनि० ॥ ३ ॥ तुम मु  
ख कमलाकर शोने ठे, नविजन नमराने थोने ठे,  
मन मुक्तिरमामां लोने ठे ॥ हो मुनि० ॥ ४ ॥ एव  
मोहनलालजी मुनिराया, तजी चित्तथकी जेणें  
या, हिरालाल कहे में गुण गाया ॥ हो मुनि० ॥



॥ अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराजनी

॥ गहूंली एकशोने तेरमी ॥

॥ मुनिवर संयममां रमता, शिवपुर जावानो खप करता,  
अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी ॥ मुनिवर  
विचरंता आव्या, पट चेला साथें लाव्या, मुंबईना  
संघने मन जाव्या ॥ मुनिवर० ॥ शि० ॥ अहो०  
॥ १ ॥ मुनिवर संयममां शूरा, मुनिवर किरियामां  
पूरा, परिणामें मुनि अति रूडा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥  
अ० ॥ २ ॥ मुनिजीनी देशना बहु सारी, जविजन  
नें लागे प्यारी, प्रतिबोध पास्यां नर नारी ॥ मुनि० ॥  
शि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिवरें लाज घणा लीधा,  
श्रीसंघनां कारज अति सीधां, उपकार एवा माहा  
मुनियें कीधा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ मुनि  
जीनुं नाम घणुं सारूं, मोहनलालजी लागे प्यारूं ॥  
जिनशासन घणुं अजवाव्युं ॥ मु० ॥ शि० ॥ अ०  
॥ ५ ॥ जे मुनिवरना गुण गावे, शिवपुरं नगरी वेगें  
रावे, मगन कहे मुनिवरने ध्यावे ॥ मु० ॥ शि० ॥  
अहो० ॥ ६ ॥ इति ॥ ११३ ॥

( १३१ )

॥ अथ मुनिराज श्री स्वांतिविजयजी माहाराज

॥ नी गहूंली एकशोने चौदमी ॥

॥ नेक नजर करो नाथजी ॥ ए देशी ॥

॥ स्वांतिविजय मुनि वंदियें, जेथी जवतरुकंद निकंदी  
यें जीहो, स्वांतिविजय मुनि वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥

जेनी अमृत धारा सारिखी, गुणखाणी वाणी वखा  
णीयें जी हो ॥ स्वांति० ॥ १ ॥ नित्य ठठ अठम तप  
स्था करें, जेनुं सवाय ध्यानमां ध्यान ठे जीहो ॥

स्वांति० ॥ २ ॥ जेनां ज्ञान तणो महिमा घणो, मा  
नुं केवली हुं कलिकालमां जी हो ॥ स्वांति० ॥ ३ ॥

जेणें ममता तजी संसारनी, एक मुक्तितणी ममता  
करी जी हो ॥ स्वांति० ॥ ४ ॥ हिरालाल कहे मुनि ते  
नमो, जेथी पाप जशे सवि दूरथी जी हो ॥ स्वांति० ॥ ५ ॥

॥ अथ माहामुनिराज श्री आत्मारामजी माहाराजनी

॥ गहूंली एकशो ने पंदरमी ॥

॥ सांजलजो रे मुनि संयमरागी, उपशम श्रेणें चडि  
या रे ॥ ए देशी ॥ जलुं थयुं रे मारे सुगुरु पधाखा,  
जिन आगमना दरिया रे ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान

तरंगें लेहेरो लेता, ज्ञान पवनथी जरिया रे ॥ जलुं

॥ १ ॥ आज कालमां जे जिन आगम, दृष्टि

मां आवे रे ॥ गहन गहन एहना जे अर्थो, प्रगट क  
 रीनैं बतावे रे ॥ ज० ॥ १ ॥ शक्ति नहिं पण नक्ति  
 तणे वश, गुण गावा उद्धसावुं रे ॥ कर्णामृत गुरु  
 चरित्र सुणावी, आनंद अधिक वधावुं रे ॥ ज०  
 ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि जंबुद्वीपमांहि, एही नरत म  
 जार रे ॥ उत्तर दिशि पंजाब देश जिहां, लेहेरां गाम  
 मनोहार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ कृत्रियवंश गणेशचंद घर,  
 जन्म लिया सुख धामें रे ॥ रूपदेवी कुक्षिशुक्तिमां,  
 मुक्ता फल उपमानें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ लघुवयमां प  
 ण लक्षणथी बहु, दीपंता गुरुराया रे ॥ संगतिथी म  
 ली टूँढक जनने, टूँढकपंथ धराया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥  
 संवत अयोगीशें दशमांही, उज्ज्वल कार्तिक मा  
 सें रे ॥ पंचमीने दिवसें लिइ दीक्षा, जीवनराम गु  
 रु पासें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ ज्ञान नण्या वली देश फि  
 ख्या बहु, जूनां शास्त्र विलोकी रे ॥ संशय पडिया गुरु  
 नें पूछे, प्रतिमा केम उवेखी रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ उत्तर  
 न मित्या जब गुरुजीनैं, ज्ञानकला घट जागी रे ॥ सुम  
 ने सखी घट आय वसी जब, टूँढपंथ दिया त्या  
 रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ धर्म शिरोमणि देश मनोहर,  
 र नूमि रसाली रे ॥ ज्यां आवी सुविहित गुरुपा

( १३३ )

सैं, मन शंका सहु टाली रे ॥ ज० ॥ १० ॥ परम  
कद्यो उपकार तुमें बहु, श्रीगुरु आतमराया रे ॥ जयवं  
ता वरतो आ जरतैं, दिन दिन तेज सवायारे ॥ ज०  
॥ ११ ॥ दुःसम काल समे गुरुजी तुमें, वचन दीव  
डा दीधा रे ॥ शांतिविजय कहे जेथी हमारा, विषम  
काम पण सीधां रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री अचलगढपति पूज्य जटारक श्रीरत्न  
सागर सूरेश्वरनी गहूंली एकशो ने शोलमी ॥

॥ सहि मोरी घृतकल्लोल प्रभु प्रणमीने, पामी सुगुरु  
पसाय हो ॥ सूधी श्राविका ॥ स० ॥ अचलगढप  
ति गायछुं, विवेकसागर सूरिराय हो ॥ सू० ॥ १ ॥  
॥ स० ॥ पंचमहाव्रत पालता, दशविध यतिधर्मसार हो  
॥ सू० ॥ स० ॥ संयम सत्तर प्रकारना, नवविध ब्र  
ह्मचर्य धार हो ॥ सू० ॥ २ ॥ स० ॥ ज्ञात दर्शन  
गुणें पूरिया, क्रोधादिक परिहार हो ॥ सू० ॥ स० ॥  
पांच समितियें समिता रहे, चार अनिग्रहना धार हो  
॥ सू० ॥ ३ ॥ स० ॥ पिंमविशुद्धिने शोधता, इंद्रि  
निरोध करनार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ त्रण गुप्तियें  
सा रहे, जावना जावता बार हो ॥ सू० ॥ ४ ॥

पंचाचारने पालता, टालता कर्मनो चार हो ॥ सू०  
 ॥स०॥ ठठ अठमादिक तप करे, वारे विषय विकार  
 हो ॥ सू० ॥ ५ ॥ स०॥ गंगाजलसम निर्जला, गुण  
 ठत्रीशना धार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ रत्नसागर सू  
 रि पटधरु, लब्धितणा जंझार हो ॥ सू० ॥ ६ ॥स०  
 विचरंता गुरु आविया, सुथरी शहेर मजार हो ॥  
 ॥ सू० ॥ स० ॥ सुरगुरुसम वाणी सुणी, हरख्यां  
 सवि नर नार हो ॥ सू० ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीश  
 रें पिस्तालीशें, माहाशुदि त्रिज रविवार हो ॥ सू० ॥  
 ॥ स० ॥ जाग्यवंत दीक्षा लिये, संघ चउविध मनो  
 हार हो ॥ सू० ॥ ८ ॥ स० ॥ दीक्षामहोत्सव हर्ष  
 करी, पामी हर्ष उद्भास हो ॥ सू० ॥ स० ॥ वास  
 द्वेप सूरियें कखो, देवा मुक्तिनो वास हो ॥ सू० ॥  
 ॥ ९ ॥ स० ॥ उच्चव रंग वधामणां, हूवे जय जय  
 कार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ चिहुं गति पूरण साथि  
 यो, करे सोहागण नारि हो ॥सू० ॥ १० ॥ स० ॥  
 रुगुण गहूंजी गावतां, पातक दूर पलाय हो ॥सू०  
 स० ॥ पाटण रहेवासी शामजी, सूरितणा गुण  
 हो ॥ सू० ॥ ११ ॥ इति ॥ ११६ ॥

( १३५ )

॥ अथ अचलगह्वपति पूज्य जट्टारक श्री विवेक

॥ सागर सुरिनी गह्वंली एकशो ने सत्तरमी ॥

॥ रंगरसिया रंगरस बन्यो ॥ मनमोहनजी ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सरसति पद प्रणमियें ॥ गुरु सुखकारी ॥ गा

यशुं गह्वपति राय ॥ मनहुं मोह्युं रे गुरु सुखकार ॥

॥ ए आंकणी ॥ शासनदेवी पसायथी ॥ गु० ॥ सेव

तां सवि सुख आय ॥ म० ॥ गु० ॥ १ ॥ अचलगह्व

पति जाणियें ॥ गु० ॥ श्रीरत्नसागर सूरिराय ॥ म० ॥

॥ गु० ॥ तास पटोथर दीपता ॥ गु० ॥ श्रीविवे

कसागर सूरि राय ॥ म० ॥ गु० ॥ २ ॥ कह्वदेश

सोहामणो ॥ गु० ॥ लघु आसंबियो मन जाण ॥

॥ म० ॥ गु० ॥ गोत्रदेवया दीपता ॥ गु० ॥ कुलवृ

द्ध उंसवंश वखाण ॥ म० ॥ गु० ॥ ३ ॥ टोकरसी सु

त शोचता ॥ गु० ॥ जननी कुंता बाइ मात ॥ म० ॥

॥ गु० ॥ वंशविनूषण जाणीयें ॥ गु० ॥ नामविवेक

सिंधु विख्यात ॥ म० ॥ गु० ॥ ४ ॥ मांमवी बंदर

मनोहर ॥ गु० ॥ श्री संघने अतिघणो प्यार ॥ म० ॥

॥ गु० ॥ संघ चतुर्विध मली करी ॥ गु० ॥ करे प

ट महोत्सव सार ॥ म० ॥ गु० ॥ ५ ॥ संवत इ

णीश अठावीशें ॥ गु० ॥ कार्तिक वदि पंचम '

( १३६ )

॥ म० ॥ गु० ॥ आचारज पद पामिया ॥ गु० ॥  
तिहां शोचे शुन शनि वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ६ ॥  
गीतारथ गुरु आगलें ॥ गु० ॥ शिष्य शोचे सवि  
सार ॥ म० ॥ गु० ॥ जाचकजन संतोपिया ॥ गु० ॥  
जस वध्यो मन प्यार ॥ म० ॥ गु० ॥ ७ ॥ मुक्ता  
फल मूठी जरी ॥ गु० ॥ रचे गहूंली परम उदार ॥  
॥ म० ॥ गु० ॥ ॥ गुणवंत गावे प्रेमशुं ॥ गु० ॥  
गुरु वंदे वारं वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ८ ॥ अचलगह्व  
पति दीपता ॥ गु० ॥ श्री विवेकसागर सूरिराय ॥  
॥ म० ॥ गु० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥ गु० ॥  
श्रीसंधने कल्याण थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ ए ॥ ११७ ॥

॥ अथ अचलगह्वपति पूज्यजट्टारक श्रीविवेकसागर  
सूरीश्वरनी गहूंली एकशो ने अटारमी ॥

॥ आ आप उठी उतावली ॥ सहि मोरी रे ॥ में सांजली  
मीठी वाण ॥ लागे मुने प्यारीरे ॥ आ आचारज गुरु  
आविया ॥ स० ॥ आ जह्नुपुर बंदर मजार, वात स  
नूरी रे ॥ १ ॥ आ चरण करण व्रत धारता ॥ स० ॥  
॥ आवक दीये बहुमान, पुण्य पनोतां रे ॥ आ समि  
गुति सूधी धरे ॥ स० ॥ आ पाले प्रवचन माय, पा  
गुरी रे ॥ २ ॥ आ दश अर्द्धने दिये देशवटो

( १३७ )

॥ स० ॥ आ पांचशुं राखे प्रेम, वहे जेम धोरी रे  
॥ आ अष्टमदने गालवा ॥ स० ॥ आ नवशुं राखे  
नेह, गुरु ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥ आ चार सदा चित्तमां  
वसे ॥ स० ॥ आ बारशुं जीडे बाथ, आतम अर्जुवा  
ली रे ॥ एवा गुरुने वांदशुं ॥ स० ॥ आ शोल सजी  
शणगार, सहियर टोली रे ॥ ४ ॥ आ रजत रकेबी कर  
धरी ॥ स० ॥ आ मांहे लावो ठीपना पुत्र, कनक  
कचोरी रे ॥ आ चोकें चाचर चहूवटे ॥ स० ॥ आ  
थोका थोकें चालो, गाउं गुण गोरी रे ॥ ५ ॥ आ व  
खाणने अवसरें साथीयो ॥ स० ॥ आ पूरे गुण  
वंती नार ॥ पुण्य सनूरी रे ॥ आ केसर वहू काढे ग  
हूंअली ॥ स० ॥ आ धनबाइ पूरे चोक, चेत चतुरी  
रे ॥ ६ ॥ आ अमृत सरिखी दिये देशना ॥ स० ॥  
आ सांजले श्रुत गुणबाण, वाणी मधुरी रे ॥ आ  
अचल गढपति शोलता ॥ स० ॥ आ विवेकसागर  
सुरींइ, पदवी रूडी रे ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ गहूंली एकशो उगणीशमी ॥

॥ प्रणमुं पदपंकज पास रे, जस नामें लीलविलास रे  
गाउं गुरुजी मनने उल्लास ॥ सूरेश्वर विनति ॥  
धारो रे ॥ जुजनगरी चोमासुं पधारो ॥ स



(१३८)

॥ १ ॥ शैव लामणशा कुलें आया रे, माता जु  
 माबाइना जाया रे, तेथी गुरुजीशुं अधिकेरी माया  
 ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ २ ॥ करतां एणे देश विहा  
 र रे, होशे पुण्यजी लाज उदार रे, मिथ्यात्वी होशे  
 व्रतधार ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ३ ॥ जुजनगरमांहे  
 अधिकारी रे, शैव शिवजीशा समकेतधारी रे, ते तो  
 वाट जुवे ठे तमारी ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ४ ॥  
 शैव लामण ने काटीया उंसवाल रे, वोरा चुखड ने वमो  
 डा उदार रे, जुजनगर देवाणी मेवाल ॥ सू० ॥ ॥ जु०  
 ॥ सू० ॥ ५ ॥ रुचिवंती सुश्राविका आवे रे, श्रद्धा स  
 मकित स्वस्ति बनावे रे, गुरु सन्मुख मोतीयें वधावे  
 ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ६ ॥ हर्ष रुद्धिने सुख सवा  
 ई रे, अचल गह्वमां नित्य नित्य थाइ रे, सान्निध्यका  
 री ठे माहाकाली ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ७ ॥  
 गुरु चारे चोमासां आया रे, लब्धियें गौतम रुद्धि  
 पाया रे, मुक्तिसागर सूरि सवाया ॥ सूरेश्वर विन  
 ति अवधारो रे ॥ जु० ॥ सू० ॥ ८ ॥ ११९ ॥

॥ गहूंली एकशो ने वीशमी ॥

जंगमतीर्थ विचरंता, करता देश विहार ॥ जवि  
 ीव प्रतिबुज्वा, करता जग उपकार ॥ १ ॥

( १३९ )

ते मुनिवर तारे तरे ॥ ए आंकणी ॥ समिति गुप्ति सूधी  
धरे; पाले प्रवचन माय ॥ अजय दान मुनिवर दि  
ये, पाले जीव ठक्काय ॥ ते० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत  
धारता, पंचाश्रव पञ्चस्काण ॥ अष्ट मदने मुनि गा  
लता, पाले पंचाचार ॥ ते० ॥ ३ ॥ द्वादश  
पडिमाने शोधता, करता आतमशोध ॥ तप जप करे  
मुनि आकरां, काढे कर्मनुं सूड ॥ ते० ॥ ४ ॥ सम  
वाणी करे गोचरी, पाले दोष विशेष ॥ उंच नीचकु  
ल जोवतां, नहिं लोचनो लेश ॥ ॥ ते० ॥ ५ ॥ केशी  
गणधर पधारिया, सावड्डिनयरी उद्यान ॥ राय पर  
देशी माहा पापीयो, धरे साधुनो द्वेष ॥ ते० ॥ ६ ॥  
प्रश्न पूढे मुनिवर प्रत्यें, जीव अजीव विचार ॥ स्वर्ग  
नरक जाणुं नही, न गणुं पुण्य ने पाप ॥ ते० ॥ ७ ॥  
नय उपनय प्रश्न पूरिया, प्रतिबूझ्यो नृपाल ॥ एक  
अवतारी ते थयो, पाम्यो मुक्ति माहाराज ॥ ते० ॥ ८ ॥

॥ गहूंली एकशो ने एकवीशमी ॥

॥ आज सखि गुरु वंदन करीयें, वंदन करीयें तो नव  
जल तरियें हो साम, आज सखि गुरु वंदन करीयें ॥ १  
आंकणी ॥ गह्वपति गणधरना गुण गावें, हरख ध  
मनमांहे हो साम ॥ आज० ॥ १ ॥ सूरि शि

णि गुणरागी, कनक रमणीना त्यागी हो सा० ॥ आ० ॥  
 पंच समिति त्रण गुप्ति विराजे, प्रवचनमायने पाळे  
 हो सा० ॥ आ० ॥ १ ॥ चरण करण सित्तैरी संजारे,  
 ज्ञान कल्लोल उगळे हो सा० ॥ आ० ॥ ठत्रीश ठत्रीशी  
 गुण राजे, पट दर्शनमां गुरु गाजे हो सा० ॥ आ० ॥  
 ॥ ३ ॥ वरसे ठठु गुणें गुणवंता, सोहम जंबु महं  
 ता हो सा० ॥ आ० ॥ देश कालमहिलें विचरंता, समकित  
 बीजना दाता हो सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ राजगृही  
 नगरीयें पधाच्या, श्रेणिक सामश्युं लाव्या हो ॥ सा०  
 ॥ आ० ॥ मंत्री अजय कुमार प्रधान, यथोचित गु  
 णना जाण हो सा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ चेलणा प्रमुख  
 सद्गु परिवार, गुरुने वांदे बहु मान हो सा० ॥ आ०  
 आतम बाजोठ पीठ बनावी, गहूंली करे रढियाली  
 हो सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली स्वस्तिक पूरे,  
 श्रेणिकनी पटराणी हो सा० ॥ आ० ॥ ललि ललि  
 गुरु मुख लूढणां करती, शिवनिश्रेणीयें चडती हो  
 सा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ गुरुमुख कमल नयणें रे जो  
 १, वचन सुधारस पीती हो सा० ॥ आ० ॥ देशना  
 नली हरख नराणी, देव नणे मधुरी वाणी हो ॥  
 ॥ ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १११ ॥

( १४१ )

॥ अथ श्री कोठारानी गहूंली एकशो ने बावीशमी ॥  
॥ जीरे मारे प्रणमुं जिनवर पाय, मूकी मननो आं  
मलो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे शोलमा श्रीजिनराय,  
शांतिनाथ जी करुणा करो ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जी० ॥  
पामी तास पसाय, गह्वपति गुरु स्तवना करुं ॥ जी०  
॥ जी० ॥ जंगम तीरथनाथ, तीर्थ वंदावो कृपा करी  
॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ वृद्ध उंसवंश उत्पन्न, गुरुकुल  
वासे दिनमणि ॥ जी० ॥ जी० ॥ रत्न त्रयना निधान,  
माता कुंता बाइयें जनमिया ॥ जी० ॥ ३ ॥ जी० ॥ ग्रह  
गणमां ज्योतिचक्र, अविचल राज्यें ध्रुव रहे ॥ जी० ॥  
जी० ॥ मुनि परिवारमां तेम, गुण ठत्रीशे शोचता ॥  
जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ वारे परनो ठाठ, निज आत्म  
गुण अनुसरे ॥ जी० ॥ जी० ॥ कोठारा नगर मजार,  
आवक लोक सुखिया वसे ॥ जी० ॥ ५ ॥ जी० ॥ गुरुच  
रणेलयलीन, रागी सोजागी करे वीनति ॥ जी० ॥ जी० ॥  
नर नारीनां वृंद, बहु आमंवरें लाविया ॥ जी० ॥ ६ ॥  
जी० ॥ नव शत सजी शणगार, आविका लावे गहूं  
अली ॥ जी० ॥ जी० ॥ आत्म बाजोठ पीठ, र  
द्धिनी पूरे साथियो ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ समधि  
श्री फल हाथ, लली लली लीये लूठणां ॥ जी०

( १४१ )

॥ जी० ॥ घूंघट खोल्या घाट, विच विच गुरुमुख  
जोवती ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ देशना अमृतधार,  
सांजली श्रोता रस लीये ॥ जी० ॥ जी० ॥ नय गम  
जंगनी जाल, स्यादवाद रचना करे ॥ जी० ॥ ए ॥  
जी० ॥ विधि पद्मगङ्गा शिरताज, रत्नसागर सूरीश्वर  
॥ जी० ॥ जी० ॥ तस पाटें पूरींद, विवेक सागर  
तेजें तपे ॥ जी० ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ गढूंली एकशो ने त्रेवीशमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥  
॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामें सो  
हम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद कषा  
य, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजपरि  
णति नजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान, करे गुणदेशना ॥  
उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सुणवा जि  
नवर वाणि, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थोक  
के, हर्ष मने बहु ॥ २ ॥ वसन आनूपण व्रत, त  
णा अंगें धरे ॥ कोणिकनूपति नार, हवे गढूंली करे ॥  
रमिति गुप्ति सहियरने, साथें आवती ॥ आत्म अ  
व्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धा कुंकुम घोली,  
रक करे जावथी ॥ आतम पीठने उपर, जिनगुण

गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, एम गहूंली करे ॥  
 अनुजवनां करि लूठणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥  
 इव्यजावथी इणि परें, जे गहूंली करे ॥ समकितवंत  
 ते श्राविका, नवसायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना,  
 गुणसखि मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के,  
 शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ १२३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो चोवीशमी ॥

॥ चालो सखि जइयें जातरा रे लोल, जिहां ठे मरु  
 देवीनो नंद, शुजनावथी रे ॥ चालो जइयें जिन वांदवा  
 रे लोल ॥ १ ॥ चालतां चरण पावन थायां रे लोल, आत्म  
 हर्ष जराय ॥ शुज० ॥ चा० ॥ वारवशीमां पेसतां रे  
 लोल, नयणां पावन थाय ॥ शु० ॥ चा० ॥ २ ॥ दश  
 शत चैत्य सोहामणां रे लोल, वच्चें अष्टापद उत्तंग  
 ॥ शु० ॥ चा० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरां रे लोल, चोमुख  
 प्रतिमा चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ३ ॥ पूर्व द्वारें पेसतां रे लोल,  
 निस्सही कही त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ पांच अजिगमन  
 साचवी रे लोल, प्रदक्षिणा त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥  
 ४ ॥ मूलनायक कृष्णनाथजी रे लोल, अजितनाथ  
 शिवसाथ ॥ शु० ॥ चा० ॥ चारे डुवारें विंवथापनारे लो  
 अष्टादश दोय चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ५ ॥ जिनप्रति

( १४४ )

जिनसारखी रे लोल, रूपनजी पूर्व प्रसिद्ध ॥ शु० ॥ चा० ॥  
अष्टापद गिरि सिद्ध यथा रे लोल, नलिन पुरें कस्यो वि  
श्राम ॥ शु० ॥ चा० ॥ ६ ॥ शैव नरसी सुत हीरजी रे लोल,  
कुंठ्यर अंग सुजात ॥ शु० ॥ चा० ॥ तस चार्या शुक्लपक्षिणी  
रे लोल, उत्तम कुलें उत्पन्न ॥ शु० ॥ चा० ॥ ७ ॥  
दान शीयल तपस्या गुणें रे लोल, पूरवाई जग विख्यात  
॥ शु० ॥ चा० ॥ सुगुरु संजोग उपदेशथी रे लोल, चैत्य क  
स्यां चोसार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ८ ॥ समकितदृढ गुण  
आत्मा रे लोल, ज्ञान नक्ति निमित्त ॥ शु० ॥ सफल  
नयो दिन आजनो रे लोल, देवयात्रा फल सिद्ध  
॥ शु० ॥ चा० ॥ ९ ॥ कल्पवृक्ष फल्यो पुण्य अंकूरथी  
रे लोल, मुक्ति वस्था सुख नरपूर ॥ शु० ॥ चा० ॥ १० ॥

इति श्रीगह्वंजी संग्रहाख्य पुस्तकस्य  
प्रथमभागः समाप्तः ॥

